किशोर-उपन्यास-माला क्रम : २७

राजा लियर

रूपान्तरकर्ता :

शत्रुघ्नलाल शुक्ल

शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'King Lear' पर आधारित किशोरोपयोगी उपन्यास

उमेश प्रकाशन
५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

King Lear (Shakespeare)
Adaptation : Shatrughan Lal Shukla
Novel for Juveniles : Rs. 2.00
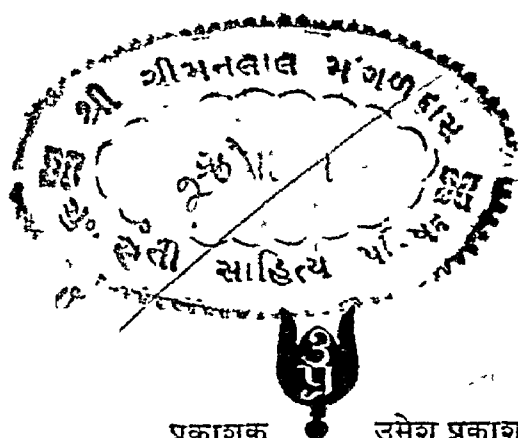
प्रकाशक ● उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६
मुद्रक ● मूवीज प्रेस
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
संस्करण ● प्रथम
(१९६४)
मूल्य ● दो रुपये

किशोर-उपन्यास-माला के पुष्प

[सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य]

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान	हैमलेट
मैकवेथ	राजा लियर
जूलियस सीजर	राई से पहाड़

वीर रस से पूर्ण

अर्जुन	श्रीकृष्ण
हल्दी घाटी	दुर्गादास
खूब लड़ी मर्दानी	वीर कुणाल
चित्तौड़गढ़ की रानी	सम्राट् शिलादित्य
गढ़मण्डल की रानी	बाजीराव पेशवा
जय भवानी	कुँवरसिंह
कर्ण	भीष्म.

अन्य महापुरुषों पर आधारित

रवि बाबू	मीरां बावरी
गुरु नानक देव	सम्राट् अशोक
देवता हार गए	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
ऋषि का शाप	गुरु अंगद देव
गौतम बुद्ध	संत कबीर

शिकार एवं ज्ञान-विज्ञान पर आधारित

पूपू

रूपा और लल्ली

बाघ का शिकार

मगरमच्छ का शिकार

शेक्सपियर-साहित्य-सीरीज़ का उद्देश्य

अब तक हम किशोर-उपन्यास-माला के अन्तर्गत इतिहास, ज्ञान-विज्ञान और शिकार विषयक उपन्यास ही देते रहे है। बालकों एवं किशोरों द्वारा जिस चाव से इस माला का स्वागत हुआ है, उससे प्रेरित होकर और भी विषयों के आधार पर उपन्यास देने की हमारी वृहत योजना है।

शेक्सपियर का अंग्रेजी साहित्य में सबसे ऊँचा स्थान रहा है। यहाँ हम उनके कुछ प्रसिद्ध नाटकों को किशोरोपयोगी उपन्यासों के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

'राजा लियर' इस दिशा में छठी कड़ी है। प्रस्तुत उपन्यास शेक्सपियर के संसार-प्रसिद्ध नाटक 'King Lear' का रूपान्तर होते हुए भी अनुवाद अथवा अनुकरण नही है। किशोरों के मनोविज्ञान को भाँपते हुए इसकी भाषा-शैली और घटनाओं को वैसा ही रोचक-रोमांचक बनाया गया है। आशा है, पाठक हमारे प्रयास का सराहना करेंगे।

१

उस दिन सवेरे सर्दी अधिक थी। घना कुहासा छाया हुआ था। धुएँ की भाँति उसने सब कुछ अपने में छिपा लिया था। थोड़ी दूर की वस्तु भी नहीं दिखाई पड़ती थी। सारा लन्दन शहर उस वर्फ के धुएँ में अदृश्य हो गया था। सड़कें सूनी हो गई थीं और बाज़ारों में चहल-पहल के नाम पर सन्नाटा छाया हुआ था। ठंड के मारे कोई कहीं आ-जा नहीं रहा था। छुट्टी का दिन होने के कारण कारखानों और दफ्तरों के कर्मचारी भी बाहर नहीं निकले थे। वे सब अपने-अपने घरों में अँगीठी के पास बैठे हुए उसी भयंकर सर्दी और कुहरे की चर्चा कर रहे थे।

लन्दन प्राचीन काल से ही इंग्लैंड की राजधानी रहता आया है। नीले जल वाली टेम्स नदी के किनारे बसा हुआ यह नगर संसार का सबसे बड़ा नगर माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जो कुछ लन्दन में न होगा, वह संसार में कहीं न मिलेगा। और, यह बात कई अंशों में ठीक भी है। जैसे भारत में दिल्ली का इतिहास बहुत ही रोमांचकारी और अद्‌भुत है. ठीक उसी तरह लन्दन नगर की स्थिति भी आश्चर्यजनक और अनोखी है।

हम जिस घटना का उल्लेख कर रहे हैं, वह पाँच सौ वर्षों से भी पुरानी है। उस समय ब्रिटेन का सम्राट् 'लियर' नामक एक बुद्धिमान राजपुरुष था। वह अपने समय का एक बड़ा ही

धर्मात्मा, दयालु, उदार, न्यायप्रिय और दूरदर्शी राजा माना जाता था। अपने राज्य का वह ऐसा सुप्रबन्ध करता था कि प्रजा को किसी भी तरह का कष्ट नहीं होने देता था। ब्रिटेन ही नहीं, यूरोप के दूसरे देशों में भी सम्राट् लियर की प्रशंसा होती थी। पर उसमें एक दोष भी था—वह सहज विश्वासी था। हर किसी से वह मित्रता कर लेता था। यदि उसका कोई मंत्री कभी समझाता कि महाराज, विना भली-भाँति परीक्षा किए, किसी से घनिष्टता न करनी चाहिए, तो वह उत्तर देता था—"मेरे साथ ईश्वर है, वह सब अच्छा ही करेगा।" लेकिन वास्तविकता यह थी कि कई बार लियर को धूर्तों और मक्कारों ने बुरी तरह चकमा दिया था। ज्योतिषी अथवा महात्मा बनकर लोग उससे हज़ारों पौंड खींच चुके थे, फिर भी उसकी उदारता में कमी नहीं आई। उसका दरबार सदैव गुणज्ञों—विद्वानों और शूरवीरों से भरा रहता था।

जैसे आकाश में सूरज दोपहर के बाद ढलने लगता है, ठीक उसी प्रकार राजा लियर ने वृद्धावस्था की ओर पैर बढ़ाए। ज्यों-ज्यों आयु अधिक होती जाती, उसका शरीर भी शिथिल होता जा रहा था। राजदरबार की ओर से उसका जी उचटने लगा। महफ़िलें धीरे-धीरे बन्द हो चलीं और लियर के स्वभाव में एक प्रकार की गम्भीरता आ गई। अब वह केवल अपने गिने-चुने मंत्रियों से ही बातें करता था, बस। फिर भी राज्य में उसका प्रभाव वैसा ही था और प्रजा पहले की भाँति ही उसका आदर करती थी।

धीरे-धीरे लियर अस्सी वर्ष का हो चला। यद्यपि उसकी आँखों में अब भी वैसा ही तेज था, मुख पर अब भी वही शालीनता की छाप थी, स्वर भी वैसा ही दृढ़ था; किन्तु उसका मन, उसकी विचार-शक्ति शिथिल हो चुकी थी। उसमें बच्चों का-सा हठ उत्पन्न हो गया था। वह अपनी ही बात को सही

मानता था। साथ ही उसका सहजविश्वासी स्वभाव भी बढ़ गया था। अब यदि कोई भिखारी भी उसे मिल जाता, तो लियर उससे ऐसी आत्मीयता के साथ बातें करता, मानों वह उसका चिरपरिचित मित्र हो।

उस भयंकर सर्दी के दिन वह अपने 'गोल्डन-पैलेस' नामक राजमहल के तिमंज़िले पर कमरे में बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था। पास ही अँगीठी धधक रही थी। खिड़कियों के रंगीन शीशों पर बाहर की ओर से कुहरे की छोटी-छोटी बूंदें जमकर रंगीन नगों की भाँति चमक रही थीं। एकाएक लियर के मन में विचार उठा—क्या बाहर हवा भी चल रही है?

उसने पता लगाने के लिए खिड़की का पल्ला खोला। पल्ला खुलते ही हवा का एक तेज़ झोंका उसके चेहरे पर लगा। सन जैसी सफेद उसकी दाढ़ी, कुहरे से तर हो गई और गले में, कानों में लगी हुई ठंडक ने उसे सिर से पैर तक कँपा दिया। एक झटके के साथ उसने खिड़की बन्द की और कोट का कॉलर ठीक करता हुआ अँगीठी के पास आ बैठा। उसके स्वभाव में एक बात और थी—वह कभी शान्तचित्त होकर नहीं बैठता था; सदैव किसी न किसी विषय पर सोचा करता था। अँगीठी की आँच से जब उसकी सर्दी दूर हुई, उसने सिगार निकाला और पीते हुए सोचने लगा—भला वे लोग, जो घर-द्वार छोड़कर साधु हो जाते हैं, इस प्रकार की सर्दी में कैसे बाहर रहते होंगे!

कुछ देर बाद उसने पुकारा—"जॉन!"

जॉन उसका सेवक था। वह कमरे के बाहर बरामदे में कम्बल ओढ़े सिकुड़ा हुआ बैठा था। लियर की आवाज़ सुनकर झटपट उठा, लबादा कोने में रख दिया और अपनी वर्दी ठीक करता हुआ भीतर की ओर चला। परदा हटाकर उसने दरवाज़ा खोला और लियर के सामने जाकर खड़ा हो गया। बोला—

"क्या आज्ञा है, महाराज ?"

लियर ने ग़ौर से देखा—जॉन थरथरा रहा है। उसने पूछा—"अरे जॉन, तू तो काँप रहा है !"

अपने को सँभालते हुए जॉन ने कुछ संकोच के साथ कहा—"आज़ सर्दी कुछ अधिक है, महाराज !"

"शायद तेरे कपड़े गर्मी नहीं दे पाते। अच्छा ले, इसे पहन ले। भला इस तरह काँपते हुए भी रहा जा सकता है ?" कहकर लियर ने खूँटी पर टँगा हुआ बड़े-बड़े बालों वाला अपना मूल्य-वान चमड़े का कोट उतारकर जॉन के ऊपर फेंक दिया।

आश्चर्य और प्रसन्नता से जॉन ठगा-सा खड़ा रह गया। उसे सहसा विश्वास ही न हो सका कि सम्राट् ने जो कुछ कहा है, सच है।

लियर ने उसे चुपचाप खड़ा देखकर कहा—"पहनता क्यों नहीं ?"

जॉन को विश्वास हो गया कि सम्राट् ने सचमुच ही उसे कोट दे दिया है। उसने उसे उठाकर माथे से लगाया और पहन लिया; फिर सिर झुकाकर लियर के सामने खड़ा हो गया। बोला—"ईश्वर आपको दीर्घजीवी करे, सम्राट् !"

"नहीं रे ! यह तो मुझे पसन्द ही नहीं है।" लियर ने मुस्करा-कर जॉन से कहा—"अस्सी बरस का हो चुका हूँ। अब आगे जाना बेकार है; क्योंकि उस रास्ते पर तकलीफ़ें बढ़ती रहती हैं, और मैं भी दिनोंदिन बूढ़ा होता जाऊँगा। दीर्घजीवी होना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

जॉन चुपचाप सिर झुकाए खड़ा रहा।

लियर ने फिर कहा—"जॉन ! कौर्डेलिया का विवाह किसके साथ करूँ ?"

"महाराज ! भला मैं एक तुच्छ सेवक इस विषय में आपको क्या सम्मति दे सकता हूँ ? मन्त्रियों से पूछने पर वे

आपको जैसा उचित होगा, समझाएँगे।"

"वह तो मैं भी जानता हूँ, लेकिन क्या तू नहीं चाहता कि कौर्डेलिया को भी किसी अच्छे घराने में भेजूँ!"

"चाहता क्यों नहीं, महाराज! लेकिन फिर भी राजघरानों के विषय में मैं बहुत कम जानता हूँ। राजकुमारी को किसी ऊँचे कुल में ही भेजना उचित होगा; जैसी उनकी दोनों बड़ी बहनें हैं।"

"बात यह है कि मैं अपना छोटे-से-छोटा काम भी सबकी राय लेकर करना चाहता हूँ, ताकि कोई यह न कह सके कि लियर प्रजा का ध्यान नहीं रखता, वह मनमानी करता है।"

"जॉन ने सिर झुकाकर कहा—"महाराज! आप प्रजा की चिन्ता न करें। वह तो आपके एक इशारे पर प्राण भी दे सकती है। आप जो भी करेंगे, प्रजा को उससे आनन्द ही होगा।"

लियर थोड़ी देर चुप रहा; फिर सिगार सुलगाई और उसका धुआँ ऊपर की ओर छोड़ता हुआ कुछ सोचकर बोला—

"जॉन!"

"हाँ, महाराज!"

"कैण्ट के अर्ल के पास जाओ और उनसे कहो कि बरगंडी तथा फ्रांस के राजकुमारों को बुलावें। साथ ही अल्वैनी और कौर्नवाल के ड्यूक को भी बुला लें। उन दोनों के साथ गोन-रिल और रीगन को भी आना चाहिए। इन सबके आ जाने पर ही मैं कौर्डेलिया के विवाह और राज्य-प्रवन्ध के विषय में कुछ निश्चित करूँगा।"

जॉन ने सिर झुकाया और बाहर निकल गया। लियर बैठा सिगार पीता रहा।

सर्दी अब भी वैसी ही थी; बल्कि कुछ बढ़ गई थी क्योंकि हवा वेग से चलने लगी थी। कु[illegible] भी पहले जैसा—धुएँ

भाँति सारे लन्दन पर छाया हुआ था। ठीक इसी समय एक अधेड़ अंग्रेज़, जो अपनी वेश-भूषा से कोई ऊँचा ओहदेदार मालूम होता था, 'गोल्डन पैलेस' के फाटक पर आया। वह घोड़े पर सवार था। फाटक पर दरबान ने उसे देखा तो झुककर सलाम किया, फिर आगे बढ़कर घोड़े की रास थाम ली। अधेड़ व्यक्ति उतर पड़ा और पूछा—"सम्राट् कहाँ हैं ?"

"जी, वे अपने पढ़ने वाले कमरे में हैं।" दरबान ने उत्तर दिया।

अधेड़ व्यक्ति भीतर की ओर बढ़ गया। दरबान ने एक सिपाही को बुलाकर घोड़े को अस्तबल में बाँध देने के लिए कहा और स्वयं अपनी ड्यूटी पर आकर खड़ा हो गया।

अधेड़ व्यक्ति तिमंज़िले की सीढ़ी पर पहुँचा, तो उसे सामने से आता हुआ जॉन दिखाई पड़ा। जॉन ने उसे सलाम किया और पूछा—"ऐसी भयानक सर्दी में कहाँ से आ रहे हो, अर्ल ?"

अधेड़ व्यक्ति ने उत्तर दिया—"ग्लौसेस्टर से। लेकिन जॉन ! यह बताओ, सम्राट् क्या कर रहे हैं ?"

"जी, वे बैठे सिगार पी रहे हैं।"

"जाकर मेरे आने की सूचना दे दो।"

जॉन लौट गया। उसे तुरन्त वापस आया देखकर लियर को कुछ आश्चर्य हुआ। उससे पूछा—"लौट कैसे आए, जॉन ?"

जॉन ने सिर झुकाकर उत्तर दिया—"महाराज ! अर्ल आप से भेंट करने के लिए आए हुए हैं ?"

प्रसन्न होकर लियर ने पूछा—"कैण्ट ?"

"नहीं महाराज ! ग्लौसेस्टर।"

"वाह ! वाह ! कैसे अच्छे अवसर पर ग्लौसेस्टर के अर्ल आए हैं ! जाओ उन्हें भेज दो, और तुम कैण्ट को बुला लाओ।"

जॉन ने सिर झुकाया और चला गया। लियर सोचता रहा, एक से दो हो गए। अब मुझे अपनी समस्या का समाधान मिल

जाएगा।

कुछ ही क्षण बीते होंगे कि ग्लौसेस्टर के अर्ल ने कमरे में प्रवेश किया और लियर को सिर झुकाकर अभिवादन करता हुआ बोला—"ईश्वर आपको दीर्घायु करे, सम्राट् !"

लियर चौंका—"उफ़् अर्ल ! तुम यह क्या कह रहे हो ? क्या अस्सी बरस मेरे लिए काफी नहीं हैं ? नहीं-नहीं, अब मुझे और अधिक दीर्घायु बनाने का प्रयत्न न करो। ईश्वर से प्रार्थना करो कि अपने राज्य और परिवार का समुचित प्रबन्ध करके लियर शीघ्र ही मृत्यु की गोद में सो जाए !"

"ऐसा क्यों कहते हैं, सम्राट् ! हम लोग आपके लिए ऐसा क्यों चाहेंगे ?" अर्ल ने विनयपूर्वक कहा।

"लेकिन मैं यही चाहता हूँ अर्ल ! क्योंकि मैं बहुत थक गया हूँ। जीवित रहकर तरह-तरह के झंझटों में पड़ा रहने की इच्छा अब मुझ में नहीं है। शान्ति चाहता हूँ—चिर शांति !"

"लेकिन, सम्राट् ! यह सब तो ईश्वर की इच्छा से ही होता है। मनुष्य भला अपने लिए क्या कर सकता है ?"

"जाने दो ! जो कुछ होगा, देखा जाएगा। तुम आ गए, यह अच्छा हुआ ; मैं तुम्हें बुलाने ही वाला था।"

"आज्ञा कीजिए, सम्राट् ! कौन-सी सेवा करूँ ?"

सिगार खत्म हो चुका था। लियर ने उसे फेंक दिया और अर्ल को पास की कुर्सी पर बैठने का इशारा करके कहा—"मेरे सामने कोर्डेलिया के विवाह का प्रश्न है। फिर राज्य का प्रबन्ध भी करना है, क्योंकि मैं सिंहासन छोड़कर स्वतन्त्र भाव से जीवन बिताना चाहता हूँ। मैंने कैण्ट के अर्ल और अल्बैनी तथा कौर्नवाल के ड्यूक को भी बुलाया है। सब लोग आ जाएँ तो तय किया जाए कि कसे क्या करना चाहिए। तब तक तुम भी यहीं रहो।"

अर्ल ने सिर झुकाकर कहा—"जैसी आपकी आज्ञा।"

लियर ने आगे कहा—"यहाँ से किसी को भेज दो, जो जाकर ग्लौसेस्टर का प्रबन्ध देखता रहे ; संभव है, यहाँ तुम्हें दो हफ्ते तक लग जाएँ।...तुम्हारे दोनों पुत्र कहाँ हैं ?"

"यहीं हैं, महाराज ! वे भी मेरे साथ ही आए हैं।"

"ठीक है ! उन्हें भी किसी पद पर नियुक्त करूँगा।"

कृतज्ञता और प्रसन्नता के भाव से अर्ल ने सिर झुका लिया। लियर कहता गया—"देखो, अर्ल ! मनुष्य को चाहिए कि अपने बच्चों की उन्नति का सदैव ध्यान रखे। तुमने जैसे अपने लड़कों को लगन के साथ पढ़ाया है, इसी तरह उन्हें राज्य का काम भी सिखाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे दोनों पुत्र ब्रिटेन के ऊँचे पदाधिकारी बनें।"

अर्ल ने नम्रतापूर्वक कहा—"जैसी ईश्वर की इच्छा और आपकी कृपा होगी, वही होगा, सम्राट् !"

"मैं भी सोचता हूँ कि अपनी पुत्रियों को ब्रिटेन का राज्य-भार सौंप दूँ, ताकि जीवन के अंतिम दिन तो शांतिपूर्वक बिता सकूँ ! सच कहता हूँ, अर्ल ! मैं इस राजसभा के कोलाहल से, नौकर-चाकरों की भीड़ से, इतनी बड़ी सेना की कवायद-परेड से और इस तड़क-भड़क वाले गोल्डन पैलेस से ऊब गया हूँ। मैं स्वतन्त्र भाव से अपने साथ केवल थोड़े-से सैनिकों को लेकर कहीं एकान्त में रहना चाहता हूँ, ताकि एक साधारण नागरिक का-सा शांतिपूर्ण जीवन बिता सकूँ।"

"आप किसी प्रकार की चिंता क्यों करते हैं, सम्राट् ! जब तक ब्रिटेन के राज्य में एक भी अर्ल, एक भी सिपाही या एक भी नागरिक जीवित है, आपकी सेवा में कमी न आने पाएगी। आपके एक इशारे पर हम लोग आग में भी कूद सकते हैं।" अर्ल ने अपनी छाती ठोंकते हुए कहा।

लियर ने सन्तोष की साँस ली और कहा—"अच्छा जाओ, महल में आराम करो। वे सब लोग भी आ जाएँ, तब दरबार

करूँगा और उसी समय यह विचार किया जाएगा कि आगे के लिए कैसा प्रवन्ध करना चाहिए।"

अर्ल ने सिर झुकाया और कमरे से वाहर निकल गया। लियर ने उठकर एक अँगड़ाई ली और उस कमरे की ओर चल पड़ा, जिसमें चित्रशाला थी। वहाँ उसके अनेक पूर्वजों के चित्र लगे हुए थे। चित्रशाला के द्वार का परदा हटाते ही उसकी दृष्टि सबसे पहले अपनी रानी पर पड़ी, जो लगभग अठारह वर्ष पूर्व उसे छोड़कर स्वर्गवासिनी हो गई थी। लियर की आँखों के सामने रानी की मृत्यु का दृश्य घूम गया और वह वड़ी देर तक टकटकी लगाए चित्र की ओर देखता रहा।

२

ब्रिटेन का राज्य उन दिनों वहुत वड़ा नहीं था, और इसी लिए उसका प्रवन्ध वड़े व्यवस्थित रूप में हो रहा था। पूरा साम्राज्य कई छोटे-छोटे प्रान्तों में वँटा हुआ था। प्रत्येक प्रान्त पर एक अधिकारी नियुक्त था। उसे 'अर्ल' कहा जाता था। भारत के सूवेदारों अथवा गवर्नरों की भाँति वे सम्राट् के अधीन रहकर अपने-अपने प्रान्त का प्रवन्ध करते थे। कुछ उनसे भी वड़े अधिकारी होते थे, जो कई प्रान्तों पर निगरानी रखते थे। इन्हें 'ड्यूक' कहा जाता था। इनका पद 'अर्ल' की अपेक्षा ऊँचा होता था क्योंकि प्रत्येक ड्यूक वहुधा राजघराने का ही कोई व्यक्ति होता था। जैसे भारत में देशी रियासतों के राजे-महाराजे और नवाव सम्माननीय होते थे, ठीक उसी प्रकार ब्रिटेन की जनता वहाँ के ड्यूकों का आदर करती थी। लेकिन ये सारे अर्ल और ड्यूक सम्राट् के अधीन ही होते थे।

सम्राट् को यह पूर्ण अधिकार रहता था कि जब जिसे चाहे, उसके पद से हटा दे, या उसे कारागार में बन्द कर दे।

राजा लियर के लड़का एक भी न था, केवल तीन लड़कियाँ थीं—गोनरिल, रीगन और कौर्डेलिया। कौर्डेलिया सबसे छोटी थी। जब वह तीन वर्ष की थी, तभी उसकी माँ को निमोनिया हो गया था। लियर अपनी रानी को बहुत चाहता था। उसकी चिकित्सा के लिए उसने दूर-दूर से डाक्टर बुलाए, एक-से-एक मूल्यवान दवाएँ मँगाईं, बहुत कुछ पूजा-पाठ भी कराया, लेकिन इतना सब होने पर भी वह उसे यमराज के फन्दे से न बचा सका। एक दिन जब कि रानी दवा पी रही थी, अकस्मात् उसे एक हिचकी आई और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। लियर पास ही बैठा था। रानी का सिर उसी ओर को ढुलक गया और आँखें खुली रह गईं। लियर को भ्रम हुआ कि शायद रानी मुझसे कुछ कहना चाहती है। उसने बड़े प्रेम से उसे सहलाते हुए पूछा—"महारानी! अब जी कैसा है?"

लेकिन महारानी ने कुछ नहीं कहा। वह वैसे ही टकटकी लगाए उसकी ओर देखती रही। लियर ने व्याकुल होकर उसका हाथ थामते हुए कहा—"महारानी! बोलो महारानी! तुम्हारा जी कैसा है? इस तरह मेरी ओर क्यों देख रही हो? महारानी!" शायद अभी तक मृत्यु का रहस्य उसकी समझ में नहीं आया था।

महारानी ने कोई उत्तर नहीं दिया। देती भी तो कैसे, उसकी देखने-सुनने और बोलने की सारी शक्ति तो यमराज खींचकर ले गए थे न! निर्जीव शरीर क्या बोलता, क्या बताता? वह तो अब इस तरह अकड़ गया था, मानों संसार की ओर से मुँह फेरकर कह रहा हो—मुझे किसी से कोई मतलब नहीं है।

यह विश्वास होते ही कि रानी मुझे छोड़कर चली गई है,

लियर मारे शोक के उसी शव के ऊपर गिर पड़ा और अचेत हो गया। राजमहल में कुहराम मच गया और थोड़ी ही देर में सारे शहर में खबर फैल गई। राजा लियर प्रजा की दृष्टि में बहुत ही सम्माननीय था। उसकी रानी भी वैसी ही दयालु और सच्चरित्र थी। प्रजा उसे बहुत चाहती थी। उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर सभी को दुःख हुआ। झुंड-के-झुंड लोग काले कपड़े पहने हुए, शोक-प्रदर्शन के लिए राजमहल के सामने इकट्ठे होने लगे। और शाम को जब रानी का शव श्मशान की ओर ले जाया जाने लगा, तो लियर ने देखा— असंख्य व्यक्तियों की भीड़ साथ चल रही है। रानी के प्रति प्रजा का यह मोह और सम्मान देखकर उसका हृदय एक बार फिर रो उठा।

धीरे-धीरे कुछ दिन और बीते, लेकिन लियर को शांति नहीं मिल सकी। रानी की मृत्यु से उसे अपना जीवन सूना-सूना प्रतीत होने लगा। उसके मन्त्रियों ने उसे दूसरा विवाह करने की सम्मति दी, पर लियर ने उसे स्वीकार नहीं किया। उसने आजीवन विधुर रहने का ही निश्चय किया और लड़कियों के पालन-पोषण के साथ-साथ राज्य-कामों में अपने को इस तरह उलझा लिया कि महारानी की ओर ध्यान देने का अवसर ही न मिल पाता था।

धीरे-धीरे लड़कियाँ सयानी हुईं और लियर बूढ़ा हो चला। उसने अल्बैनी प्रान्त के ड्यूक 'जैक्सन' के साथ गोनरिल का विवाह किया। जैक्सन एक स्वस्थ और सुन्दर युवक था। उसके स्वभाव और राजवंश को देखकर ही लियर ने उसे अपना दामाद बनाया था। लेकिन ड्यूक हो जाने के बाद, लोग उसका वास्तविक नाम 'जैक्सन' नहीं पुकारते थे। वे उसे आदर के नाते 'अल्बैनी का ड्यूक' ही कहते थे। आगे चलकर यह नाम भी छोटा हो गया और जैक्सन को केवल 'अल्बैनी' कहा जाने लगा।

दूसरी लड़की रीगन थी। उसका विवाह लियर ने कौर्न-वाल के ड्यूक 'ग्लोरियस' के साथ किया। ग्लोरियस भी आगे चलकर जैक्सन की भाँति अपने वास्तविक नाम से वंचित हुआ और 'कौर्नवाल' पुकारा जाने लगा।

'अर्ल' भी कई एक थे; पर उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली 'कैण्ट' और 'ग्लौसेस्टर' प्रान्तों के अर्ल थे। प्रजा तो उन्हें चाहती ही थी; सम्राट् भी उनका विश्वास और सम्मान करता था। प्रत्येक कार्य में वह उनकी सम्मति अवश्य लेता था क्योंकि वह जानता था ये दोनों सच्चे स्वामीभक्त हैं।

कैण्ट का अर्ल 'थॉमस' एक बहुत ही ईमानदार और राज्य-भक्त व्यक्ति था। वह सदैव यही चाहता था कि मेरे सम्राट् के राज्य में प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न हो। वह उन छोटे-बड़े सभी कर्मचारियों पर कड़ी नज़र रखता था, जिनके विषय में उसे सुनाई पड़ता कि उन्होंने प्रजा पर कोई अत्याचार किया है, या अपने कर्तव्य का पालन ठीक से नहीं करते है। थॉमस के कोई संतान नहीं थी, क्योंकि उसने विवाह नहीं किया था। युवावस्था में ही उसे सेना से प्रेम हो गया था। बहुत दिनों तक वह कप्तान के पद पर रहा और जब उससे छुट्टी ली, तो सम्राट् ने उसे कैण्ट प्रदेश का 'अर्ल' बना दिया। अर्ल के पद पर रहकर भी उसने ऐसा सुन्दर प्रबन्ध किया कि लोग उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। कुछ लोग तो यहाँ तक कहने लगे कि आगे चलकर हमारे अर्ल कहीं के ड्यूक बनाए जाएँगे।

उस सर्दी वाले दिन थॉमस अपने कमरे में बैठा हुआ एक पुरानी बन्दूक की सफाई कर रहा था; तभी किसी ने दरवाज़े की कुण्डी खटखटाई। थॉमस ने भीतर से ही कहा—"चले आओ!" और जब उसने आगन्तुक को देखा तो चकित हो उठा। पूछा—"अरे! तुम?"

आगन्तुक व्यक्ति सम्राट् लियर का वही विश्वासपात्र सेवक,

जॉन था।

बन्दूक एक ओर रखते हुए थॉमस ने पूछा—"कैसे आए, जॉन ?"

जॉन ने उसे सिर झुकाया और कहा—"श्रीमन् ! महाराज ने मुझे आपसे यह कहने के लिए भेजा है कि आप बरगंडी और फ्रांस के राजकुमारों को बुलवाइए। साथ ही अल्बैनी और कौर्नवाल के ड्यूक भी बुलाए जाएँ। उनके साथ हमारी दोनों राजकुमारियाँ भी आएँगी। इन लोगों को जल्दी-से-जल्दी बुलवाकर आप महाराज से मिलें।"

थॉमस को कुछ आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—"लेकिन, जॉन ! इन सब लोगों को एक साथ क्यों बुलाया जा रहा है ? क्या कोई उत्सव होगा ?"

"हाँ, श्रीमन् !"

"कौन-सा ?"

"छोटी राजकुमारी के विवाह का।"

"कौर्डेलिया के विवाह का ?"

'हाँ, श्रीमन् !"

थॉमस ने कहा—"ठीक है। मैं आज ही हरकारे को भेज दूँगा। यह सब किस दिन होगा, कुछ मालूम है ?"

जॉन बोला—"यह तो न बता सकूँगा, अर्ल !"

"अच्छा, जाओ। मैं सम्राट् की आज्ञानुसार सारा प्रबन्ध करके शीघ्र ही उनके पास आऊँगा।"

जॉन ने सिर झुकाया और वापस लौट गया।

थॉमस फिर अपनी बन्दूक साफ करने लगा।

दोपहर के बाद कुहरा मिट गया था और धूप निकल आई थी, इसलिए सर्दी कम हो गई थी। सवेरे से घरों में बैठे रहने के कारण लोग ऊब गए थे, इसलिए धूप निकलते ही वे सब बाहर आ गए और सड़कों पर चहल-पहल शुरू हो गई। जहाँ कुछ

घंटे पहले कुहरे का अँधेरा और सन्नाटा था, वहाँ अब सूरज की किरणों और लोगों के आवागमन से काफी रौनक आ गई थी। लन्दन शहर का पूरा सौन्दर्य निखर उठा था और सड़कों पर घूमते हुए नर-नारी उसके कोलाहल को बढ़ाते जा रहे थे। ऐसा जान पड़ता था, मानों कोई मेला हो।

वहाँ बहुत-से लोग सुबह-शाम घुड़सवारी करते हैं। फौजी आदमी भी प्रायः ऐसा करते देखे गए हैं। थॉमस को भी इसका शौक था। अपने पूरे सैनिक जीवन में उसे केवल दो ही कार्य प्रिय हो सके थे—घुड़सवारी और निशानेबाजी। शिकार का वह बहुत ही प्रेमी था। अफ्रीका तक की सैर कर चुका था। उसके कमरे में अनेक प्रकार के भारी और भयंकर पशुओं की खालें सजी रखी थीं जिन्हें उसने अपनी युवावस्था में तीर, तलवार या गोली से मारा था। अब चूँकि वह बूढ़ा हो चला था, इसलिए शिकार तो छोड़ दिया था, फिर भी घुड़सवारी करता था। तीसरे पहर उसने देखा कि मौसम साफ हो गया है, इसलिए घोड़ा तैयार कराया और उस पर सवार होकर टेम्स नदी के छोटे पुल की ओर चल पड़ा।

जब वह पुल पर पहुँचा तो उसे किसी ने पुकारा—"अजी ओ श्रीमान्!"

थॉमस ने घोड़ा रोक दिया और इधर-उधर देखने लगा। बाईं ओर की सड़क से दो घुड़सवार, जिनमें से एक वृद्ध था, और दूसरा युवक, आ रहे थे। थॉमस दूर से ही पहचान गया कि वृद्ध पुरुष मेरा मित्र है—ग्लौसेस्टर का अर्ल मार्टिन। उसके साथ आ रहे युवक को वह नहीं पहचान सका; फिर भी उसने समझ लिया कि इसी युवक ने उसे पुकारा है। वह रुककर उनकी प्रतीक्षा करने लगा।

अब तक दोनों घुड़सवार समीप आ गए थे। मार्टिन ने पास आते ही मुस्कराकर कहा—"कैण्ट के अर्ल कहाँ जा रहे हैं?"

थॉमस ने भी वैसे ही हँसकर उत्तर दिया—"जहाँ से मेरे मित्र ग्लौसेस्टर के अर्ल मार्टिन आ रहे हैं।"

'यानी, घूमने !" मार्टिन ने कहा और दोनों हँस पड़े।

युवक की ओर देखकर थॉमस ने कहा—"मैं अभी इस युवक को पहचान नहीं सका। वैसे मेरा अनुमान है कि यह ग्लौसेस्टर के अर्ल का पुत्र होगा !"

"अर्ल का नही, मार्टिन का !" मार्टिन ने मुस्कराकर कहा।

"मेरे लिए दोनों एक ही हैं !" कहकर थॉमस हँसने लगा।

मार्टिन ने युवक से कहा—"ऐडमंड ! क्या तुम इन्हें पहचानते हो ?"

ऐडमंड ने सिर हिलाकर शांत भाव से कहा—"नहीं, पिताजी! इससे पहले मैंने इन्हें नहीं देखा !"

"ठीक है। देखता भी तो कैसे ? तू तो नौ वर्ष तक बर्लिन में रहा है न ! ये मेरे घनिष्ठ मित्र और भाई हैं। पहले ब्रिटिश सेना में कप्तान थे, अब कैण्ट के अर्ल है। इनका नाम थॉमस है। ये तेरे चाचा होते हैं।" वृद्ध मार्टिन ने पुत्र को थॉमस का परिचय दिया।

ऐडमंड ने थॉमस को सिर झुकाकर प्रणाम किया—"चाचाजी ! मैं आपको पहचान नहीं सका था, क्षमा करें। आपकी सेवा करके मुझे प्रसन्नता होगी।"

युवक की बातचीत और तेजस्विता से थॉमस बहुत प्रसन्न हुआ। उसने तनिक आगे बढ़कर उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"मैं तुम से प्रसन्न हूँ, ऐडमंड ! सचमुच मुझे तुम्हारे जैसे सभ्य और चुस्त नौजवान बहुत ही पसन्द आते है। आखिर हो भी तो अर्ल मार्टिन के पुत्र !" और हँसने लगा।

मार्टिन ने कहा—"सभ्यता भले ही इसे मार्टिन से मिली

हो, लेकिन चुस्ती और फुर्ती तो इसे अपने चाचाजी से ही मिली है।"

"किससे ?" थॉमस ने पूछा।

"कैण्ट के अर्ल थॉमस से।" मार्टिन ने मुस्कराकर कहा।

थॉमस इस उत्तर से बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह ऐडमंड की पीठ बार-बार ठोंकता हुआ हँसने लगा—"शाबाश, ऐडमंड !"

मार्टिन ने ऐडमंड से कहा—"ऐडमंड ! तुम घर चलो, मैं थोड़ी देर बाद आऊँगा।"

ऐडमंड ने अपने घोड़े को शहर की ओर मोड़ दिया और एड़ लगाकर हवा में उड़ चला। जब वह आँखों से ओझल हो गया तो थॉमस ने प्रस्ताव किया—"चलो, हम लोग थोड़ा आगे तक घूम आएँ।"

मार्टिन बोला—"चलो" और दोनों के घोड़े एक ओर को बढ़ चले। थॉमस ने कहा—"मित्र, मार्टिन ! ऐडमंड जैसे पुत्र का पिता होकर तुम धन्य हो। मैं बहुत प्रसन्न हुआ यह देखकर।"

मार्टिन ने कुछ लज्जित होते हुए उत्तर दिया—"लेकिन इसमें एक दोष है मित्र ! उसे जान लेने पर तुम ऐडमंड से, और शायद मुझसे भी घृणा करने लगोगे।"

थॉमस को आश्चर्य हुआ। पूछा—"ऐसी क्या बात है मित्र ?"

"बात यह है कि ··" कुछ रुककर मार्टिन ने कहा—"यह मेरा वास्तविक पुत्र नहीं है। मेरा अपना बेटा ऐडगर इससे भी बड़ा है। पर न जाने क्यों, वह बुद्धिमान और सुशील होकर भी मुझे इतना प्रिय नहीं है; हालाँकि मेरा वास्तविक उत्तराधिकारी वही होगा।"

"और यह ?" थॉमस ने पूछा।

मार्टिन ने बताया—"यह ऐडमंड मेरी एक दासी का पुत्र है। मित्र ! दासी होकर भी वह इतनी सुन्दर थी कि मैं उसे प्रेम

करने लगा था। वह तो मर गई है, लेकिन उसकी सेवाओं को, उसके प्रेम को मैं भूल नही सका। उसी नाते इस दासी-पुत्र को मैं ऐडगर से भी अधिक प्यार करता हूँ।"

"इसमें गुण भी ठीक तुम्हारी तरह के है।"

"हाँ, बहुत लोग ऐसा ही कहते है। और, सच पूछो तो भाई! मैं भी ऐडमड का पिता कहलाकर मन ही मन प्रसन्न होता हूँ।"

उत्तर में थॉमस केवल मुस्कराने लगा, कुछ बोला नही। दोनों के घोड़े आगे बढ़ते जा रहे थे। एकाएक मार्टिन ने कहा—"आज सवेरे मैं सम्राट् के पास गया था। ऐसा लगता है कि वे अब शीघ्र ही कौर्डेलिया का विवाह करके राजसिहासन त्याग देगे।"

"अच्छा!···लेकिन ऐसा वे क्यों कर रहे हैं?" थॉमस ने पूछा।

मार्टिन ने सवेरे सम्राट् के साथ हुई अपनी बातचीत कह सुनाई।

थॉमस एक क्षण तक कुछ सोचता रहा, फिर कहा—"सवेरे सम्राट् के निजी सेवक जॉन ने आकर मुझे बताया था कि सम्राट् ने आपको बुलाया है, साथ ही आप दोनों राजकुमारियों, उनके ड्यूक और फ्रांस तथा बरगंडी के राजकुमारों को भी बुलवा लीजिए। शायद यह सब इसी लिए हो रहा है, जिसकी चर्चा अभी तुम कर चुके हो!"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

घोड़े अब तक नगर के उस बाहरी भाग में आ पहुँचे थे, जो सुनसान था। शाम हो रही थी, इसलिए सर्दी के साथ ही अँधेरा भी बढ़ता जा रहा था। थॉमस ने कहा—"आओ, अब लौट चलें।"

मार्टिन ने कुछ कहा नहीं, पर घोड़े की बाग पीछे को मोड़

दी, और दोनों मित्र शहर की ओर लौट पड़े।

कुछ देर तक चुप रहकर थॉमस ने पूछा—"सम्राट् किसे अपना उत्तराधिकारी बनाएँगे, अल्वैनी को या कौर्नवाल को ?"

मार्टिन ने उत्तर दिया—"अभी कुछ कहा नहीं जा सकता, क्योंकि कौर्डेलिया तो अभी कुँवारी ही है। शायद उसी को उत्तराधिकार मिल जाय !"

थॉमस ने कहा—"मैं तो अभी तक यही देखता आ रहा था कि सम्राट् का स्नेह अल्वैनी के ड्यूक जैक्सन पर अधिक है। पर अब, जबकि उत्तराधिकार की बात उठी है, कुछ ठीक नहीं कहा जा सकता।"

"जो भी होगा स्वयं प्रकट हो जाएगा; क्योंकि सम्राट् ने सबको बुला भेजा है। देखें, हम लोगों को किसकी सेवा में जाना पड़ता है।"

सामने से एक बग्घी आ रही थी। कुछ-कुछ अँधेरा भी हो चला था। दोनों मित्रों की बातचीत बन्द हो गई और वे चुप होकर सावधानी से आगे की ओर बढ़ चले।

सम्राट् लियर के राजमहल 'गोल्डन पैलेस' में इन दिनों बड़ी चहल-पहल थी ; क्योंकि उसके कई एक अतिथि अपने सेवकों सहित आए हुए थे। कैण्ट के अर्ल थॉमस ने उसकी आज्ञानुसार दोनों दामादों—अल्वैनी तथा कौर्नवाल के ड्यूकों—को बुला लिया था। उनके साथ दोनों राजकुमारियाँ-गोनरिल और रीगन भी आई हुई थीं। इसके अलावा तीसरी राजकुमारी कौर्डेलिया के साथ विवाह करने के इच्छुक बरगंडी तथा फ्रांस

लगभग बीस मिनट बाद अल्बैनी के ड्यूक जैक्सन, कौर्नवाल के ड्यूक ग्लोरियस, गोनरिल, रीगन, कौर्डेलिया और दो सेवकों को साथ लिए थॉमस ने बरामदे में फिर प्रवेश किया। उन सबने लियर को आदरपूर्वक सिर झुकाया और उसका संकेत पाकर सामने की गद्दीदार कुर्सियों पर बैठ गए। दो-एक क्षण चुप रह-कर लियर ने एक लम्बी साँस खींची; फिर अपनी सन जैसी सफेद और चमकदार दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला—"कैण्ट!"

थॉमस बोला—"हाँ, सम्राट्!"

"अर्ल ग्लौसेस्टर कहाँ है?"

"सम्राट्! आप ही ने तो अर्ल मार्टिन को फ्रांस और बरगंडी के राजकुमारों की सेवा के लिए भेजा था। अर्ल और उनका पुत्र ऐडमंड दोनों वहीं हैं, ताकि राजकुमारों को किसी प्रकार की कठिनाई न होने पाए। क्या उन्हें भी बुलाऊँ?"

"नहीं, नहीं! उन्हें वहीं रहने दो। राजकुमारों के सत्कार के लिए भी कोई मार्टिन जैसा ही विश्वासी आदमी होना चाहिए।"

नक्शे को देखकर लियर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"सचमुच, थॉमस, ! इसे बड़ी बुद्धिमानी से बनाया गया है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

अर्ल ने सिर झुका लिया।

लियर ने फिर कहा—"देखो, मैं समझता हूँ, अच्छे काम में देर नहीं करनी चाहिए। तुम जाकर मेरी तीनों बेटियों और दोनों दामादों को बुला लाओ। मैं अभी सारा निर्णय किए देता हूँ।"

लेकिन थॉमस में लियर जैसा उतावलापन नहीं था। वह एक गंभीर और दूरदर्शी मनुष्य था। उसने कहा—"महाराज! अभी तो छोटी राजकुमारी का विवाह ही नहीं किया गया, तब फिर कैसे राज्य का बँटवारा किया जाएगा?"

लियर का सोया हुआ सनकी स्वभाव इस समय जाग उठा था। उसने अपने हठ पर अड़कर कहा—"उसकी चिन्ता क्यों करते हो अर्ल? कौर्डेलिया को बरगंडी या फ्रांस के किसी राजकुमार के साथ तो ब्याह देना ही है, क्योंकि ये दोनों राजकुमार बहुत दिनों से उसके इच्छुक हैं। मैं आज ही उसका विवाह तय कर दूँगा और राज्य का बंटवारा भी हो जाएगा। मैं जल्दी-से-जल्दी स्वतंत्र होना चाहता हूँ। तुम जाकर अल्बैनी और कौर्नवाल को बुला लाओ।"

"लेकिन, सम्राट्! अभी ....."

बीच में ही लियर ने झल्लाकर उसे रोक दिया—"मेरी बात में 'लेकिन' क्यों लगाते हो, अर्ल! मैं कहता हूँ, जाकर उन सब को बुला लाओ!"

थॉमस ने सिर झुकाकर कहा—"अभी बुलाए लाता हूँ, सम्राट्!" और वह शान्तिपूर्वक उठकर चला गया।

लियर ने सिगार सुलगाई और उसके धुएँ को देखता हुआ विचारों में लीन हो गया।

के राजकुमार भी आए हुए थे। अब केवल यह निर्णय करना था कि कौर्डेलिया का विवाह किसके साथ किया जाय और इंग्लैण्ड का राज्य उनमें किस प्रकार बाँटा जाय ?

कोलाहल-कलरव से लियर की मानसिक शांति भंग हो जाती थी, इसलिए वह चाहता था कि जितना भी जल्दी हो सके, यह सारा कार्य समाप्त करके मैं निश्चिन्त हो जाऊँ। उसी दशा में कभी तो वह एकान्तवास करने का विचार करता और कभी सोचता—अपने थोड़े से विश्वासी सेवकों को साथ लेकर मैं अब जीवन के अन्तिम दिनों में देश-विदेश का भ्रमण करूँगा।

उस दिन वह दोपहर को भोजन के पश्चात्, तिमंज़िले पर अपने बरामदे में बैठा, न जाने क्या सोच रहा था, तभी उसके सेवक जॉन ने आकर बताया—"महाराज, अर्ल आपसे मिलना चाहते हैं।"

थॉमस की स्वामीभक्ति पर लियर को विश्वास तो बहुत था, पर अपने हठी और तरंगी स्वभाव के कारण वह कभी-कभी उसकी बातों को टाल भी देता था। इस समय उसके आने का कारण लियर की समझ में नहीं आया था ; फिर भी उसने सेवक से कहा—"यहीं ले आओ।"

जॉन ने सिर झुकाया और लौट गया। लियर बैठा सोचता रहा—देखूँ, थॉमस की क्या राय है ?

थॉमस ने आते ही लियर को सिर झुकाया और कहा—"महाराज ! आपकी आज्ञानुसार राज्य का नक्शा तैयार हो गया है और उसको रंगीन रेखाओं से तीन बराबर भागों में बाँट दिया गया है।"

"क्या तुम उसे लाए हो ?" लियर ने उत्सुक होकर पूछा।

थॉमस ने अपने कोट की जेब से एक मोमी कागज़ निकाला उसे आगे बढ़ाते हुए कहा—"हाँ महाराज ! यह देखिए !"

नक्शे को देखकर लियर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"सचमुच, थॉमस, ! इसे बड़ी बुद्धिमानी से बनाया गया है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

अर्ल ने सिर झुका लिया।

लियर ने फिर कहा—"देखो, मैं समझता हूँ, अच्छे काम में देर नहीं करनी चाहिए। तुम जाकर मेरी तीनों बेटियों और दोनों दामादों को बुला लाओ। मैं अभी सारा निर्णय किए देता हूँ।"

लेकिन थॉमस में लियर जैसा उतावलापन नहीं था। वह एक गंभीर और दूरदर्शी मनुष्य था। उसने कहा—"महाराज! अभी तो छोटी राजकुमारी का विवाह ही नहीं किया गया, तब फिर कैसे राज्य का बँटवारा किया जाएगा?"

लियर का सोया हुआ सनकी स्वभाव इस समय जाग उठा था। उसने अपने हठ पर अड़कर कहा—"उसकी चिन्ता क्यों करते हो अर्ल? कौर्डेलिया को बरगंडी या फ्रांस के किसी राजकुमार के साथ तो ब्याह देना ही है, क्योंकि ये दोनों राजकुमार बहुत दिनों से उसके इच्छुक हैं। मैं आज ही उसका विवाह तय कर दूँगा और राज्य का बंटवारा भी हो जाएगा। मैं जल्दी-से-जल्दी स्वतंत्र होना चाहता हूँ। तुम जाकर अल्बैनी और कौर्नवाल को बुला लाओ।"

"लेकिन, सम्राट्! अभी ....."

बीच में ही लियर ने झल्लाकर उसे रोक दिया—"मेरी बात में 'लेकिन' क्यों लगाते हो, अर्ल! मैं कहता हूँ, जाकर उन सब को बुला लाओ!"

थॉमस ने सिर झुकाकर कहा—"अभी बुलाए लाता हूँ, सम्राट्!" और वह शान्तिपूर्वक उठकर चला गया।

लियर ने सिगार सुलगाई और उसके धुएँ को देखता हुआ विचारों में लीन हो गया।

लगभग बीस मिनट बाद अल्बैनी के ड्यूक जैक्सन, कौर्नवाल के ड्यूक ग्लोरियस, गोनरिल, रीगन, कौर्डेलिया और दो सेवकों को साथ लिए थॉमस ने बरामदे में फिर प्रवेश किया। उन सबने लियर को आदरपूर्वक सिर झुकाया और उसका संकेत पाकर सामने की गद्दीदार कुर्सियों पर बैठ गए। दो-एक क्षण चुप रह-कर लियर ने एक लम्बी साँस खींची; फिर अपनी सन जैसी सफेद और चमकदार दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला—"कैण्ट !"

थॉमस बोला—"हाँ, सम्राट् !"

"अर्ल ग्लौसेस्टर कहाँ है ?"

"सम्राट् ! आप ही ने तो अर्ल मार्टिन को फ्रांस और बरगंडी के राजकुमारों की सेवा के लिए भेजा था। अर्ल और उनका पुत्र ऐडमड दोनों वहीं हैं, ताकि राजकुमारों को किसी प्रकार की कठिनाई न होने पाए। क्या उन्हें भी बुलाऊँ ?"

"नहीं, नहीं ! उन्हें वहीं रहने दो। राजकुमारों के सत्कार के लिए भी कोई मार्टिन जैसा ही विश्वासी आदमी होना चाहिए।"

एक क्षण तक सन्नाटा रहा। फिर लियर ने कहा—"मेरी बेटियो ! ड्यूको और अर्ल थॉमस ! आज इस गुप्त विषय को तुम्हारे सामने रख रहा हूँ। अब तुम लोग उसे समझो और जैसा उचित हो करो।"

"आज्ञा दीजिए, महाराज !" सब एक साथ बोल पड़े।

लियर ने नक्शे को खोला—"देखो, मैंने अपने साम्राज्य को तीन भागों में बाँट दिया है। अपनी तीनों राजकुमारियों को एक-एक भाग देकर चाहता हूँ कि राज्य की सारी चिन्ताओं से मुक्त हो जाऊँ। चूँकि अब मैं अपने जीवन के अन्तिम दिनों में हूँ ; इसलिए मेरी इच्छा है कि शान्तिपूर्वक मरूँ। शान्ति पाने के लिए ही मैं राज्य छोड़ रहा हूँ। अल्बैनी ड्यूक जैक्सन और

कौर्नवाल ड्यूक ग्लोरियस ! तुम दोनों मेरे बेटों की भाँति हो। मैं चाहता हूँ कि राज्य का एक-एक भाग तुम्हें देकर इसकी घोषणा प्रजा में करा दूँ और तुम उसका भलीभांति प्रबन्ध करो। तीसरा भाग कौर्डेलिया को देने के विचार से रोके हूँ; लेकिन पहले उसका विवाह करना चाहिए। फ्रांस और बरगंडी के राजकुमार बहुत दिनों से इसकी आशा लगाए हैं। इस समय वे मेरे अतिथि भी है। उन्ही में से एक को कौर्डेलिया के लिए चुनना है और फिर उसी को राज्य का तीसरा भाग दिया जाएगा।"

"जैसा आप कहेंगे, वही होगा पिताजी !" जैक्सन ने कहा।

"आपकी इच्छानुसार ही हम लोग, सारा काम करेंगे।" ग्लोरियस बोला।

"लेकिन सबसे पहले मैं अपनी बेटियों से बात करूँगा ताकि उसी के अनुसार मैं अपना रहन-सहन बना सकूँ।" लियर ने कहा।

"बताइये, पिताजी ! हमारे लिए क्या आज्ञा है ?" तीनों राजकुमारियों ने एक साथ ही कहा।

"बात यह है कि राज्य का बँटवारा तो मैंने कर दिया है, लेकिन राजमुकुट अब भी मेरे पास है। उसे मैं उसी को देना चाहूँगा जिसके स्वभाव और गुण से मुझे सन्तोष हो सके। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी बेटियों में मुझे सबसे अधिक कौन प्रेम करती है। गोनरिल ! तीनों बहनों में तुम सबसे बड़ी हो, इसलिए पहले तुम्ही उत्तर दो।"

गोनरिल ने कहा—"पिताजी ! म आपको कितना प्यार करती हूँ, कह नहीं सकती। संसार में कोई किसी को अधिक से अधिक जितना प्यार करता होगा, उससे दस गुना अधिक गोनरिल अपने पिता को प्यार करती है। पिताजी ! मैं के

कुछ ठहरकर उसने रीगन की ओर देखा और बोला—"बेटी रीगन! अब मैं तुमसे पूछता हूँ। बताओ, अपने इस बूढ़े बाप को जो अपना सब कुछ छोड़कर एक साधारण मनुष्य का-सा जीवन बिताने जा रहा है, कितना प्यार करोगी?"

रीगन गोनरिल से भी अधिक चतुर और लालची थी। उसके मन में भी किसी-न-किसी प्रकार पिताजी का राज्य पाने का विचार बहुत दिनों से उठ रहा था। बहन गोनरिल की बातें और उसका प्रभाव देख-सुनकर वह बहुत ही उतावली हो उठी थी। लियर के प्रश्न पर उसने शीघ्रता से, बड़े ही मधुर स्वर में कहा—

"पिताजी! मैं आपको कितना प्रेम करती हूँ, यह सिवा ईश्वर के और कोई नहीं जान सकता। आगे भी मैं आपको ऐसा ही और शायद इससे भी बढ़कर प्रेम करूँगी, क्योंकि अब आप अपनी सुख-सुविधा की सारी वस्तु छोड़ रहे हैं। धर्मग्रंथों में लिखा है कि प्रेम का वर्णन न करना चाहिए, इसलिए मैंने आज तक कभी आपसे कुछ कहा नहीं था; पर आज आपकी आज्ञा पाकर कुछ थोड़े-से शब्दों में कहना चाहती हूँ कि पिताजी, मैं आपको उतना प्यार करूँगी, जितना कोई अपने से भी नहीं कर सकता। आपको मैं अपनी आँखों से भी अधिक, अपने प्राणों से भी अधिक और ईश्वर से भी अधिक प्यार करूँगी। आपकी प्रसन्नता के लिए मैं अपनी आँखें दे सकती हूँ, अपने प्राण दे सकती हूँ, राज्य और परिवार छोड़ सकती हूँ। और आवश्यकता पड़ जाए तो मैं आपके लिए आग में भी कूद सकती हूँ। लेकिन पिताजी! इतना सब करके भी मैं सन्तुष्ट न हो सकूँगी क्योंकि मैं इससे भी कई गुना अधिक आपको प्यार करती हूँ।"

सुनकर लियर बहुत ही आनंदित हुआ। उसने कहा—"शाबाश मेरी बेटी, सचमुच तुम्हारा प्रेम अधिक है। मैं बहुत

ही प्रसन्न हुआ तुम पर।" नक्शे को आगे सरकाते हुए उसने उँगली से इशारा किया—"लो, यह नीली धारी से घिरा हुआ भाग तुम्हारे लिए है। इसमें खेती और खनिज की अधिकता है। यह भाग आज से तुम्हारा हुआ। अपने ड्यूक के साथ तुम इसका प्रबन्ध करो।"

अब कौर्डेलिया की बारी थी। लेकिन उसके मन में न कोई उत्सुकता थी, न प्रसन्नता। बल्कि अपनी बहनों की लम्बी-चौड़ी बातें सुनकर—जिनमें फँसकर उसका पिता अपना सर्वस्व लुटाए दे रहा था—उसे दुःख हुआ था। वह मन-ही-मन सोच रही थी—भला जब गोनरिल और रीगन ने संसार का सारा प्रेम अपने ही पल्ले बाँध लिया, तो बेचारी कौर्डेलिया क्या कहे ? क्या पिता के साथ ऐसा छल करना चाहिए ? क्या मेरी बहनों ने जो कुछ कहा है वह सत्य है ? खैर, कुछ भी हो, मैं पिताजी को इस तरह झूठे प्रेम के जाल में नहीं भटकाऊँगी। मैं उनसे सत्य ही कहूँगी कि कितना प्यार करती हूँ या करूँगी।

ठीक इसी समय लियर ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उससे पूछा—"बेटी कौर्डेलिया !"

"हाँ, पिताजी !" उसने नम्र स्वर में उत्तर दिया।

"गोनरिल और रीगन की बातें तो सुन चुकी हो न ?"

"हाँ, पिताजी, मैंने सब कुछ सुन लिया है।"

"तो फिर वही प्रश्न मैं तुमसे करता हूँ। उसका ठीक-ठीक उत्तर दो ; ताकि राज्य के बचे हुए तीसरे भाग का मैं वैसा ही प्रबन्ध करूँ। बताओ, तुम मुझे कितना प्यार करोगी ?"

कौर्डेलिया एक क्षण तक चुप रही ; फिर उसने वैसे ही नम्र स्वर में कहा—"मुझे क्षमा कीजिए, पिताजी !"

"क्यों ?" लियर ने आश्चर्य से पूछा। दूसरे लोग भी कौर्डेलिया का मुँह देखने लगे। उसके उत्तर से उन्हें भी अचरज हो रहा था।

कौर्डेलिया ने कहा—"मैं उत्तर में कुछ नहीं कहना चाहती, पिताजी !"

"क्या कहा, कुछ नहीं ?"

"हाँ, पिताजी !"

लियर का स्वर कठोर हो उठा। उसने कहा—"सोच-समझ कर कहो कौर्डेलिया ! 'कुछ नहीं' का परिणाम भी 'कुछ नहीं' ही होगा। समझ में आया न ?"

"पिताजी ! मैं बड़ी दयनीय अवस्था में पड़ गई हूँ। इसी लिए कहती हूँ कि आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रही।"

"लेकिन क्यों ?"

"अपने मन की भावना मैं शब्दों में नहीं प्रकट कर सकती, पिताजी !"

"कर नहीं सकती, या करना ही नहीं चाहती ?"

"सच पूछिए पिताजी, तो मैं करना ही नहीं चाहती।"

"ऐसा क्यों ?"

"उसे सुनकर आपको दुःख ही होगा, इसलिये।"

"दुःख ? लियर को दुःख ? क्या कहती हो कौर्डेलिया ! जीवन के अस्सी वर्ष बिताकर मौत का इंतजार कर रहे लियर को अब कौन-सा दुःख होगा ? फिर, अगर तुम्हारी किसी बात से मुझे दुःख पहुँचे भी, तो क्या होगा ! अभी तो मेरी दो बेटियाँ और हैं, जो मुझे संसार में सबसे अधिक प्यार करेंगी !"

कौर्डेलिया चुप रही।

लियर ने फिर कहा—"बताओ न, तुम मुझे कितना प्रेम करोगी ?"

"पिताजी ! मैं आपको उतना ही प्रेम करूँगी जितना एक सन्तान को अपने पिता से करना चाहिए। इससे अधिक मैं अपने प्रेम का बखान नहीं कर सकती। यही मेरा उत्तर है।"

लियर को लगा जैसे कौर्डेलिया अभिमान के कारण ही ऐसा

कह रही है। उसने वैसे ही कठोर भाव से कहा—"सोच लो, कौर्डेलिया ! अब भी समय है। अपने शब्दों को बदल लो, और फिर से मेरी बात का उत्तर दो।"

"मुझे जो कहना था, कह चुकी, पिताजी !"

"तो फिर, मैं तुम्हें अपने पास से कुछ भी नहीं दूंगा, और उसका परिणाम यह होगा कि तुम जीवनभर अपने भाग्य को कोसती रहोगी।"

"आप मेरे पिता हैं। जैसा भी चाहें, कर सकते हैं। लेकिन, मैंने जो कुछ कहा है, सोच-समझकर और सच ही कहा है।"

"मत भूलो कौर्डेलिया ! कि तुम जो कुछ कह रही हो, उसका क्या परिणाम होगा।"

"भूली नहीं हूँ, पिताजी ! इसीलिए ऐसा कह रही हूँ। सोचिए, आपने ही मुझे जन्म दिया, पाला-पोसा और सारे सुख मेरे लिए इकट्ठे किए, तो क्या मैं इसके बदले में आपके साथ छल करूँ ? आपको अँधेरे में भटकाऊँ ? क्या आपसे झूठ बोलकर मैं अपना स्वार्थ सिद्ध करूँ ?"

"इसमें छल की क्या बात है ?" लियर ने पूछा।

"मैं अपनी बहनों की तरह बढ़ा-चढ़ाकर बातें नहीं करना चाहती, पिताजी, क्योंकि उनमें सच्चाई नहीं है। मैं पूछती हूँ, यदि वे संसार में केवल आपको ही प्यार करेंगी, तो क्या अपने पतियों को छोड़ देंगी ? क्या अपने बच्चों और परिवार पर उनका तनिक भी मोह न रहेगा ? यह सब झूठ नहीं तो और क्या है ? इसीलिए मैं साफ और सीधी बात कहना चाहती हूँ कि आज तो मैं आपको इतना प्यार करती हूँ, जितना कोई भी लड़की अपने पिता को कर सकती है ; लेकिन विवाह हो जाने पर मेरा आधा प्रेम आपके लिए होगा और आधा अपने पति के लिए।"

"अच्छा ! तो तुम मुझे आधे हृदय से ही प्यार करोगी ?"

कौर्डेलिया ने कहा—"मैं उत्तर में कुछ नहीं कहना चाहती, पिताजी !"

"क्या कहा, कुछ नहीं ?"

"हाँ, पिताजी !"

लियर का स्वर कठोर हो उठा। उसने कहा—"सोच-समझ कर कहो कौर्डेलिया ! 'कुछ नहीं' का परिणाम भी 'कुछ नहीं' ही होगा। समझ में आया न ?"

"पिताजी ! मैं बड़ी दयनीय अवस्था में पड़ गई हूँ। इसी लिए कहती हूँ कि आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रही।"

"लेकिन क्यों ?"

"अपने मन की भावना मैं शब्दों में नहीं प्रकट कर सकती, पिताजी !"

"कर नहीं सकती, या करना ही नहीं चाहती ?"

"सच पूछिए पिताजी, तो मैं करना ही नहीं चाहती।"

"ऐसा क्यों ?"

"उसे सुनकर आपको दुःख ही होगा, इसलिये।"

"दुःख ? लियर को दुःख ? क्या कहती हो कौर्डेलिया ! जीवन के अस्सी वर्ष बिताकर मौत का इंतज़ार कर रहे लियर को अब कौन-सा दुःख होगा ? फिर, अगर तुम्हारी किसी बात से मुझे दुःख पहुँचे भी, तो क्या होगा ! अभी तो मेरी दो बेटियाँ और हैं, जो मुझे संसार में सबसे अधिक प्यार करेंगी !"

कौर्डेलिया चुप रही।

लियर ने फिर कहा—"बताओ न, तुम मुझे कितना प्रेम करोगी ?"

"पिताजी ! मैं आपको उतना ही प्रेम करूँगी जितना एक सन्तान को अपने पिता से करना चाहिए। इससे अधिक मैं अपने प्रेम का बखान नहीं कर सकती। यही मेरा उत्तर है।"

लियर को लगा जैसे कौर्डेलिया अभिमान के कारण ही ऐसा

कह रही है। उसने वैसे ही कठोर भाव से कहा—"सोच लो, कौर्डेलिया! अब भी समय है। अपने शब्दों को बदल लो, और फिर से मेरी वात का उत्तर दो।"

"मुझे जो कहना था, कह चुकी, पिताजी!"

"तो फिर, मैं तुम्हें अपने पास से कुछ भी नहीं दूंगा, और उसका परिणाम यह होगा कि तुम जीवनभर अपने भाग्य को कोसती रहोगी।"

"आप मेरे पिता हैं। जैसा भी चाहें, कर सकते हैं। लेकिन, मैंने जो कुछ कहा है, सोच-समझकर और सच ही कहा है।"

"मत भूलो कौर्डेलिया! कि तुम जो कुछ कह रही हो, उसका क्या परिणाम होगा।"

"भूली नहीं हूँ, पिताजी! इसीलिए ऐसा कह रही हूँ। सोचिए, आपने ही मुझे जन्म दिया, पाला-पोसा और सारे सुख मेरे लिए इकट्ठे किए, तो क्या मैं इसके वदले में आपके साथ छल करूँ? आपको अँधेरे में भटकाऊँ? क्या आपसे झूठ वोलकर मैं अपना स्वार्थ सिद्ध करूँ?"

"इसमें छल की क्या वात है?" लियर ने पूछा।

"मैं अपनी वहनों की तरह वढ़ा-चढ़ाकर वातें नहीं करना चाहती, पिताजी, क्योंकि उनमें सच्चाई नहीं है। मैं पूछती हूँ, यदि वे संसार में केवल आपको ही प्यार करेंगी, तो क्या अपने पतियों को छोड़ देंगी? क्या अपने वच्चों और परिवार पर उनका तनिक भी मोह न रहेगा? यह सव झूठ नहीं तो और क्या है? इसीलिए मैं साफ और सीधी वात कहना चाहती हूँ कि आज तो मैं आपको इतना प्यार करती हूँ, जितना कोई भी लड़की अपने पिता को कर सकती है; लेकिन विवाह हो जाने पर मेरा आधा प्रेम आपके लिए होगा और आधा अपने पति के लिए।"

"अच्छा! तो तुम मुझे आधे हृदय से ही प्यार करोगी?"

"हाँ, पिताजी ! विवाह हो जाने पर तो यही होगा; लेकिन मैं आपको अपना सारा प्रेम देना चाहती हूँ, इसलिए विवाह करूँगी ही नहीं। मैं जीवनभर कुँआरी रहूँगी और आपके पास रहकर अपने हृदय का सारा प्रेम आपकी सेवा में लगाऊँगी। इससे अधिक और क्या कह सकती हूँ, पिताजी !"

"कौर्डेलिया ! क्या तुम यह सच कह रही हो ?"

"हाँ, पिताजी ! झूठ ही कहना होता, तो अपनी बहनों की तरह बढ़ा-चढ़ाकर बातें कर सकती थी।"

"इतनी छोटी आयु में ही ऐसा कठोर स्वभाव !"

"कठोर स्वभाव नहीं, पिताजी, यह मेरी सच्चाई है। मैं छल और बनावट से घृणा करती हूँ। सच कहना और सच बोलना ही मुझे पसंद है।"

लियर का स्वर और भी कठोर हो गया। उसने कहा—"अच्छा, तो कौर्डेलिया ! अब तुम अपनी इसी सच्चाई के सहारे जीवन-निर्वाह कर लेना। मैं तुम्हें एक कौड़ी भी नहीं दूँगा। मेरे तुम्हारे बीच पिता-पुत्री का सम्बन्ध आज से टूट गया। मेरे लिए तुम मर चुकी हो। तुम्हारा जहाँ जी चाहे जाओ और रहो। मुझ से, मेरे राज्य से और मेरी संपत्ति से तुम्हारा तनिक भी संबन्ध नहीं है। मैं अग्नि, सूर्य और वायु सभी देवताओं की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैंने तुम्हें त्याग दिया।"

सब लोग सन्नाटे में आ गए। गोनरिल और रीगन मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुईं; क्योंकि अब राज्य का तीसरा भाग भी उन्हीं को मिलने वाला था। उनके पति जैक्सन और ग्लोरियस कुछ भी न कह सके, चुपचाप लियर का मुँह ताकते रह गए। लेकिन अर्ल थॉमस से न रहा गया। लियर के सनकी स्वभाव द्वारा ऐसा अनर्थ होते देखकर वह बोल उठा—

"क्षमा कीजिए महाराज ! मैं ....."

बीच में ही लियर ने उसे टोका—"तुम चुप रहो, थॉमस !

इस समय मेरा क्रोध अजगर की तरह भयानक हो उठा है। उसके शिकार के बीच में मत पड़ो। तुमने सुना नहीं, इस कौर्डेलिया ने मुझे कितने अहंकार के साथ उत्तर दिया है! उफ़! मैं इसे सबसे अधिक चाहता था और इसीलिए इसको सबसे मूल्यवान इलाका देना चाहता था; क्योंकि मैं समझता था कि यह लड़की अवश्य ही मुझे इन अंतिम दिनों में शान्ति पहुँचाएगी। लेकिन ओह! कितनी कठोर, कितनी भयानक निकली यह! इसने मेरी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया। इसकी बातों से मुझे जो दुःख पहुँचा है, वह कब्र में भी मुझे चैन न लेने देगा। अर्ल कैण्ट! मैं कहता हूँ तुम इन सबको लेकर मेरी आँखों के सामने से हट जाओ। मैं किसी से बात नहीं करना चाहता। इस समय मैं बिल्कुल अकेला रहूँगा। तुम कल सवेरे फिर इन सबको लेकर यहीं आओ, तब आगे का निर्णय भी कर दूँगा। अब जाओ यहाँ से, हटो! उफ़!"

"लेकिन, सम्राट्!......"

"मैं कहता हूँ, मेरी बात मत पलटो।" कहकर क्रोध से काँपता हुआ लियर उठकर दूसरे कमरे में चला गया और सब के सब भौंचक्के-से उसकी ओर देखते रह गए।

दूसरे दिन अर्ल थॉमस, लियर की आज्ञानुसार फिर सबको लेकर उसके कमरे में उपस्थित हुआ। लियर का क्रोध अभी तक शान्त नहीं हुआ था। उसकी आँखों से चिन्गारियाँ निकल रही थीं और चेहरा भयानक लग रहा था। जान पड़ता था, वह रात-भर सो नहीं सका है; क्योंकि माथे पर जागरण और चिड़-

चिड़ेपन की रेखाएं उभरी हुई थीं। एक बार सबकी ओर देखकर उसने कहा—"अर्ल !"

"हाँ, महाराज !" थॉमस ने बहुत ही नम्रतापूर्वक सिर झुकाया।

"मैं सारी रात विचार करता रहा और अन्त में इसी निर्णय पर पहुँचा हूँ कि कौर्डेलिया को कुछ भी न दूँ ; क्योंकि उसके मन में मेरे लिए तनिक भी मोह नहीं है।"

"लेकिन, सम्राट् ! यह तो उचित न होगा कि……"

"जो उचित होगा, वह मैं जानता हूँ, थॉमस ! तुम फ्रांस और वरगंडी के राजकुमारों को बुलाओ। मैं अभी इसका फैसला किए देता हूँ। अपने जिस अभिमान को यह लड़की सीधा स्वभाव बताती है, अब इसके निर्वाह के लिए सिर्फ वही एक सहारा रह जाएगा। मैं देखूँगा कि उसका यह अभिमान उसे कहाँ ले जाता है।"

रीगन और गोनरिल मन-ही-मन आनंदित हो उठीं।

लियर ने अपने दोनों दामादों से कहा—"ड्यूक जैक्सन और ग्लोरियस ! राज्य का बचा हुआ तीसरा भाग भी मैं तुम्हीं को दे रहा हूँ। इस पूरे साम्राज्य की सम्पत्ति, सेना और प्रजा पर आज से तुम्हीं दोनों का अधिकार होगा। आज तक जो गौरव और सम्मान मुझे प्राप्त था, वह अब तुम्हें मिल जाएगा। मैं अभी प्रचारक को बुलवाकर इसकी घोषणा कराए देता हूँ। अपना सर्वस्व मैंने तुम्हें दे दिया है। मेरे पास केवल एक सौ सरदार रहेंगे, जो मेरे सेवक और सैनिक होंगे। मैं बारी-बारी से एक-एक महीने के लिए तुम दोनों के पास रहा करूँगा। आशा है कि मेरी आयु के शेष दिन तुम्हारे सहारे बीत जाएँगे। तुम मेरे और मेरे सरदारों के रहने की व्यवस्था कर दिया करना, बस !"

"आप मुझे कुछ भी न दें, पिताजी, तो भी मैं आपकी

सेवा से मुँह नहीं मोड़ूँगा ।" जैक्सन ने कहा ।

"और मुझे भी आप पीछे न पाएँगे, पिताजी ! आपकी प्रत्येक आज्ञा का पालन मैं तन-मन से करूँगा ।" ग्लोरियस ने कहा ।

"तो फिर ठीक है । आज से तुम दोनों ही ब्रिटेन के सम्राट् हुए । रह गया यह मुकुट, सो इसके भी मैं दो टुकड़े किए देता हूँ । एक-एक भाग तुम दोनों ले लो ।" कहते हुए लियर ने मुकुट के दो खंड करके उनकी ओर बढ़ा दिए और कहा—"लो, इसे भी स्वीकार करो, पुत्रो !"

जैक्सन और ग्लोरियस ने मुकुट लेकर माथे से लगाया और बोले—"पिताजी ! हम जीवनभर आपके आज्ञाकारी दास रहेंगे ।"

"मेरी सबसे पहली आज्ञा तो यही है कि तुम लोग कौर्डेलिया को किसी भी तरह की सहायता न देना । मैं नहीं चाहता कि मेरे राज्य का वह एक भी अंश पा सके ।"

दोनों ड्यूक कुछ कहें, इससे पहले ही गोनरिल और रीगन बोल उठीं—"आप निश्चित रहिए, पिताजी ! हम लोग कभी भी आपकी आज्ञा के बाहर नहीं जाएँगे ।"

कौर्डेलिया के साथ ऐसा अन्याय होते देखकर थॉमस का मन विद्रोह कर उठा । वह एक सच्चा राजभक्त था, और समझता था कि आगे चलकर लोग सम्राट् के इस कार्य की निन्दा करेंगे ; इसलिए उसने लियर के क्रोध की कुछ भी परवाह न करके कहा—"सम्राट् ! आज आपके द्वारा राजकुमारी कौर्डेलिया के साथ न्याय नहीं हो रहा । उसे ऐसा कठोर दण्ड न दीजिए ।"

लियर ने बिगड़ते हुए उससे पूछा—"अर्ल थॉमस ! क्या तुम मेरा कहना नहीं मानोगे ?"

"मानूँगा, महाराज, सदैव मानूँगा । लेकिन उस जगह

अवश्य आपकी आज्ञा के बाहर जाऊँगा, जहाँ आपके सम्मान पर आँच आ सकती है। मैंने आपको पिता-तुल्य समझा है, अपना स्वामी जानकर आपकी सेवा की है और सम्राट् मानकर आपके लिए अपना रक्त बहाने को तैयार रहा हूँ। लेकिन, महाराज ! इस समय दया कीजिए। छोटी राजकुमारी निर्दोष है, उसका कोई अपराध नहीं है। उसे क्षमा कीजिए।"

"थॉमस ! मैं कहता हूँ धनुष पर बाण चढ़ाकर उसकी डोरी खींची जा चुकी है। तुम उसके सामने से हट जाओ।" लियर ने वैसे ही क्रोध से कहा।

थॉमस ने समझ लिया कि सम्राट् ने ज़िद पकड़ ली है, फिर भी उसने साहस नहीं छोड़ा। वह बराबर कौर्डेलिया का पक्ष लेता रहा। यह सोचकर कि आखिर तो राज्य बँट ही गया है, उसने लियर से कहा—"सम्राट् ! इस विषैले बाण की मुझे तनिक भी चिंता नहीं है। भले ही वह मेरी छाती में धँस जाए, पर मैं अपने रहते आपके हाथों हो रहे ऐसे अन्याय का सदैव विरोध करूँगा। इस समय आपका विवेक नष्ट हो गया है। आपने कौर्डेलिया की बातों पर गंभीरता से विचार नहीं किया। आप कर भी नहीं सकते, क्योंकि उत्तेजित मनुष्य कभी भी सत्य को पहचान नहीं सकता। यह मत सोचिए कि कौर्डेलिया का हृदय प्रेम से खाली है। वह आपको बहुत प्रेम करती है; लेकिन उसके प्रेम में खोखलापन नहीं है, इसी से उसमें शोर नहीं उठता। उसने गिने-चुने दो-चार वाक्य ही आपके लिए कहे हैं; पर उनके नीचे प्रेम की अगाध धारा बह रही है। आज आपको उसका प्रेम नहीं दिखाई पड़ रहा, लेकिन किसी समय आप अपने इस निर्णय पर पछताएँगे।"

"अरे, एक साधारण अर्ल होकर तुम अपने को इतना ऊँचा समझने लगे, थॉमस ! मुझको ज्ञान सिखाते हो ? मैं कहता हूँ— अगर जीवित रहना है, तो चुप रहो। मैं तुम्हारी एक भी बात

नहीं सुनना चाहता।"

"स्वामी! मैं जीवित रहूँ या न रहूँ, पर आपका सेवक हूँ। इस नाते मेरा कर्तव्य है कि आपकी रक्षा, शांति और सुख की चिन्ता करूँ। आपके शत्रुओं से युद्ध करते हुए, आपकी सेवा में लगे रहकर यदि मुझे अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़े, तो मैं अपने को धन्य समझूँगा। मुझे आप कोई भी दण्ड दीजिए, पर मेरी बात पर एक बार फिर विचार कर लीजिए। राजकुमारी कौर्डेलिया को······"

लियर भड़क उठा—"ओ मूर्ख! हट जा मेरी आँखों के सामने से। मैं तेरी सूरत तक नहीं देखना चाहता।"

"महाराज! आपको यह क्या हो गया है। इतना हठ आप क्यों कर रहे हैं? तनिक बुद्धि से काम लीजिए। मैं आपकी छाया में रहकर सेवा ही करूँगा। मुझे अपने चरणों से दूर न कीजिए।"

लियर ने तमककर आकाश की ओर देखा और कहा—"ओ मेरे अपोलो देवता! तुम देख रहे हो न, इस दुष्ट का साहस कितना बढ़ गया है! अब मैं तुम्हारी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि··"

"ठहरिये, सम्राट्! व्यर्थ में आप देवता की सौगन्ध क्यों खा रहे हैं? मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ···"

घायल बाघ की तरह झपटकर लियर ने अपनी तलवार खूँटी से उतारते हुए कहा—"इस कुत्ते का भौंकना अब मैं नहीं सह सकता। अभी एक ही वार में इसको ···।"

रंग में भंग होते देखकर दोनों ड्यूक उठ खड़े हुए। उन्होंने लियर का हाथ पकड़ लिया और बड़े ही नम्र स्वर में समझाया—"जाने भी दीजिए, पिताजी! इसे मत मारिए। ऐसा करना उचित न होगा। आप शान्त होकर बैठ जाइए।"

लियर बैठ तो गया, लेकिन शान्त होकर नहीं। वह वैसे ही

बड़बड़ाता रहा—"इस नीच का इतना साहस कि मेरी बात में अड़ंगा डाले ! मैं जो कुछ कहूँ उसे करने से इन्कार करे ! कभी नहीं । लियर लियर है । उसने कभी नीचा नहीं देखा । उसने जब जो चाहा है, वही हुआ है । आज भी वही होगा ।"

थॉमस ने खड़े होकर फिर कहा—"सम्राट् ! मैं आपका सेवक हूँ और इसलिए जब तक जीवित रहूँगा, आपके हित के लिए आगे बढ़ता रहूँगा, भले ही मुझे आपका कोपभाजन बनना पड़े । आप इस समय क्रोध के आवेश में सत्य को नहीं देख पा रहे हैं, इसी से कौर्डेलिया और मैं आपको शत्रु दिखाई पड़ते हैं ।"

"ठहर जा नीच ! तू अब भी बकवास कर रहा है । मैं तेरी चालाकी समझ गया हूँ । तू बार-बार मुझे मेरे निश्चय से डिगाना चाहता है । इसका अर्थ यह है कि तू मेरे ऊपर शासन करना चाहता है । अपने अधिकार का तुझे बड़ा गर्व हो गया है; लेकिन देख, मैं किस तरह उसे चुटकियों में मसलता हूँ—आज से कैण्ट के अर्ल का तेरा पद छिन गया । राज्य में तेरी हैसियत एक छोटे से झाड़ू वाले नौकर के बराबर भी नहीं रह गई । तुझे पाँच दिन का समय दे रहा हूँ । इस बीच अपना प्रबन्ध कर ले और छठे दिन मेरे इंग्लैण्ड के बाहर चला जा । अगर सातवें दिन मेरे राज्य के किसी भी कोने में तेरी गन्ध मिली, तो तुझे शिकारी कुत्तों से नुचवाऊँगा । मैं कहता हूँ, इसी समय मेरी आँखों के आगे से हट जा । आज ही तुझे मालूम हो जाएगा कि लियर के मुँह से निकली हुई बातें कभी बदल नहीं सकतीं ।"

थॉमस ने बड़ी ही शान्ति के साथ सिर झुकाया और अपनी 'अर्ल' की पोशाक उतारते हुए कहा—"अच्छा, सम्राट् लियर ! आपकी यह आज्ञा भी मैं स्वीकार करता हूँ । मुझे प्रसन्नता है कि मैं आज से स्वतंत्र हो गया । भले ही आपने मुझे राज्य से निकाल दिया है, पर मैं जहाँ भी रहूँगा, ईश्वर से प्रार्थना

करूँगा कि वह आपको सुख और शान्ति दे। अब मैं जाता हूँ, और चलते-चलते यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि यदि कभी आवश्यकता पड़े, तो ढिंढोरा पिटवा दीजिएगा, थॉमस आपकी सेवा के लिए उपस्थित हो जाएगा।"

लियर ने उसकी ओर से मुँह फेरकर कहा—"जाओ, जाओ! मैं तुम्हारी एक भी बात नहीं सुनना चाहता।"

थॉमस ने कौर्डेलिया के आगे सिर झुकाकर कहा—"राजकुमारी! ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! तुमने जो भी कहा है, अपने हृदय की सच्चाई से कहा है। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें सुखी रखे और जीवन में विपत्तियों को सहन करने की शक्ति दे। मैं अब ब्रिटेन की सीमा से बाहर जा रहा हूँ। मुझसे कोई भूल हुई हो तो उसे क्षमा करना।"

एक क्षण रुककर उसने गोनरिल और रीगन से कहा—"ओ राजवंश की देवियो! विदा के समय थॉमस तुम्हारे लिए भी ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि तुम सम्राट् को अपने कथनानुसार प्रेम देकर उन्हें सुखी कर सको।" फिर उसने एक बार सभी को सिर झुकाया और यह कहता हुआ चला गया—"चलो थॉमस! अब किसी दूर देश में रहकर अपने बुढ़ापे के दिन काटो।"

थॉमस के जाने के बाद कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। कौर्डेलिया चुपचाप बैठी सोच रही थी—आज मेरे ही कारण अर्ल कैण्ट को देशनिकाले का दंड भोगना पड़ा। गोनरिल और रीगन सोच रही थीं—बड़ा अच्छा हुआ कि वह दुष्ट हमारे रास्ते

से हट गया। वह रहता तो कौर्डेलिया के लिए हमारे विरुद्ध कोई-न-कोई षड्यंत्र अवश्य रचता। अब हम निःशंक होकर राज्य के उस तीसरे भाग को भी अपने अधिकार में करेंगी। अल्बैनी और कौर्नवाल के ड्यूक सोच रहे थे—सम्राट् ने हमें पद तो वहुत ऊँचा दिया है, पर इनका स्वभाव सनकी है। जव थॉमस जैसे स्वामीभक्त अर्ल का यह हाल हुआ, तो हमारे साथ भी पता नहीं, कव कैसा व्यवहार कर वैठें! और, लियर सोच रहा था—ठीक ही हुआ। मैं दोनों लड़कियों के यहाँ वारी-वारी से एक-एक महीने तक रहा करूँगा। दोनों को वरावर राज्य दिया है, इसलिए वे भी वरावर ही मेरा सत्कार करेंगी। कौर्डेलिया के विवाह का झंझट भी अव दूर हुआ। मुझे उसके लिए चिंता नहीं करनी पड़ेगी। वह चाहे जहाँ जाए, मुझसे कोई मतलव नहीं। थॉमस को मैंने देश से निकाला है, पर कौर्डेलिया को तो अपने हृदय से ही निकाल चुका हूँ। उफ़! ऐसी अभिमानिनी लड़की! इसका इतना कठोर हृदय! मुझे धिक्कार है कि मैं इसका पिता हुआ। यह मनुष्य नहीं, पत्थर है—राक्षसी है। इसका मुँह देखना भी ठीक नहीं। और, आज तक मैं इसे अपनी सवसे प्यारी वेटी समझता आया था। छिः! कितने अँधेरे में भटक रहा था मैं!

ठीक इसी समय एक दरवान ने प्रवेश किया। लियर ने उसकी ओर देखा और आँखों के इशारे में ही पूछा—

"क्या है?"

दरवान ने सिर झुकाकर कहा—"महाराज! ग्लौसेस्टर के अर्ल आए हुए हैं।"

"अकेले हैं?"

"नहीं; सम्राट्! उनके साथ दोनों अतिथि ड्यूक भी हैं।"

"वरगंडी और फ्रांस?"

"हाँ, महाराज!"

"जाओ, उन सबको यहीं बुला लाओ।"

दरबान चला गया। लियर मौन भाव से बैठा रहा और उसकी दोनों बड़ी राजकुमारियाँ तथा दामाद सोचने लगे—देखें अब क्या होता है ?

थोड़ी देर बाद अर्ल मार्टिन ने प्रवेश किया। उसके साथ फ्रांस का राजकुमार आर्थर और बरगंडी का ड्यूक मनरो भी था। लियर को सिर झुकाकर वे सब उसके सामने बैठ गए। मार्टिन ने एक बार सम्राट् तथा उसके परिवार पर नजर डाली और तब प्रार्थना के स्वर में बोला—"आदरणीय सम्राट्! फ्रांस और बरगंडी के राजकुमारों को आपकी आज्ञानुसार मैं ले आया हूँ।"

अब तक लियर का क्रोध कुछ शान्त हो चला था। उसने बरगंडी के राजकुमार मनरो से ही पहले पूछा—"मेरे प्रिय अतिथि राजकुमार! यह बताओ कि मैं कौर्डेलिया के साथ कम-से-कम कितना दहेज अवश्य दूँ, जिसके बिना तुम उससे विवाह नहीं कर सकते ?"

मनरो ने बड़े ही विनम्र भाव से कहा—"इस विषय में मैं क्या कहूँ, महाराज! आप तो पहले ही निश्चित कर चुके थे, कि ब्रिटेन का एक-तिहाई राज्य दूँगा। उससे अधिक मैं कुछ भी नहीं माँगता। मुझे आशा है कि आप कम-से-कम उतना तो अवश्य ही देंगे।"

"दे देता, राजकुमार! शायद उससे भी अधिक दे देता। लेकिन अब वह बात नहीं रह गई। अब तो मेरी निगाह में इस लड़की का कुछ भी मूल्य नहीं है। मैं इसे तनिक भी प्यार नहीं करता, इसलिए इसे कुछ भी नहीं दे सकूँगा। यह बड़ी ही अभिमानिनी और कपटी स्वभाव की लड़की है। वह देखो, सामने सिर झुकाए बैठी हुई है। मैं इससे बहुत ही रुष्ट हूँ और शीघ्र ही इसे अपने राजमहल से निकाल दूँगा। ऐसी दशा में अगर

तुम्हें विवाह करने की इच्छा है, तो ले जाओ इसे; लेकिन इसके साथ ही तुम्हें मेरा वह क्रोध और दंड भी स्वीकार करना पड़ेगा, जो इसके लिए मेरे मन में है। बस, यही तुम्हारा दहेज होगा। कौर्डेलिया के साथ विवाह करने वाले को लियर से इसके अलावा और कुछ न मिलेगा। बोलो, तुम क्या चाहते हो?"

मनरो सन्न रह गया। असल में वह कौर्डेलिया के लिए नहीं, ब्रिटेन का राज्य पाने के लिए ही यह विवाह करना चाहता था, क्योंकि वह एक विलासी और स्वतंत्र राजकुमार था। गंभीर प्रेम का उसमें सर्वथा अभाव था। उसका चरित्र बहुत ही गिरा हुआ था। वह रास-रंग में डूबा रहने वाला व्यक्ति था। लियर की बात सुनकर वह जैसे आसमान से गिर पड़ा। निराशा के कारण वह इतनी घबराहट में पड़ गया कि कुछ बोल ही न सका।

लियर ने फिर पूछा—"राजकुमार मनरो! मेरे प्रश्न का उत्तर दो।"

"मैं समझ नहीं पा रहा, सम्राट्, कि आपको क्या उत्तर दूँ।"

"मैं पूछता हूँ कि उस कौर्डेलिया को, जिसका कोई साथी-संगी नहीं है, जिसे मैंने भी त्याग दिया है, जिसे अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अब मैं राज्य से कुछ भी नहीं दे सकता और जिसके लिए मेरे हृदय में सिवा घृणा के और कोई भाव नहीं है, क्या तुम विवाह करके अपने साथ रखना चाहते हो? सोच-समझ कर बताओ।"

"ऐसी दशा में मैं कुछ भी निश्चित नहीं कर पा रहा, सम्राट्!"

"तो फिर उसकी आशा छोड़ो। चूँकि मैं उसका पिता हूँ, इसलिए उसके विषय में सभी कुछ साफ़-साफ़ कह देना मेरा फ़र्ज़ था।"

मनरो चुप रहा। उसने एक शब्द भी नहीं कहा। उसकी आँखें कभी कौर्डेलिया पर जातीं और कभी लियर पर। वह एक दुविधा के झूले पर बैठा हुआ इधर-उधर के झोंके खा रहा था।

अब लियर ने फ्रांस के राजकुमार आर्थर से कहा—"फ्रांस कुमार! मैं तुमसे भी ऐसी आशा नहीं करता कि जिसे अपनी बेटी कहने में भी मुझे लाज आती है, जिसे मैं घृणा की दृष्टि से देखता हूँ, जो अहंकार के कारण मुझे भी प्यार नहीं करती, उस अभागिन के साथ तुम विवाह करोगे।"

लेकिन, यहाँ लियर को धोखा हुआ। आर्थर एक बहुत ही सच्चरित्र और तेजस्वी राजकुमार था। वह जैसा सुन्दर और विद्वान था, वैसा ही शूरवीर और बात का धनी भी था। कौर्डेलिया के गुणों को बहुत पहले से सुनकर वह मन-ही-मन उससे सच्चा प्रेम कर रहा था और इसीलिए उसके साथ विवाह करने की आशा लेकर आया हुआ था। उसे ब्रिटेन की रियासत पाने का तनिक भी लोभ नहीं था, वह केवल कौर्डेलिया को ही प्राप्त करना चाहता था। मनरो और लियर की बातों से उसे दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी। उसने एक बार सिर झुकाए बैठी हुई कौर्डेलिया की ओर देखा, फिर लियर से बोला—

"लेकिन, आदरणीय सम्राट्! यह परिवर्तन अकस्मात् कैसे हो गया? अभी तक जिस राजकुमारी के गुणों का आप बखान करते नहीं थकते थे वही अब इतनी गिरी हुई कैसे हो गई? मुझे इस पर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि कौर्डेलिया में इतने दुर्गुण अकस्मात् कैसे प्रकट हो गए?"

अब कौर्डेलिया ने सिर उठाया और लियर से कहा—"मेरे पूज्य पिताजी! मैंने सत्य बात कहकर आपके साथ तनिक भी छल नहीं किया है। मैंने जो कुछ कहा है उस पर सदैव दृढ़ रहूँगी। अगर मैं बढ़ा-चढ़ाकर कुछ कहती और बाद में उसे पूरा न कर पाती तो आपको यह दुःख होता कि हमारी बेटी

ने हमें धोखा दिया। मेरी स्पष्ट बातों पर आज आप जितना क्रोध कर रहे हैं, छलमयी बातों पर आगे चलकर उससे भी अधिक क्रोध करते। मेरी सच्चाई से आपको आज जो चोट पहुँची है, आगे चलकर मेरे विश्वासघात से वह और भी बढ़ जाती। हालाँकि आप मुझसे बहुत ही रुष्ट हो गए हैं, फिर भी मुझे सन्तोष है कि मैंने आपके साथ विश्वासघात तो नहीं किया, जो किसी सन्तान द्वारा अपने पिता के साथ किया गया सबसे बड़ा पाप होता है। मैं प्रसन्न हूँ कि छल और विश्वासघात से मेरा मन दूर है। मैं किसी को झूठी आशा में भटकाना पसन्द नहीं करती।"

"लियर ने एक लम्बी साँस खींची और कहा—"इस सबसे अच्छा तो यह था, कौर्डेलिया, कि तुम मेरी बेटी होकर जन्म ही न लेती।"

राजकुमार आर्थर को कौर्डेलिया पर बड़ी दया आई। साथ ही उसकी सत्यवादिता और निश्छल स्वभाव पर वह मन-ही-मन प्रसन्न हो उठा। उसने मनरो से कहा—'मेरे मित्र बरगंडी के ड्यूक! सच्चे प्रेम में किसी प्रकार का लोभ अथवा भय नहीं होता। दहेज के रूप में ब्रिटेन का राज्य तो नहीं, केवल कौर्डेलिया का प्रेम मिल सकता है। बोलो, क्या तुम उसके साथ विवाह करोगे?"

मनरो ने लियर से कहा—"सम्राट्! वह तीसरा भाग जो पहले आप दे रहे थे, अगर मुझे मिल जाय तो मैं अभी राजकुमारी का हाथ थाम लेने को तैयार हूँ।"

लियर ने दो टूक उत्तर दिया—"वह तो मैं पहले ही बता चुका हूँ कि अपनी प्रतिज्ञा और सौगन्ध के अनुसार कुछ भी नहीं दूँगा।"

मनरो ने कहा—"तो फिर क्षमा करें, सम्राट्! मैं आपकी बेटी को अपनी पत्नी बनाने का अवसर न पा सकूँगा।"
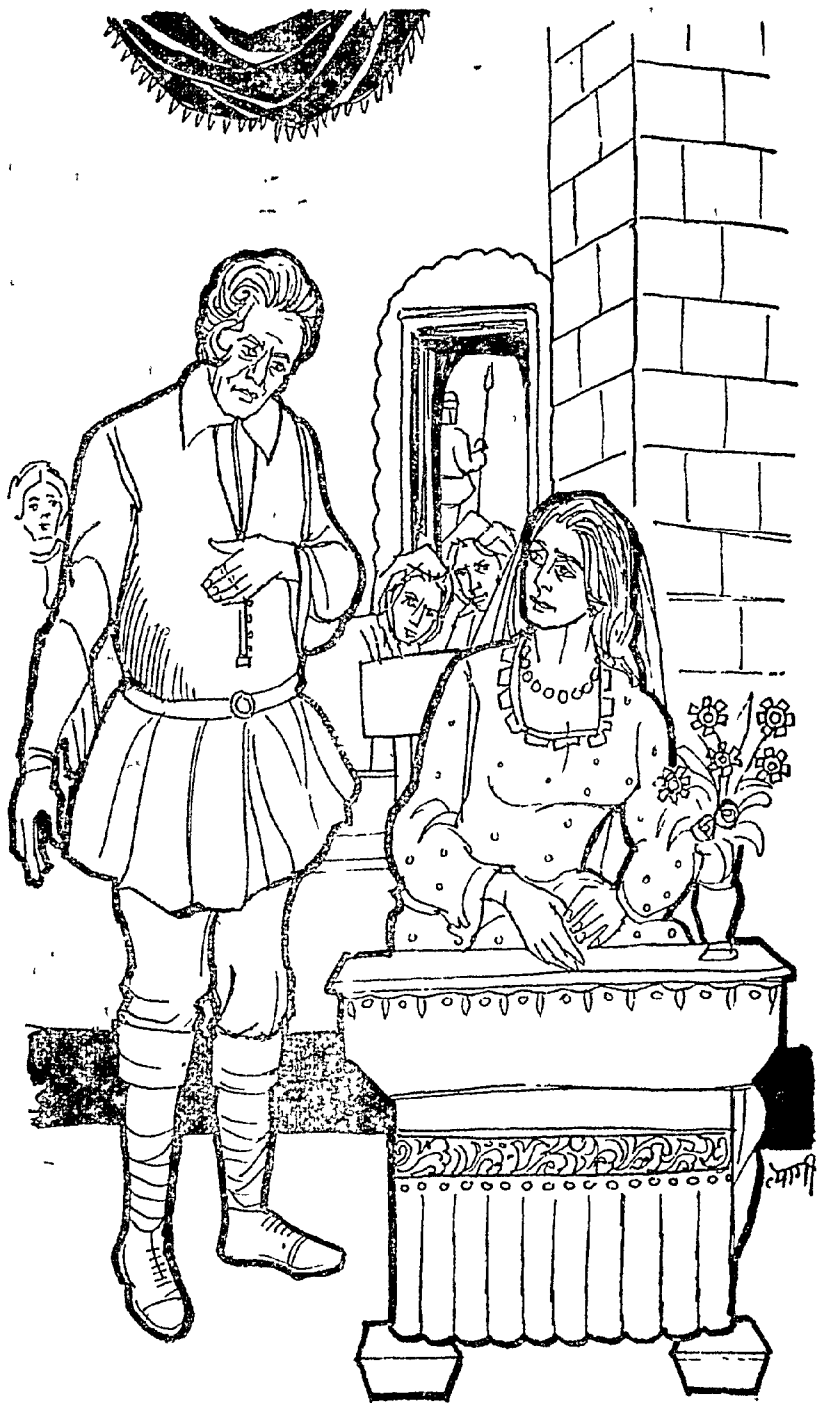
कुछ रुककर उसने कौर्डेलिया से कहा—"राजकुमारी! तुम्हें न पा सकने का मुझे खेद है, पर क्या करूँ तुम्हारा दुर्भाग्य ही इतना प्रवल है कि उसने पहले तुमको अपने पिता के प्रेम से वंचित किया, और अब मुझसे भी वंचित कर रहा है।"

आर्थर ने आगे बढ़कर कहा—"राजकुमारी! तुम अपने मन में तनिक भी दुःख न करो। यद्यपि सम्राट् ने तुम्हें त्याग दिया है, तुम्हारे पास धन भी नहीं है, बरगंडी के ड्यूक भी तुमसे किनारा कर गए हैं, फिर भी आर्थर तुम्हें अपनाने को तैयार है। तुम्हारे पास जो गुण है, वह संसार की सारी सम्पत्ति से भी बढ़कर है। तुम्हें पाकर मैं धन्य हो जाऊँगा। मुझे आश्चर्य हो रहा है ईश्वर की लीला पर कि जितना ही तुम्हारे लिए दूसरों ने घृणा प्रकट की है, उतना ही मेरे मन में तुम्हारे लिए प्रेम का भाव बढ़ता जा रहा है। लाओ अपना हाथ इधर बढ़ाओ, मैं तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करता हूँ और प्रतिज्ञा करता हूँ कि जीवनभर तुम्हें प्रसन्न रखने की चेष्टा करूँगा।"

कौर्डेलिया ने सिर उठाकर एक बार सबकी ओर देखा और अपना हाथ आर्थर की ओर बढ़ा दिया।

आर्थर ने उसका हाथ थामते हुए कहा—"प्रिय राजकुमारी! यद्यपि तुम्हें इन सब लोगों ने घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखा है, फिर भी तुम चलते समय इनसे आदरपूर्वक विदा माँगो। आज तुम्हें कदाचित् अपनी जन्मभूमि, अपने पिता का राजमहल छोड़ते हुए दुःख हो रहा होगा, लेकिन विश्वास रखो, राजकुमारी, मैं तुम्हें यहाँ से भी श्रेष्ठ स्थान पर ले चल रहा हूँ। आज से तुम आर्थर की पत्नी और फ्रांस की स्वामिनी होगी। अब संसार की कोई भी शक्ति तुमको मुझसे अलग न कर सकेगी। उठो, सम्राट् को और बहनों तथा दोनों ड्यूकों को नमस्कार करो।"

कौर्डेलिया उठकर खड़ी हो गई और पिता को सिर

हुई बोली—"पिताजी, आपकी अभागिन पुत्री कौर्डेलिया विदा माँग रही है।"

लियर ने उसकी ओर से मुँह फेरकर आर्थर से कहा—"आर्थर ! ले जाओ तुम इस मूर्ख को ! अच्छा है कि यह बला इतनी जल्दी टली जा रही है। लेकिन हमसे किसी आशीर्वाद की आशा न करो, क्योंकि हम इसे अपनी बेटी नहीं कहना चाहते। अब तुम इसे लेकर फ्रांस या जहाँ जी चाहे, जाओ।"

फिर उसने बरगंडी के ड्यूक की ओर देखकर कहा—"प्रिय मनरो ! मैं तुम पर बहुत ही प्रसन्न हूँ कि तुमने कौर्डेलिया को अस्वीकार करके एक बहुत ही बुद्धिमानी का कार्य किया है। आओ ! तुम मेरे साथ चलो।" और उठकर एक ओर को चल पड़ा। मनरो, जैक्सन, ग्लोरियस और दरबान भी उसके पीछे-पीछे चले गए। वहाँ रह गए केवल चार व्यक्ति—गोनरिल, रीगन, कौर्डेलिया और फ्रांस कुमार आर्थर।

आर्थर ने कौर्डेलिया से कहा—"राजकुमारी ! अपनी बहनों से भी विदा माँग लो।"

कौर्डेलिया ने दोनों बहनों को नमस्कार किया और कहा—"मेरी प्यारी बहनो ! चलते समय मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि तुमने जो कुछ भी पिताजी के लिए कहा है, उसे पूरा कर सको। क्या करूँ, मुझे उनकी सेवा करने का सौभाग्य नहीं मिल सका; फिर भी यदि वे तुमसे सन्तुष्ट हो सकें, तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

दोनों बहनों ने चिढ़कर कहा—"तुम जहाँ जाती हो, जाओ ! हमें उपदेश करने की चिन्ता न करो। अपना कर्तव्य हमें मालूम है।"

कौर्डेलिया ने उन्हें सिर झुकाया और आर्थर के साथ चली गई।

उन दोनों के चले जाने पर दोनों बहनों को बड़ी प्रसन्नता

हुई, क्योंकि उनकी राह का काँटा निकल गया था। अब समस्या थी केवल लियर से छुटकारा पाने की। गोनरिल ने कहा—"बहन रीगन ! मैं समझती हूँ कि पिताजी आज ही रात यहाँ से चले जाएँगे।"

रीगन ने उत्तर दिया—"लेकिन इस बार वे तुम्हारे ही मेहमान होंगे।"

"वह तो पहले ही तय कर चुके हैं कि बारी-बारी से एक-एक महीना वे दोनों के यहाँ बिताया करेंगे। लेकिन बहन ! मुझे तो उनके स्वभाव से बड़ी चिन्ता हो रही है। देखो न, बेचारी कौर्डेलिया को बिना किसी बात के ही कितना कठोर दण्ड दे दिया। उनके सनकी स्वभाव, उतावलेपन, और हठ के कारण मैं डरती रहती हूँ कि पता नहीं, वे कब कौन-सी विपत्ति खड़ी कर दें। उनकी बुद्धि बुढ़ापे के कारण मारी गई है और वे अपने को सँभाल नहीं पाते।"

रीगन बोली—"अपने इसी स्वभाव के कारण उन्होंने कैण्ट के अर्ल जैसे स्वामीभक्त को भी देशनिकाले का दण्ड दिया है।"

"वही तो मैं भी कहती हूँ कि उनका यह स्वभाव कहीं हमें संकट में न डाल दे। वे बहुत ही ज़िद्दी और चिड़चिड़े होते जा रहे हैं।"

"घबराओ न बहन ! हम लोग इसका भी कोई-न-कोई उपाय सोचेंगे।"

"और जल्दी ही; क्योंकि न जाने कब कौन-सी विपत्ति हम पर आ टूटे !"

"यही करेंगी। चलो देखें, वे क्या कर रहे हैं।" कहकर रीगन उठ खड़ी हुई।

और, 'चलो' कह गोनरिल उसे साथ लिए हुए एक ओर को चल पड़ी।

अर्ल मार्टिन एक सज्जन मनुष्य था। उसके मन में छल-कपट और लोभ जैसे दुर्गुणों के लिए स्थान नहीं था। वह बड़ा ही सच्चरित्र और राज्यभक्त व्यक्ति था। उसका आचरण बहुत ही शुद्ध और धार्मिक था। ईश्वर से वह बहुत डरता था, इस लिए कभी कोई अनुचित कार्य नहीं करता था। जीवन में उससे यही एक अनुचित काम हो गया था कि उसकी एक दासी से ऐडमंड का जन्म हुआ था। बाद में मार्टिन काफी पछताया, फिर भी उसने ऐडमंड को अपने पुत्र ऐडगर की भाँति ही पाला-पोसा और उसका सारा खर्च उठाया। यद्यपि ऐडमंड को कोई कानूनी अधिकार नहीं था, फिर भी मार्टिन ने सोच रखा था कि अपनी सारी सम्पत्ति दोनों पुत्रों में बराबर-बराबर बाँट देगा। उसका बड़ा पुत्र ऐडगर भी पिता की तरह सभ्य और सुशील था। उसे अपने सौतेले भाई ऐडमंड से कभी ईर्ष्या या विरोध नहीं हुआ। वह उसे अपने सगे छोटे भाई की भाँति ही प्यार करते हुए सोचा करता था कि यदि सम्राट् ने पिताजी के बाद मुझे अर्ल बनाना चाहा, तो मैं सिफारिश करूँगा कि 'मुझे नहीं, मेरे छोटे भाई ऐडमंड को यह पद दिया जाए।'

लेकिन, जिस प्रकार एक ही हाथ में होकर भी पाँचों उँग-लियाँ बराबर नहीं होती, उनकी लम्बाई-मोटाई और गुण में फर्क रहता है, जिस प्रकार एक ही डाल पर खिले हुए दो फूलों का एक ही प्रयोग नहीं होता; उनमें से एक देवमूर्तियों पर चढ़ता है, तो दूसरा किसी शव पर चढ़ाया जाता है, ठीक उसी प्रकार मार्टिन के पुत्र होकर भी ऐडमंड और ऐडगर के स्वभाव में

धरती-आकाश का अन्तर था। ऐडगर जितना ही सदाचारी और दयालु था, ऐडमंड उतना ही भ्रष्ट और कठोर था। उसका हृदय बड़ा ही कुटिल और कलुषित था। उसमें लोभ इतना अधिक था कि वह मार्टिन से भी मन-ही-मन द्वेष रखता था।

बर्लिन आकर ऐडमंड कुछ दिन तो शांतिपूर्वक रहा; किंतु धीरे-धीरे उसका दुष्ट स्वभाव जागने लगा। अपने पिता मार्टिन और ऐडगर की प्रतिष्ठा देखकर उसके मन में ईर्ष्या जाग उठी। उसे ऐसा जान पड़ा कि दासी-पुत्र होने के कारण लोग मेरा आदर न करेंगे और पिता की सारी रियासत ऐडगर को ही मिल जाएगी। इस विचार के उठते ही उसका चित्त चंचल हो गया। वह सोचने लगा कि, मुझे कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिससे ऐडगर मेरी राह से निकल जाए और अपने पिता का मैं ही एकमात्र उत्तराधिकारी बन सकूँ। काफी सोच-विचार के बाद उसने एक षड्यन्त्र रचने का निश्चय किया। उसका विश्वास था कि इसके सफल होते ही भाई और पिता दोनों सदा के लिए उसकी राह से हट जाएँगे।

अर्ल मार्टिन एक दिन ग्लौसेस्टर वाले अपने महल के पुस्त-कालय में बैठा कुछ पढ़ रहा था। एकाएक उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि कैण्ट के अर्ल थॉमस का क्या हुआ? वे कहाँ गए? इस विचार से वह कमरे के बाहर निकला ही था कि सामने ऐडमंड दिखाई पड़ा। ऐडमंड उसे देखते ही घबरा उठा और अपने हाथ के कागज़ को छिपाने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन मार्टिन ने उसे देख लिया था। उसने कहा—"क्या है, ऐडमंड! वह कागज़ क्यों छिपा रहे हो?"

ऐडमंड ने कागज को जेब में रखते हुए कहा—"कुछ नहीं, पिताजी! उसे आप जाने दीजिए।"

"क्यों, उसमें ऐसी क्या बात है, जिससे तुम घबरा रहे हो?"

"कुछ नहीं, पिताजी ! वह पत्र शायद जाली है।"

"तो फिर डरने की क्या बात है ?"

"यही कि अगर कहीं वह सत्य हुआ तो मेरे भाई ऐडगर भारी विपत्ति में पड़ जाएँगे।"

"क्यों, ऐडगर से उसका क्या सम्बन्ध ? लाओ पत्र मुझे दो।"

"नहीं, पिताजी, आप उसे न देखिए। यह अवश्य हमारे किसी शत्रु का रचा हुआ षड्यंत्र है। ऐडगर भाई ऐसे नहीं हैं, पिताजी !"

"लाओ, वह पत्र मैं देखूँ तो !" मार्टिन ने ज़ोर देकर कहा।

चेहरे पर बहुत ही घबराहट और उदासी का भाव लाकर ऐडमंड ने पत्र दे दिया। मार्टिन ने उसे पढ़ना शुरू किया। ज्यों-ज्यों वह आगे पढ़ता, उसकी आँखें क्रोध से जलती जा रही थीं और चेहरा तमतमाता हुआ भयानक होता जा रहा था। पत्र में लिखा था—

"प्यारे भाई ऐडमंड !

जितनी जल्दी हो सके, समय निकालकर मुझसे भेंट करो, ताकि मैं तुमसे कुछ गुप्त बातें कर सकूँ। बात यह है कि इन बूढ़े माँ-बापों को अपने पुत्रों की राह का रोड़ा न बनना चाहिए। और, तुम देखते ही हो कि हमारे पिता ग्लौसेस्टर के अर्ल होकर भी कितने मूर्ख हैं ! वे रियासत से मिठाई की चींटी जैसे चिपके हुए हैं। इसका अर्थ यह है कि वे हमें-तुम्हें राज-सुख भोगने नहीं देना चाहते। इसलिए प्यारे ऐडमंड ! तुरन्त ही मुझसे मिलो ताकि हम दोनों इस काँटे को तोड़ने का कोई उपाय कर सकें। अगर इस बुड्ढे की आँखें किसी तरह सदा के लिए बन्द हो जाएँ, तो बस हमारी चाँदी होगी। आधी रियासत तुम्हारी और आधी मेरी। 'अर्ल' का पद भी सम्राट् से तुम्हीं को दिला दूँगा।"

तुम्हारा भाई—'ऐडगर।'
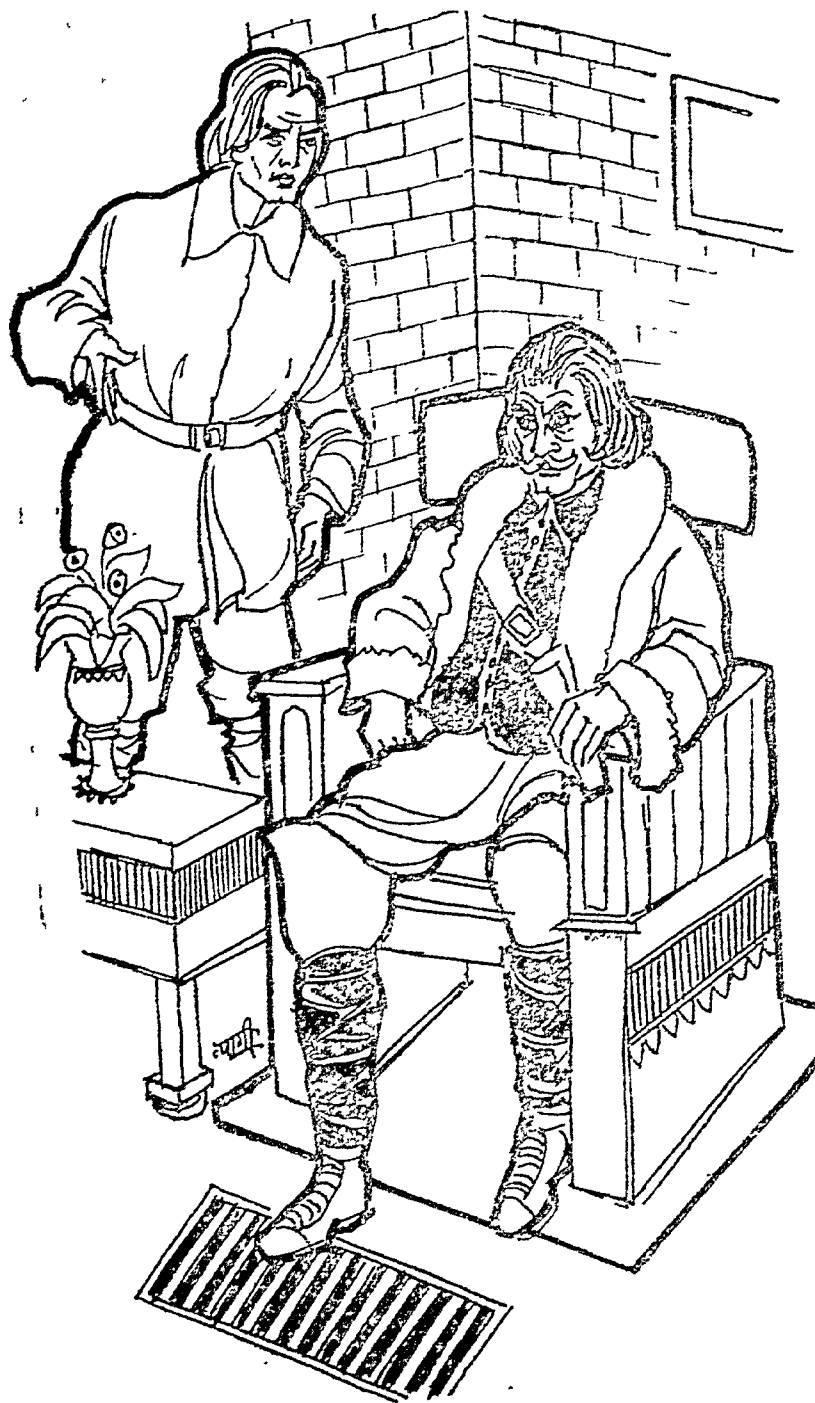
पत्र समाप्त होने तक दुःख और क्रोध से मार्टिन बुरी तरह चिढ़ उठा था। उसने तड़पकर कहा—"यह कुचक्र! यह षड्-यन्त्र! मेरी आँखें सदा के लिए बन्द करके आधी जायदाद पाने का उपाय सोचा जा रहा है! उफ़! ओ भगवान्! क्या सचमुच यह मेरे उसी पुत्र ऐडगर के विचार हैं, जिसको मैं प्राणों से भी अधिक प्यार करता हूँ? लेकिन ऐसे घृणित विचार उसके मन में उठे कैसे? ओह, यह तो मेरा पुत्र नहीं, आस्तीन का साँप मालूम पड़ता है। ऐडमंड, यह पत्र तुम्हें कैसे मिला? कौन लाया था इसे?"

"इसे भेजने में बड़ी चालाकी की गई है, पिताजी! इसे किसी ने मेरे कमरे में रात को फेंका है।"

"क्या तुम ऐडगर के अक्षर पहचानते हो?"

ऐडमंड चुप रहा।

"मैं कहता हूँ, सच-सच बताओ—क्या ये अक्षर ऐडगर के हैं?"

"क्षमा कीजिए पिताजी! अक्षर तो अवश्य ही भाई के हैं, पर यह विचार उसके नहीं हैं। वह तो बड़ा साधु मनुष्य है।"

"नहीं, यह अवश्य उसी के विचार हैं। न होते, तो लिखता कैसे? अच्छा, यह बताओ क्या उसने कभी तुमसे ऐसा कहा भी था?"

"ऐसा तो नही, लेकिन यह कहा करते थे कि हर एक पिता को चाहिए कि पुत्र के सयाना होने पर उसे घर के सारे अधिकार सौंपकर स्वयं अलग हो जाए!"

"बस, पकड़ा गया वह बदमाश ऐडगर। उसकी यही बात तो इस पत्र में तुमको लिखी गई है। सचमुच वह एक भयंकर साँप है। ऐडमंड! अभी तक मैं उसको तुमसे कुछ श्रेष्ठ समझता था, पर आज मालूम हुआ कि मैं धोखे में था। वह

मनुष्य के रूप में एक राक्षस है—भयानक राक्षस, पितृघाती राक्षस !"

ऐडमंड चुप रहा।

"देखो, ऐडमंड ! तुम उस नीच को जहाँ भी मिले, पकड़कर ले आओ। उसके ज़हरीले दाँत तोड़ देना ही ठीक रहेगा। वह अब इतना भयंकर हो उठा है कि खुला रहने के योग्य नहीं है। उसके हाथ-पैर तोड़कर किसी कालकोठरी में कैद कर देना ही अच्छा रहेगा। कहाँ होगा वह पाजी इस समय ?"

"पिताजी ! यह तो मैं नहीं जानता। फिर भी मैं प्रार्थना करता हूँ कि जल्दी में कोई काम करना ठीक नहीं होता। संभव है कि इस पत्र के पीछे कोई चाल हो। इसलिए पहले मैं पता लगा लूँ, तब आपको बताऊँगा। मैं ऐसा उपाय करूँगा कि आप छिपकर हम दोनों की बातें सुन सकें, ताकि आपको उसका वास्तविक भेद मालूम हो जाए।"

"खैर, तुम कहते हो, तो इसे भी मान लेता हूँ, वरना मेरा विश्वास उस पर से उठ गया है। यह समय ही कुछ ऐसा आ गया है जिसके प्रभाव से चारों ओर विद्रोह और अविश्वास फैलता जा रहा है।"

"कैसा समय, पिताजी ? ऐडमंड ने आश्चर्य से पूछा।"

"क्या तुम्हे नहीं मालूम कि वर्ष समाप्त होने के समय आ पड़ने वाले ये सूर्य और चन्द्र-ग्रहण संसार के लिए कितने संकटकारी हैं। इनके प्रभाव से चारों ओर विश्वासघात, शत्रुता, उपद्रव, बीमारी और युद्ध फैल जाते हैं। देखो न, ब्रिटेन के सबसे बड़े राज्यभक्त कैण्ट के अर्ल थॉमस को देशनिकाले का दण्ड दिया गया है। सम्राट् लियर की बुद्धि मन्द होती जा रही है। बेचारी कौर्डेलिया अनाथ जैसी, फ्रांस कुमार के साथ भेज दी गई है। मेरा सज्जन कहा जाने वाला पुत्र ऐडगर आज

फिर किसी घर में ही छिप रहो। कभी निकलना हो, तो अकेले में छिपकर निकलो और उस हालत में भी तुम्हारे हाथ में तलवार या कोई-न-कोई हथियार जरूर रहना चाहिए।"

"इतना बड़ा खतरा मेरे सिर पर आ गया ?"

"हाँ, भाई ! इसी से तो कहता हूँ, आप तुरन्त यहाँ से चले जाइए !"

"लेकिन क्या तुम आगे के समाचार मुझे बताते रहोगे ?"

"मैं पूरी तरह से आपकी सहायता करूँगा, भाई ! आप मेरे बड़े भाई हैं। आपकी सेवा में मुझे अपने प्राण भी देने पड़ें, तो कोई चिन्ता नहीं। मैं जानता हूँ कि आप एक धर्मात्मा व्यक्ति हैं। पिताजी को, सम्भव है आपकी ओर से भ्रम हो गया हो। इसलिए मैं भरसक उन्हें समझाने का प्रयत्न करूंगा। लेकिन अगर इस पर भी वे शान्त न हुए, तो मैं आपके लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाऊंगा, चाहे मुझे पिताजी का विरोध ही क्यों न करना पड़े !"

निश्छल हृदय ऐडगर इस कपट-लीला को समझ न सका। ऐडमंड की धूर्तता को उसने भ्रातृ-प्रेम समझा और आगे बढ़कर उसे छाती से लगाता हुआ बोला—"प्यारे ऐडमंड! दुर्भाग्य की चोट से बचने के लिए मैं जाकर कहीं छिप रहूँगा; लेकिन तुम मुझसे मिलकर आगे के समाचार देते रहना !"

दोनों भाई गले मिले, और दूसरे ही क्षण ऐडगर एक ओर को निकल गया। उसके जाने के बाद ऐडमंड ठठाकर हँस पड़ा और अपने आप से कहा—"ऐडमंड ! ओ दासीपुत्र ऐडमंड ! थोड़े दिन और धीरज रख ! यदि तेरा यह षड्यन्त्र सफल हो गया, तो ब्रिटेन के दरबार मे तू ही तू दिखाई पड़ेगा। तू अर्ल बनेगा, ड्यूक बनेगा और शायद सम्राट् भी बन जाए ! अहा, हा !"

७

राजा लियर की उदारता, वीरता और न्यायप्रियता जैसे गुण जहाँ एक ओर उसे ऊँचा उठाते थे, वहो उसका हठीला स्वभाव कभी-कभी उसके हाथों अन्याय भी करा देता था। इन दिनों ज्यों-ज्यों वह बूढ़ा होता जाता, उसकी सनक, जिद और उतावलापन भी बढ़ता जा रहा था। अपने आगे वह किसी की न सुनता था। हर बात में उसका यही अहंकार प्रबल हो उठता था—मैं वही लियर हूँ, जिसका नाम सारे यूरोप में प्रसिद्ध है।

राज्य का बँटवारा करने के बाद, जैसा कि उसने निश्चय किया था, अपने साथ चुने हुए एक सौ सरदारों को लेकर वह पहले बड़ी लड़की गोनरिल का अतिथि बना। उसका विचार था कि एक महीना यहाँ रहूँगा, फिर एक महीना रीगन के यहाँ कौर्नवाल में बिताऊँगा। लेकिन, गोनरिल को पिता के प्रति सच्ची भक्ति नहीं थी; वह तो केवल राज्य पाने के लिए ही वैसी मीठी बातें कर रही थी। राज्य मिल जाने पर उसने सोचा—अब इस बवाल को कौन पाले ? वह यह भी जानती थी कि पिता काफ़ी बूढ़े हो चले हैं, इसलिए मेरे किसी काम का विरोध भी न कर सकेंगे। उसने अपने नौकरों को—जिनमें ओसवाल्ड प्रमुख था—समझा दिया था कि वे सम्राट् की सेवा में अधिक समय न लगाएँ और न उनकी किसी बात की परवाह करें। उसका अनुमान था कि इस प्रकार के दुर्व्यवहार से ऊबकर पिताजी स्वयं ही चले जाएँगे।

ओसवाल्ड गोनरिल के सेवकों का सरदार था। उसने

स्वामिनी की आज्ञा सभी नौकरों को समझा दी और वे सब उसी प्रकार का व्यवहार लियर तथा उसके सरदारों के साथ करने लगे। लियर को यह पता न चल सका था कि मेरी बेटी ही ऐसी अवज्ञा करने के लिए इन नौकरों को उत्साहित कर रही है। उसने दो-एक बार देखा कि यहाँ के नौकर आज्ञा-पालन में बड़े ढीले हैं, लेकिन यह सोचकर कि शायद इनकी आदत ही ऐसी है, वह चुप रह गया। पर ऐसा तो था नहीं, अल्बैनी-महल के सभी नौकर-चाकर सिखाए-पढ़ाए हुए थे। वे जान-बूझकर लियर और उसके सरदारों की छोटी-से-छोटी बात तक को टालते रहते थे। यदि कभी लियर कहता कि अंगीठी जला जाओ, तो वे उसे भी सुनी-अनसुनी कर जाते या कह देते—'अभी हम दूसरा काम कर रहे हैं श्रीमन्त! थोड़ी देर ठहर जाइए!' लेकिन वह 'थोड़ी देर' कभी समाप्त न होती और लियर को अंगीठी की प्रतीक्षा में दिनभर बैठे रह जाना पड़ता था।

आए दिन अल्बैनी के नौकरों का ऐसा आचरण देखकर लियर कभी-कभी क्रोधित हो उठता था; पर उसका एक सेवक, जो बहुत ही मुँहलगा था, ऐसे अवसरों पर उसे समझा-बुझाकर शान्त कर दिया करता था। उसका नाम था 'हण्टर'। वह एक विदूषक था। बुद्धिमान होकर भी वह अपने मूर्खों जैसे व्यवहार से लियर का मनोविनोद किया करता था। लियर उसकी किसी भी बात का बुरा नहीं मानता था, क्योंकि विदूषकों को इस बात की छूट रहती है कि वे जिसे चाहें—अपने स्वामी को भी—और जो कुछ चाहें, कह सकते हैं, और जसा चाहें, वैसा व्यवहार उसके साथ कर सकते हैं। लेकिन विदूषक लोग कभी अपने स्वामी के साथ विश्वासघात नहीं करते। वे ऊपर से उल्टा-सीधा कुछ भी कहें-करें, पर भीतर से वे सदैव अपने स्वामी के सच्चे सहायक और सेवक होते हैं। समय पड़ने पर वे

उसके लिए अपने प्राण तक दे देते हैं। हण्टर भी एक ऐसा ही स्वामीभक्त विदूषक था। यों, वह लियर को सैकड़ों गालियाँ देता रहता था, पर किसी की मजाल न थी कि उसके रहते कोई लियर का वाल भी वाँका कर सकता। मूर्ख और पागल के वेश में रहकर भी हण्टर एक वहुत ही वुद्धिमान और वीर सेवक था।

एक दिन लियर अल्वैनी-महल की अतिथिशाला के वरामदे में वैठा दोपहर के भोजन की प्रतीक्षा कर रहा था। उसी समय सामने से उसका निजी सेवक जॉन जाता हुआ दिखाई पड़ा। उसने पुकारा—"जॉन!"

"हाँ, महाराज!" जॉन सामने आकर खड़ा हो गया।

"जाओ, गोनरिल से कहो कि फौरन हम लोगों के लिए भोजन का प्रवन्ध करे। इतनी देर तक क्या होता रहा वहाँ, जो कोई वुलाने नहीं आया?"

"अभी जाता हूँ, महाराज!" कहकर जॉन एक ओर को चला गया और लियर अपने सरदारों की प्रतीक्षा करने लगा, जो उसके साथ भोजन में सम्मिलित होते थे।

ठीक इसी समय फटे-पुराने कपड़े पहने हुए एक पागल जैसे व्यक्ति ने वहाँ प्रवेश किया। लियर ने इससे पहले उसे कभी न देखा था। कुछ अचरज के साथ उसने पूछा—"कौन हो तुम?"

"मैं भी एक मनुष्य हूँ, श्रीमन्!" उस पागल ने उत्तर दिया।

"क्या काम करते हो?"

"मैं सेवा करता हूँ श्रीमन्! लेकिन उसी की, जो मुझ पर विश्वास करता है। मैं केवल वुद्धिमान और गम्भीर स्वभाव वालों से ही वात करता हूँ। लड़ाई से वहुत डरता हूँ, लेकिन जव छुटकारे का कोई उपाय नहीं रह जाता, तव निर्भय हो— लड़ता भी हूँ।"

"लेकिन तुम कौन हो और कहाँ से आए हो ? यहाँ क्या चाहते हो ?"

"मैं भी एक मनुष्य हूँ अर्थात् पहले का एक ऊँचे पद का अधिकारी हूँ, लेकिन अपना महल छोड़कर चला आया हूँ, जैसे श्रीमान् चले आए हैं। यहाँ आकर आपकी सेवा करना चाहता हूँ।"

"क्या तुम मुझे पहचानते हो ?"

"पहचानता तो नहीं हूँ, फिर भी आपका चेहरा देखकर मैं यह समझ गया हूँ कि आप मेरे स्वामी होने योग्य हैं।"

"तो तुम कौन-सा काम करोगे ?"

"मैं आपको अच्छी सलाह दूँगा। आपका भेद गुप्त रखूँगा। आपकी रक्षा के लिए किसी से भी लड़ सकता हूँ। काम पड़ जाय तो मैं वह सब कुछ करूँगा, जो एक मनुष्य कर सकता है।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मैंने अपना नाम 'टाइगर' रख लिया है, श्रीमन्।"

"टाइगर ? वाह-वाह ! यह तो बड़ा रौबीला नाम है—शिकारी जैसा। मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ। आज से तुम यहाँ रहो और अपने को ब्रिटेन के सम्राट् लियर का सेवक समझो।"

"बहुत अच्छा, श्रीमन् !" कहकर टाइगर नामक उस पागल ने लियर के सामने सिर झुकाया।

इसी समय गोनरिल का प्रधान सेवक ओसवाल्ड जाता दिखाई पड़ा। लियर ने पुकारा—"ए ! ए ! ओ सेवक···हमारी बेटी क्या कर रही है ?"

ओसवाल्ड ने बिना उसकी ओर देखे ही कहा—"अभी मेरे पास समय नहीं है, लौटकर बताऊँगा।" और आगे बढ़ गया।

लियर इस अवज्ञा से भभक उठा। ठीक इसी समय जॉन ने आकर बताया—"महाराज ! भोजन में अभी एक घंटे की देरी है।"

"एक घण्टा ! आखिर क्या होता रहा अभी तक ?" लियर ने पूछा।

जॉन के साथ एक और सरदार आया था। उसने कहा—"महाराज ! क्षमा करें। मुझे ऐसा लगता है कि यहाँ आपका अनादर हो रहा है। जान-बूझकर आपकी आज्ञा टाली जाती है। राजकुमारी का हृदय कठोर होता जा रहा है और उनके सेवक तो हम लोगों को सदैव ही दुतकारते रहते हैं।"

"क्यों जॉन ! क्या तुम्हें भी ऐसा मालूम होता है ?" लियर ने जॉन से पूछा।

"हाँ, महाराज ! बात तो ऐसी ही है।" जॉन बोला।

"मुझे भी कुछ सन्देह हुआ था, लेकिन यह सोचकर कि कदाचित् ये लोग किसी परेशानी में होंगे, मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया था। अब समझता हूँ कि हो न हो, यह सब जान-बूझकर किया जा रहा है।"

"यही बात है, महाराज !" सरदार ने कहा।

तभी ओसवाल्ड लौटा। लियर ने उसे पुकारा—"ए ! इधर आओ !"

"अभी फुरसत नहीं है।" कहकर ओसवाल्ड आगे बढ़ गया।

अब लियर सहन न कर सका। उसकी आँखों से चिन्गारियाँ निकल पड़ीं। गरजकर टाइगर से कहा—"टाइगर ! उस कुत्ते को पकड़ तो लाओ ! बदमाश कहीं का ! लुच्चा !"

टाइगर झपटा और तुरन्त ही ओसवाल्ड को घसीट लाया। लियर के आगे उसे पटकते हुए पीठ पर एक ठोकर मारकर उसने पूछा—"क्यों बे सेवक के बच्चे ! सम्राट् लियर की बात का उत्तर देने के लिए भी तुझे फुरसत नहीं है ? क्या करने जा रहा था ? तेरा क्या नाम है ? बोल जल्दी।"

ओसवाल्ड चिल्लाया—"अरे ड्यूक ! कोई दौड़ो, बचाओ मुझे ! हाय ! अरे कोई है यहाँ ?"

"क्यों बे, अंधा है ? देखता नहीं, मैं तेरे लिये यमराज का परवाना लिए सामने खड़ा हूँ ! बोल, तेरा क्या नाम है ?" टाइगर ने और दो ठोकरें मारते हुए पूछा।

ओसवाल्ड की अकड़ ढीली हो गई। घिघियाकर बोला—"मेरा नाम ओसवाल्ड है। मैं श्रीमती गोनरिल का सेवक हूँ।"

टाइगर ने उसे धरती से तीन फुट ऊँचा उठाकर फिर एक पटकान दी और कहा—"ओसवाल्ड के बच्चे ! क्या तूने सम्राट् लियर के सेवक टाइगर का नाम नहीं सुना ? जा, भाग जा यहाँ से ! अगर ऐसी हरकत फिर कभी की, तो खाल उधेड़ दूँगा !"

ओसवाल्ड कराहता-चिल्लाता एक ओर को भाग गया। जॉन और दूसरे सरदार सन्नाटे में आ गए थे; लेकिन टाइगर की वीरता और स्वामीभक्ति देखकर लियर प्रसन्न हो उठा। उसका क्रोध दूर हो गया और उसने टाइगर की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"तुम आज से मेरे सेवक ही नहीं, मित्र भी हो गए। मैं तुम्हें सदैव अपने साथ रखूँगा।"

टाइगर ने सिर झुकाकर कहा—"आपकी जय हो !"

ठीक उसी समय हण्टर—वही लियर का विदूषक—आया। उसने टाइगर को देखकर कहा—"वाह-वाह ! एक और मूर्ख आज हमारी मंडली में शामिल हो गया। अब हम सब मिलकर इस महामूर्ख लियर को अपना राजा बनाएँगे—मूर्खराज लियर ! क्यों चाचा लियर, ठीक है न ? मुँह क्यों फूला है तुम्हारा ? गोनरिल ने टुकड़ा दिया कि नहीं। अरे ओ टुकड़ों के मुहताज लियर ! बोलो न !"

"देखो हण्टर ! ज़बान सँभालकर बात करो !" लियर ने कहा। गोनरिल के टुकड़ों को सुनकर वह क्रुद्ध हो उठा था।

हण्टर बोला—"अरे मूर्ख ! इतना ध्यान था अपने सम्राट्पन का, तो अल्बैनी क्यों आए थे ? ब्रिटेन का राज्य इधर-उधर बाँटकर अब दूसरों के आगे दाने-दाने के लिए हाथ पसारते हो, फिर भी कहते हो म सम्राट् हूँ ! आज लियर से बड़ा मूर्ख कौन होगा ?"

"एक तो तू ही है रे !" लियर ने झल्लाकर कहा।

"ज़्यादा मत बोलो चाचा, नहीं तो भूख बढ़ जाएगी। अभी शाम तक तुम्हें दाना-पानी न मिलेगा, यह मैं कहे देता हूँ।" हण्टर ने उससे कहा, फिर टाइगर से बोला—"कहो धूर्त ! तुम किस चक्कर में हो ? कोई जासूस तो नहीं हो ?"

टाइगर बोला—"सुनो मूर्ख ! मैं भी आज से सम्राट् का सेवक हुआ हूँ। मुझे तुम अपना मित्र समझो और जो काम तुम से न हो सके, वह मुझे बताना, उसे मैं करूँगा।"

"वाह-वाह ! इस तरह के दो-चार नमकहलाल उल्लू के पट्ठे अगर लियर के पास होते, तो आज यह क्यों भूखों बैठकर झख मारता। खैर, अब हम-तुम एक से दो हो गए। आओ !" कहकर हण्टर ने टाइगर से हाथ मिलाया और दोनों मस्त होकर गा उठे—

"कौन हमको सकता ललकार ?
हमारे हाथों में तलवार।"

ओसवाल्ड की असभ्यता, भोजन की तैयारी में देरी, बेटी का उपेक्षापूर्ण व्यवहार और अपनी तथा सरदारों की परेशानी पर लियर एक तो वैसे ही क्रुद्ध था, उस बेमौके की रागिनी को सुनकर वह और भी जल उठा। तड़पकर बोला—"ओ बेवकूफ हण्टर ! यह रेंकना बन्द कर ! मैं नहीं सुनना चाहता।"

हण्टर ने टाइगर की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"दोस्त ! तुमने देखा न इस लियर की मूर्खता को ! इसे हण्टर[1]

---

१. हण्टर का अर्थ चाबुक और शिकारी भी होता है।

और टाइगर[1] दोनों ही गधे दिखाई पड़ते हैं ! खैर, आओ अब हम चुप हो जाएँ ।"

दोनों ही चुप होकर दुबक रहे । सन्नाटा छा गया । कोई भी न बोल रहा था । सबकी आँखें लियर की ओर लगी हुई थीं और वह क्रोध से भरा हुआ फुफकार जैसी लम्बी साँसें छोड़ रहा था ।

इतने में एक दूसरा सरदार आया । वह बहुत ही उदास था । उसने आकर चुपचाप लियर के सामने सिर झुकाया और एक ओर खड़ा हो गया । लियर ने उससे पूछा—"क्यों ! क्या बात है ?"

"महाराज ! यहाँ रहना कठिन हो जाएगा ।"

"क्यों ?" लियर जैसे चिल्ला उठा ।

"आपके साथ हम सौ सरदार आए थे । अभी पंद्रह दिन भी नहीं बीते हैं और आज राजकुमारी ने उनमें से पचास सरदारों को निकाल दिया है । वे कहती हैं कि हम इस भीड़ को अपने महल में नहीं रहने देंगी ।"

"क्या कहा ? गोनरिल ने हमारे आधे आदमियों को निकाल दिया ? ज़रा कोई बुलाओ तो उसे ! गोनरिल !"

और ठीक अपने नाम की पुकार के साथ ही गोनरिल वहाँ आ पहुँची । उसने आते ही तमककर कहा—"पिताजी ! आप रहें, तब तो कोई बात नहीं; लेकिन आपके ये सरदार तो मेरी प्रजा को सताते हैं, लूट-मार करते हैं । इनके कारण मेरी बदनामी हो रही है । मैं इन्हें यहाँ न रहने दूँगी । आप इनको कहीं और भेज दीजिए ।"

"मेरे सरदार तो बहुत ही शांत स्वभाव के हैं, बेटी !" लियर बोला ।

"शान्त नहीं, ये सब लुच्चे हैं ! मैं इन्हें यहाँ हरगिज़ नहीं

१. शेर की जाति का एक हिंसक पशु—चीता ।

रहने दे सकती, पिताजी !"

"लेकिन यह तो मैंने पहले ही बता दिया था कि मेरे साथ सौ सरदार रहेंगे। और तुमने इसे मान भी लिया था।"

"सरदार हों तव न ! ये तो सव के सव शैतान हैं !"

"और सव शैतानों का वाप यही बुड्ढा लियर है, जिसने दूसरों के टुकड़ों के लिए अपनी अकल वेच डाली है।" वीच में ही विदूषक हण्टर बोल पड़ा।

उसे डाँटते हुए लियर ने कहा—"चुप रह वदतमीज़ कहीं का!" फिर गोनरिल से बोला—"लेकिन मेरे पचास सेवकों को निकालने वाली तुम कौन हो ? वे तो मेरे साथ हैं। उनकी शिकायत मुझसे करनी थी। मैं देखता हूँ कि तुम्हारा व्यवहार हमारे साथ अच्छा नही है।"

गोनरिल ने विना किसी संकोच के कहा –"देखिए, पिताजी! आप बुड्ढे हो गए हैं। अव यह वच्चों का हठ छोड़िए। अगर आपको यहाँ रहना है, तो जिस तरह मैं कहूँ, वैसे रहिए। हर वात में क्रोध और डाँट-फटकार ठीक नहीं है। आपके साथ सौ सेवकों की कोई ज़रूरत ही नहीं रह गई। आपको सिर्फ एक आदमी चाहिए, जो पानी वगैरह दे सके, वस। इतनी वड़ी फौज का भार तो मैं नहीं उठा सकती।"

लियर की आँखें खुली की खुली रह गई। चोट खाए हुए सिंह की भाँति वह तड़प उठा – "अरी गोनरिल! क्या यही तेरा असली रूप है ? यही प्रेम करने के लिए तूने लम्वी-चौड़ी वातें की थीं ? हाय ! मैं कैसा मूर्ख हूँ कि उस समय वेटी कौर्डेलिया की वातों पर ध्यान न दिया ! उसके साथ जो अन्याय हुआ है, उसी का फल मुझे भुगतना पड़ रहा है। ओ गोनरिल ! मेरा सारा राज्य लेकर अव तू मुझे इस तरह दुत्कारती है। जिस राज्य के पीछे मैं हज़ारों आदमियों को भोजन देता था, उसी को पाकर अव तू मेरे सौ आदमियों को भी नहीं खिला सकती ?

तू मेरी बेटी नहीं, डायन है डायन ! आह बेचारी कौर्डेलिया ! लेकिन नहीं, अभी मेरी एक बेटी रीगन भी तो है। वह तेरी तरह कृतघ्न और नागिन न होगी। मैं उससे मिलकर तेरी दुष्टता का हाल बताऊँगा, तब देखना, वह किस तरह तेरा मुँह नोंचती है। उफ़ !" इस समय वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि मारे क्रोध और दुःख के अपना सिर पीटने लगा।

इसी समय अल्बैनी ड्यूक जैक्सन ने वहाँ प्रवेश किया। उसने यह दृश्य देखा तो घबरा गया। लपककर लियर का हाथ पकड़ते हुए बोला—"अरे! आप यह क्या कर रहे हैं, पिताजी!"

लियर वैसे ही बड़बड़ाता रहा—"छोड़ दो मेरा हाथ। मैं कहता हूँ मुझे मत पकड़ो। ओ अभागे लियर ! अपना सिर फोड़ ले, जिसमें ऐसी दुर्बुद्धि पैठ गई है। इतना बड़ा सम्राट् होकर भी आज तू रोटी का मुहताज हो गया है ! अपनी करनी का फल भोगने के लिए दीवार से सिर टकरा ले !"

जैक्सन ने उसे किसी तरह सँभाला और पूछा—"मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम श्रीमन्त ! आखिर बताइए तो, आपको क्या कष्ट है ?"

उन्मत्तों की भाँति चिल्लाकर लियर ने कहा—"कष्ट ! अल्बैनी में भला कष्ट हो सकता है ? मुझे बड़ा सुख है यहाँ ! लेकिन मैं चाहता हूँ कि ओ देवताओ ! ओ जुपिटर ! ओ मेरे इष्टदेव अपोलो ! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो—गोनरिल को कभी कोई सन्तान न देना। यह पापिन वंध्या रहे, तभी ठीक है और अगर सन्तान देनी ही हो, तो ऐसी देना जो इससे भी बढ़कर दुष्ट, नीच, पापी और क्रूर हो, जो जीवनभर इसके हृदय को जलाती रहे। जो दुःख इसने मुझे दिया है, उसका सौगुना इसको मिले। ओ अपोलो देवता ! ओ जुपिटर ! सुन रहे हो न ?"

जैक्सन स्वतः एक शांतिवादी और सदाचारी ड्यूक था।
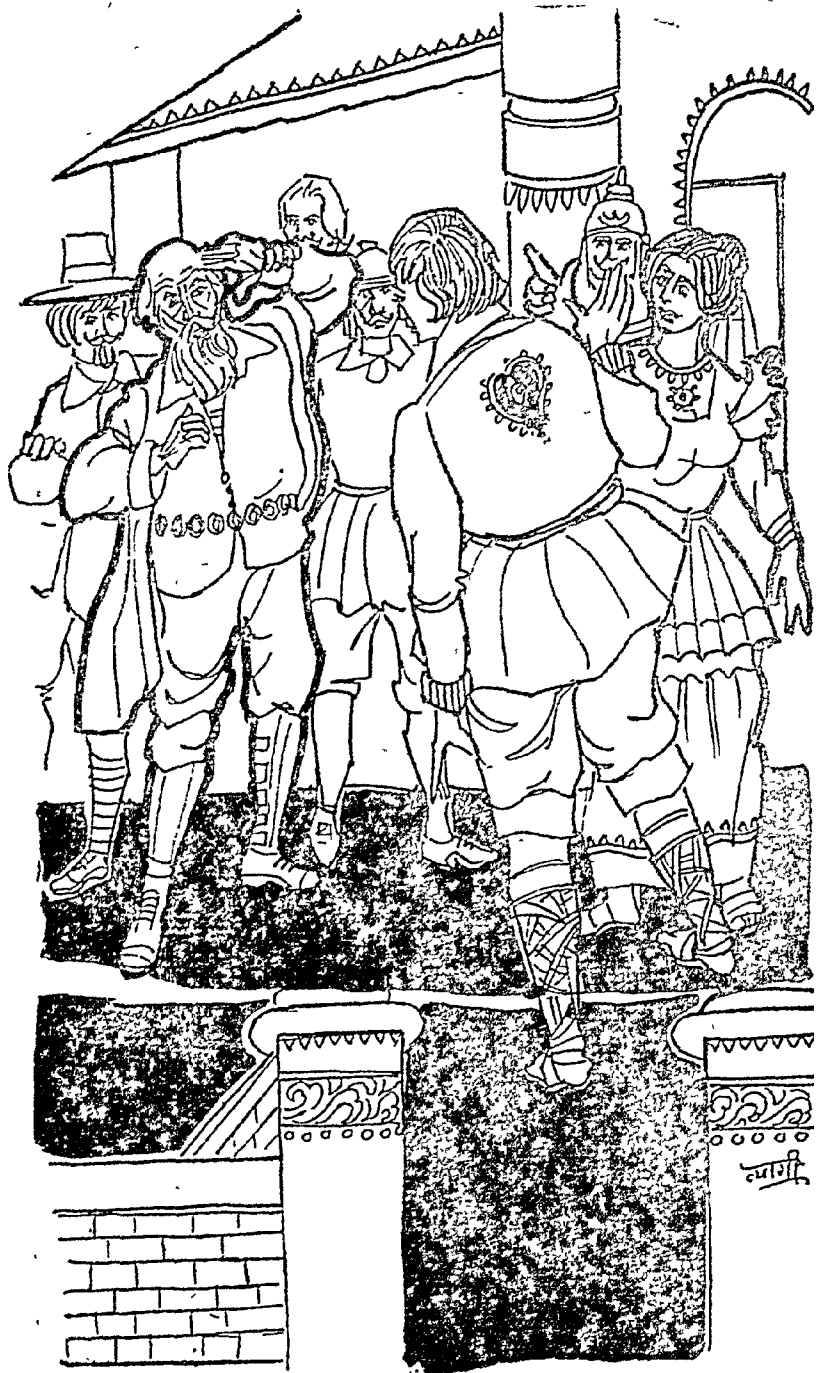
उसे गोनरिल के व्यवहार की पूर्ण जानकारी न थी। वह उसके षड्यन्त्रों और दुष्कृत्यों से परिचित नहीं था। घबराकर उसने पूछा—"गोनरिल ! क्या तुमने पिताजी को कुछ कहा है ?"

गोनरिल ने तमककर उत्तर दिया—"मैंने कुछ नहीं कहा, ड्यूक ! इनकी बुद्धि मारी गई है। बिना किसी प्रयोजन के ही यह ऐसा शोरगुल मचा रहे हैं। आप चिन्ता न करिए। मैं अभी इन्हें ठीक कर दूँगी, आप थोड़ा धीरज रखिए।"

लियर फिर तड़पा—"अरी राक्षसी ! तू मुझे ठीक करेगी ? जॉन! टाइगर! ओ हण्टर ! तुम खड़े क्या देख रहे हो ? इतना अपमान सहकर भी क्या यहाँ रहोगे ? चलो, हमारे घोड़े तैयार कराओ, हम अभी यहाँ से चल दगे। लियर ने चाहे अपना सारा राज्य दान कर दिया है, फिर भी वह भूखों नहीं मरेगा। आज भी उसकी भुजाओं में बल है। वह दूसरा राज्य स्थापित करेगा। चलो।" और वह उठकर खड़ा हो गया।

जैक्सन ने उसे रोकते हुए प्रार्थना की—"पिताजी !"

पति को अधीर होते देखकर गोनरिल ने उसका हाथ थामते हुए कहा—'ड्यूक ! तुम नाहक इनके पीछे दुःखी होते हो। इनकी बुद्धि नष्ट हो गई है। बुढ़ापे ने आकर इनका ज्ञान छीन लिया है। इन्हें बकने दो; ये जैसा चाहे, करें। पहले ज़रूर इनमें कुछ बुद्धि थी, लेकिन अब तो वह बिल्कुल जाती रही है। इनकी किसी भी बात पर ध्यान देना बेकार है !"

जैसे किसी ने घाव को छू लिया हो, लियर ने एकदम से चौकते हुए तड़पकर कहा—'ओ ईश्वर! तुम देख रहे हो न इस हत्यारी लड़की की कुटिलता ! यह राक्षसी मुझे क्या-क्या कहे जा रही है, सुन रहे हो न ? मैं कहता हूँ—ओ मेरे जुपिटर देवता ! ओ अपोलो ! इस नागिन के ऊपर तुम ऐसी बिजलियाँ गिराओ, जिससे इसका फन टुकड़े-टुकड़े हो जाए। तुम धधकती हुई रेत बनकर इसके ऊपर बरसो, जिसमें यह उसी तरह तड़पे,

जैसे आज मैं तड़प रहा हूँ। ओ ईश्वर ! तुमने देखा न, अपना स्वार्थ सिद्ध करके यह मुझे किस तरह दुःख दे रही है। तुम ऐसा करो, कि इसे मरने के बाद भी शान्ति न मिले।" और वह उठकर क्रोध से काँपता हुआ बाहर की ओर चल पड़ा। उसके पीछे-पीछे हण्टर, जॉन, टाइगर आदि सारे सेवक भी चले गए; जैक्सन मूर्ति जैसा खड़ा चुपचाप देखता ही रह गया।

उसे घबराया हुआ देखकर गोनरिल ने कहा—"चिन्ता क्यों करते हो, ड्यूक ! मैं अभी ओसवाल्ड को रीगन के यहाँ भेजे देती हूँ, जो इन सबसे पहले ही वहाँ पहुँचकर उसे इस तरह समझा देगा कि मेरे इस पागल बाप की वहाँ एक भी न सुनी जाएगी। रीगन के भरोसे वह मुझको जो धमकी दे गए हैं, वह बेकार हो जाएगी। रीगन मुझसे भी अधिक चतुर है। वह इस तरह के आलसियों को घर में बिठाकर खाना न देगी। मैं कहती हूँ, तुम देख लेना—ये फिर आकर मेरे पास मिन्नतें करेंगे।"

लेकिन ड्यूक जैक्सन को गोनरिल की बातों से प्रसन्नता नहीं हुई। वह वैसा ही गम्भीर खड़ा रहा। उसका मन उसे धिक्कार रहा था कि सम्राट् के साथ सचमुच ही अन्याय किया गया है और ईश्वर इसके लिए दण्ड दे सकता है। उसने एक लम्बी साँस लेकर कहा—"कभी-कभी मनुष्य स्वार्थ में पड़कर उचित-अनुचित का भेद भी भूल जाता है। देखें तुम्हारे इस कार्य का क्या परिणाम होता है !"

गोनरिल ने कहा—"हटाओ भी ! ऐसे सनकी आदमी से क्या डरना ! देखा नहीं, आज एक नया नौकर पाल लिया था उन्होंने !"

"नया नौकर ? कौन था वह ?"

"वही टाइगर का बच्चा ! पागल कहीं का ! मूर्ख !"

"वह कौन है ? कहाँ से आया है ?"

"पता नहीं; वह भी इन्हीं की तरह का कोई अभागा होगा, और क्या।" कहकर गोनरिल ने जैक्सन का हाथ पकड़ा और यह कहती हुई भीतर की ओर चल पड़ी—"चलो, ड्यूक! हमें प्रसन्न होना चाहिए कि इतनी आसानी से यह बला टल गई। अभी तुम जानते नहीं, पिताजी की आदत ऐसी है कि वे अपने आगे किसी की नहीं सुनते। उनके रहने से हमारा खाना-सोना भी हराम हो जाता। अब हम लोग शान्ति के साथ रह सकेंगे। अरे, ओसवाल्ड! तू मेरे पढ़ने वाले कमरे में आ। तुझे एक पत्र लिखकर देती हूँ, उसे ले-जाकर तुरन्त रीगन के पास पहुँचा दे। तुझे पागलों के इस झुंड के पहले ही कौर्नवाल पहुँच जाना चाहिए। समझ गया न?"

"हाँ जी!" कहकर ओसवाल्ड ने सिर झुकाया।

गोनरिल जैक्सन का हाथ पकड़े आगे की ओर बढ़ गई। जैक्सन चुप रहा। उसके मन में यही प्रश्न बार-बार उठ रहा था—"क्या उस बूढ़े सम्राट् लियर के साथ, जिसने अपना सब कुछ हमें दे दिया है, ऐसा बर्ताव करना उचित है?"

गोनरिल सोच रही थी—"रीगन के यहाँ दुत्कारे जाकर मेरे बाप की आँखें खुल जाएँगी, और तब वे हम दोनों से कभी उलझ न सकेंगे!"

और ओसवाल्ड सोच रहा था—"यह बदमाश टाइगर पता नहीं, कौन है, कहाँ से आ गया है? आज किस बुरी तरह से मुझको पटक दिया था उसने!"

यह किसी को भी ज्ञात नहीं हो सका कि कैण्ट का वही स्वामीभक्त अर्ल थॉमस जिसे लियर ने निकाल दिया था, अपने स्वामी की सेवा करने के लिए वेश बदलकर टाइगर के रूप में आ गया है।

६

कहते हैं, जब दुर्भाग्य सताता है तो मित्र भी शत्रु हो जाते हैं और राह में पड़ा हुआ रस्सी का टुकड़ा साँप बनकर काटने दौड़ता है। ठीक वही हाल राजा लियर का भी हुआ। गोनरिल को सदा के लिए त्यागकर जब वह अल्बैनी से कौर्नवाल की ओर अपनी दूसरी बेटी रीगन के यहाँ चला, तो सोचा कि मुझे एक महीना अल्बैनी में रहना चाहिए था, तब दूसरे महीने में रीगन के यहाँ जाता। अभी से पन्द्रह दिन पहले ही पहुँचने पर सम्भव है, वह मेरे लिए ठीक से प्रबन्ध न कर पाए। यह विचार मन में आते ही उसने अपने सरदारों से कहा—"मेरे साथियो! मैं सोचता हूँ इस तरह अचानक हमारे कौर्नवाल पहुँचने से सम्भव है बेटी रीगन को कुछ कठिनाई हो, इसलिए मैं चाहता हूँ कि पहले किसी को वहाँ भेजकर अपने आने की सूचना दे दूँ, तब चलना ठीक रहेगा।"

कई सरदारों ने, जो कि गोनरिल के दुर्व्यवहार से बहुत ही खिन्न हो उठे थे, बोले—"हाँ महाराज! ऐसा ही कीजिए, ताकि वहाँ तो शान्ति से रहने को मिल सके!"

लियर ने टाइगर नामक अपने उसी नये सेवक से कहा—"टाइगर! तुम कौर्नवाल जाकर रीगन को हमारे वहाँ पहुँचने की सूचना दो। हम तुम्हें एक पत्र दे रहे हैं। इसे रीगन के हाथ में ही देना और जब तक वह पढ़ न ले, वहाँ से हटना मत। इसका उत्तर लेकर तुरन्त ही तुम्हें लौटना होगा।"

टाइगर ने आगे बढ़कर कहा—"बहुत अच्छा, स्वामी!"

इस बीच विदूपक हण्टर फिर कुछ बोलने लगा था, [illegible] लियर ने उसकी बहकी-बहकी [illegible] पर ध्यान देना [illegible]

समझा। उसने एक पत्र टाइगर को देकर कहा—"किसी अच्छे घोड़े पर बैठ लो और उड़ जाओ।"

हण्टर बोल पड़ा—"सुना बे टाइगर? यह मूर्ख कहता है कि घोड़े पर बैठकर उड़ जाओ। भला इससे पूछो, क्या घोड़ा चिड़िया की औलाद है? मैं कहता हूँ, इस लियर के दिमाग में निरा गोबर है गोबर! अरे, रीगन के यहाँ जाने की क्या ज़रूरत है? वह भी तो गोनरिल की बहन और आधे साम्राज्य की स्वामिनी है! गोनरिल के यहाँ तो रो-धोकर पन्द्रह दिन कट भी गए, पर रीगन के यहाँ तो एक दिन भी न कटेगा। वह उल्टे पैरों लौटा देगी।"

लियर ने हण्टर को बुरी तरह फटकारते हुए चिल्लाकर कहा—"अरे ओ शैतान शोहदे! मैं कहता हूँ, लियर की बात में तू क्यों टाँग अड़ाता है? वह थप्पड़ मारूँगा कि सारा विदूषकपन हवा हो जाएगा।"

हण्टर ने एक ओर को जाते-जाते कहा—"मुझे तो तू क्या थप्पड़ मारेगा चाचा! हाँ अपना सिर भले ही पीटेगा, जैसे अल्बैनी में पीट रहा था!"

लियर ने उसके मुँह लगना ठीक न समझा। उसने टाइगर से कहा—"जाओ, तुरन्त मेरा पत्र रीगन को देकर इसका उत्तर ले आओ। तब तक मैं अर्ल मार्टिन के यहाँ ग्लौसेस्टर में रहूँगा। वहीं आकर मुझसे मिलना!"

टाइगर ने सिर झुकाया, फिर वह एक वैलर[1] पर सवार होकर कौर्नवाल की ओर चल पड़ा। और इसके बाद लियर भी अपने दलबल-सहित मार्टिन का अतिथि बनने ग्लौसेस्टर की ओर रवाना हो गया।

टाइगर जब कौर्नवाल पहुँचा, तो उसे पता चला कि रीगन

---

१ आस्ट्रेलियन घोड़े की एक जाति। डील-डौल में वैलर संसार का सबसे भारी घोड़ा माना जाता है।

और ड्यूक ग्लोरियस दोनों ग्लौसेस्टर जाने को तैयार हैं, इसलिए उनसे भेंट नहीं हो सकती। उसे बड़ी निराशा हुई, क्योंकि लियर का पत्र अगर रीगन के हाथ न पहुँचा, तो उसका आना ही बेकार हो जाएगा। कुछ देर तक इधर-उधर सोचने के बाद उसने एक उपाय निकाला। वह जाकर उस ड्योढ़ी पर खड़ा हो गया, जिधर से रीगन को महल के बाहर निकलना था। हालाँकि कुछ पहरेदारों ने उसे रोका, लेकिन अपनी मीठी और लम्बी-चौड़ी बातों में उसने सब को फँसा लिया और जैसे ही रीगन बाहर आई, उसने आगे बढ़कर लियर का पत्र उसे दे दिया।

रीगन ने एक बार आश्चर्य और क्रोध के साथ उसकी ओर देखा, फिर पत्र खोलकर पढ़ने लगी। ज्यों-ज्यों वह उसे पढ़ती, उसका चेहरा बदलता जा रहा था। पत्र समाप्त करके उसने कहा—"अच्छा, तो मेरे पिता के सेवक ! तुम जाकर पिताजी से कह देना कि मैं अभी ग्लौसेस्टर जा रही हूँ। वे गोनरिल के यहाँ पहले एक महीना बिता लें, तब मेरे पास आएँ। अभी मैंने उनके लिए कोई प्रबन्ध नहीं किया है।"

"लेकिन राजकुमारीजी ! अभी ·····"

बीच में ही रीगन ने उसे रोक दिया—"मैं कुछ सुनना नहीं चाहती। तुम लौट जाओ और जो कुछ मैंने कहा है, पिताजी को कह देना।" इतना कहकर वह बिना उसकी ओर देखे आगे बढ़ गई। उसके पीछे ड्यूक ग्लोरियस खड़ा था। पर, वह भी कुछ बोला नहीं; चुपचाप परछाँई की तरह रीगन के पीछे पीछे चला गया।

टाइगर ने सोचा कि कह दे कि जहाँ तुम जा रही हो, सम्राट् वहीं मौजूद हैं और तुम्हारी बातों को अच्छी तरह समझ लेंगे; लेकिन फिर यह सोचकर कि कदाचित् उस हालत में यह वहाँ न जाए, वह चुप ही रहा। हाँ-ना कुछ भी नहीं

कहा। उसने आदरपूर्वक रीगन तथा ड्यूक को सिर झुकाया और अपने वैलर पर सवार होकर ग्लौसेस्टर की ओर लौट पड़ा।

लेकिन यह सब अचानक नहीं हुआ था। इसके भीतर गहरी चाल थी। अल्बैनी से लियर के प्रस्थान करते ही गोनरिल ने अपने सेवक ओसवाल्ड को रीगन के पास भेज दिया था। उसने पत्र में सब कुछ लिख दिया था कि पिताजी के साथ मैंने ऐसा व्यवहार किया है। अगर तुम भी ऐसा ही करो तो विवश होकर वे कहीं और चले जाएँगे। और इस तरह हम दोनों को उनका भार उठाने से छुट्टी मिल जाएगी।

रीगन भी बहन की भाँति ही दुष्ट प्रकृति की थी। ओसवाल्ड के हाथों पत्र मिलते ही उसने अपने ड्यूक को राज़ी कर लिया कि चलो हम यहाँ से कहीं टल चलें ताकि, पिताजी जो दो-चार दिन में आने वाले हैं, यहाँ से अपना-सा मुँह लेकर लौट जाएँ; क्योंकि इस सूने महल में ठहरना वे पसन्द न करेंगे।

ड्यूक ग्लोरियस को पहले ही एक पत्र ऐडमंड का मिल चुका था। रीगन की बात पर वह सहमत हो गया, क्योंकि उसका भी स्वभाव दुष्ट और षड्यन्त्री था। उसने कहा—"चलो, हम लोग कुछ दिन ग्लौसेस्टर में रहेंगे।" और झटपट दोनों तैयार हो गए। बहन के नौकर ओसवाल्ड को भी रीगन ने यह सोचकर अपने साथ ले लिया कि ग्लौसेस्टर पहुँचकर जैसा हाल होगा, वह सब गोनरिल को लिख देगी। लेकिन यह किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि जिस लियर से छुटकारा पाने के लिए वे लोग अपनी राजधानी छोड़ रहे थे, वह उसी ग्लौसेस्टर में बैठा हुआ था, जहाँ वे उससे छिपने जा रहे थे।

इस बीच ऐडमंड ने अपने जाल का ताना-बाना बड़ी साव-

धानी से चुन लिया। ऐडगर को छिपाकर उसने मार्टिन से जी खोलकर उसकी निंदा की। बूढ़ा मार्टिन उसकी चाल में आ गया। ऐडगर के जाली पत्र पर उसे पहले ही विश्वास हो गया था, अब ऐडमंड की पितृभक्ति और मीठी-मीठी बातों से वह और भी उसके वशीभूत हो गया। ज्यों-ज्यों ऐडमंड के प्रति प्रेम बढ़ता, ऐडगर के लिए उसके मन में उतनी ही घृणा उत्पन्न होती जा रही थी। अन्त में यहाँ तक स्थिति पहुँच गई कि मार्टिन ने आम तौर पर यह घोषणा कर दी कि "ऐडगर मेरा शत्रु है, उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। अब मेरा उत्तराधिकारी, यही मेरा दूसरा पुत्र ऐडमंड होगा।"

ऐडमंड ने सोचा —शायद कभी युद्ध का अवसर आ पड़े, इसलिए उसने चुपचाप बाहर ही बाहर तैयारी करनी आरम्भ कर दी और कौर्नवाल के ड्यूक को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह जानता था कि ड्यूक एक बहुत ही अलमस्त आदमी है, वह अवश्य ही मेरी सहायता करेगा। इसी स्वार्थवश उसने ग्लोरियस को निमन्त्रण देकर ग्लौसेस्टर बुलाया था। उसे मालूम था कि ड्यूक को शराब और शिकार का बड़ा शौक है, इसलिए इन्हीं दो चीज़ों के द्वारा उसने ड्यूक को अपना मित्र बनाने का निश्चय किया। एक बात और भी थी—इन दिनों जैक्सन और ग्लोरियस में ब्रिटेन के पाए हुए राज्य को लेकर कुछ तनातनी हो गई थी। जैक्सन का विचार था कि लियर की कुछ-न-कुछ सेवा अवश्य करनी चाहिए और थोड़ा-बहुत राज्य का भाग कौर्डेलिया को भी दे देना चाहिए। जैक्सन में मनुष्यता और सद्बुद्धि थी, लेकिन ग्लोरियस का स्वभाव इसके विपरीत था। वह बहुत ही धूर्त, लालची और क्रूर था। गोनरिल, रीगन और ऐडमंड से उसकी पटरी अच्छी बैठती थी, क्योंकि ये सब के सब छँटे हुए दुष्ट थे।

ऐडमंड ने इसका भी लाभ उठाया। जब उसे मालूम हुआ

कि आज ही रात में ड्यूक ग्लोरियस आ रहे हैं, तो उसने ऐडगर को सदा के लिए दूर कर देने का उपाय सोचा। मार्टिन के पास जाकर बोला—"पिताजी ! आपको मालूम तो होगा ही, आज कौर्नवाल के ड्यूक हमारे यहाँ आ रहे हैं !"

"हाँ, उनका एक पत्र मेरे पास आया हुआ है और अभी थोड़ी देर पहले सम्राट् भी अलवैनी से रुठकर यहीं आ गए हैं। मुझे लगता है कि सम्राट् की दोनों बेटियाँ पिता के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन नही कर रहीं। खैर, तुम जाकर सारा प्रबन्ध देखो। किसी प्रकार की गड़बड़ी न होने पावे ! न सम्राट् को कोई तकलीफ़ हो, न ड्यूक और राजकुमारी को, क्योंकि, ये दोनों ही हमारे आदरणीय अतिथि हैं।" मार्टिन ने ऐडमंड को समझाते हुए कहा।

लियर का आना सुनकर ऐडमंड को अच्छा नहीं लगा, फिर भी उसने अपना भाव छिपाया और कहा—"आप चिंता न करिए पिताजी ! मैं अपनी सामर्थ्यभर सब की सेवा करूँगा।"

"ठीक है। तुम एक योग्य पुत्र हो, और मैं समझता हूँ कि तुम्हारे काम में कभी भी भूल नहीं हो सकती।"

"लेकिन, पिताजी ! मैं आपसे एक दूसरी ही बात कहने वाला था।"

"क्या ?"

"यही कि हमारे ऐडगर भाई आज महल में मौजूद हैं।"

"एं, क्या कहा ? ऐडगर मौजूद है ? कहाँ है वह अभागा ?" मार्टिन ने क्रोध में उबलकर ऐडमंड से पूछा।

ऐडमंड ने बहुत ही शान्त भाव से उत्तर दिया—"पिताजी! उसे मैंने अपने कमरे में विठा रखा है। कहिए, तो यहीं ले आऊँ ?"

"नहीं, नहीं ! यहाँ मत लाओ। पता नहीं यहाँ वह सबके सामने क्या कहने लगे। चलो, मैं तुम्हारे साथ वहीं चलता हूँ।"

मार्टिन आगे बढ़ा।

ऐडमंड ने कहा—"मैं समझता हूँ कि अगर आप थोड़ी देर बाद आएँ, तो अधिक अच्छा रहेगा। तब तक मैं उसका भेद लूंगा।"

"ठीक है, तुम चलो, मैं अभी आता हूँ।"

ऐडमंड अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को छिपाए हुए बड़ी शान्ति के साथ वहाँ से चल पड़ा और मार्टिन दूसरे कामों में व्यस्त हो गया।

संध्या हो रही थी। ठंडक के साथ अँधेरा भी बढ़ता जा रहा था। सड़कों पर चहल-पहल अब कम होने लगी थी और किनारे लगी हुई लालटेनों पर पतिंगों के झुण्ड मडराने लगे थे। लेकिन बेचारे ऐडगर को इस सबकी तनिक भी सूचना नहीं मिल रही थी, क्योंकि वह तो अपने भाई ऐडमंड के विश्वास में पड़कर आज कई दिनों से एक कमरे में छिपा हुआ बैठा था। उसे अभी तक इस षड्यन्त्र का आभास नहीं मिल सका था, जो ऐडमड द्वारा उसके विरुद्ध रचा जा रहा था। इसलिए जब अचानक ही उसे ऐडमंड ने पुकारा—"भाई ऐडगर!" तो उसने दरवाज़े पर आकर पूछा—"क्या है ऐडमंड?"

ऐडमंड उसके समीप पहुँचकर बोला—"मैंने कह दिया था कि शान्त होकर यहाँ अकेले में छिपे रहना, लेकिन आपने मेरी बात नहीं मानी और कोई उपद्रव कर ही बैठे।"

ऐडगर के पाँवों तले धरती सरक गई। घबराकर बोला—"मैंने तो कुछ नहीं किया, भाई! जबसे तुमने मुझे चेतावनी दी, मैं लगातार इसी कमरे में छिपा बैठा रहा। कौन-सा उपद्रव मेरे हाथों हो गया?"

"अब क्या बताऊं आपसे!" माथे पर हाथ रखता हुआ ऐडमंड कहने लगा—"न जाने किस बदमाश ने कौर्नवाल जाकर वहाँ के ड्यूक को भड़का दिया है कि तुम उनके विरुद्ध

लोगों में तरह-तरह की बातें फैला रहे हो। आजकल कौर्नवाल और अल्बैनी के ड्यूकों में गहरी तनातनी चल रही है। वे एक-दूसरे के दुश्मन हो रहे हैं। ऐसी दशा में ग्लोरियस का आपको अपना शत्रु तथा जैक्सन का मित्र समझना हम सबके लिए संकट उत्पन्न कर सकता है, क्योंकि वह सम्राट् का दामाद है और हम उसके अधीन हैं।"

"भाई, ऐडमंड! मुझे छोड़ दो। मैं बाहर निकलकर पता लगाऊँगा कि वह कौन बदमाश है, जो मेरे पीछे इस तरह पंजे झाड़कर पड़ा हुआ है। मुझसे न अल्बैनी से कोई वास्ता है न कौर्नवाल से कोई प्रयोजन; फिर भी इतना बड़ा उपद्रव मेरे पीछे रचा जा रहा है!"

"अब क्या बताऊँ, भाई! मैं तो और भी घबरा रहा हूँ, क्योंकि कौर्नवाल का ड्यूक मुझसे स्नेह रखता है और आपका शत्रु होकर आज वह हमारे यहाँ आ रहा है! समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ!"

"कौन आ रहा है? ग्लोरियस?" चकित होकर ऐडगर ने पूछा।

"हाँ, वह सुनो—वह—नक्कारा बज रहा है न। ड्यूक आ गये। मैं समझता हूँ कि पिताजी इधर मुझे बुलाने आ रहे होंगे और चूँकि वे तुम पर बुरी तरह नाराज़ हैं, इसलिए भाई ऐडगर! तुम तलवार निकाल लो!"

घबराकर ऐडगर ने पूछा—"तलवार? लेकिन ..."

"जल्दी करो, वह देखो नक्कारा बज रहा है। पिताजी यहाँ आना ही चाहते हैं, इसलिए तुम फौरन सावधान हो जाओ। तलवार खींचकर तैयार रहो। संभव है कि वे आते ही मुझे तुमको गिरफ्तार करने के लिए कहें। उस हालत में मैं तुम पर झपटूँगा, पर तुम डरना मत, मैं वार नहीं करूँगा और तुम तलवार घुमाते हुए उस पीछे के दरवाज़े से निकल जाना।

ड्यूक या पिताजी के सामने तुम्हारा जाना ठीक नहीं है, क्योंकि दोनों ही तुमसे भड़के हुए हैं।"

सरल हृदय ऐडगर ऐडमंड की बातों में आ गया। उसने कहा—"यही करूँगा, भाई, पर मैं समझ नहीं पा रहा कि इतना बड़ा उपद्रव कैसे खड़ा हो गया ?"

ठीक इसी समय किसी ने बाहर से पुकारा—"ऐडमंड !"

ऐडमंड ने तलवार खींच ली और ऐडगर से कहा—"सावधान, भाई ऐडगर ! पिताजी आ रहे हैं !"

ऐडगर ने भी तलवार खींच ली। दोनों ने पैतरे बदले ही थे कि कमरे का दरवाज़ा खुला। पिता के आने की कल्पना से भयभीत होकर ऐडगर पिछले दरवाज़े की राह से निकल भागा और ऐडमंड ने तुरन्त अपनी तलवार से बाएँ हाथ की कलाई पर एक छोटा-सा घाव बनाकर मन-ही-मन कहा—अब इस घाव को दिखाकर मैं सभी को ऐडगर का शत्रु बना दूँगा।

पुकारने वाला व्यक्ति सचमुच ही मार्टिन था। कुछ देर ऐडमंड के साथ हुई बातचीत के अनुसार वह ऐडगर को पकड़ने आया था। आते ही उसने कहा—"बेटा ऐडमंड ! कहाँ है वह शैतान ऐडगर ?"

"वह तो भाग गया पिताजी !" शान्त भाव से ऐडमंड बोला।

"क्या तुम उसे पकड़ नहीं सके ?"

"मैंने भाई समझकर उसको बातों से ही रोकना चाहा, पर वह तो मरने-मारने पर आमादा था। तुरन्त तलवार लेकर लड़ने लगा। मैं उससे पार न पा सका, पिताजी, क्योंकि मेरे मन में दया थी और वह तो राक्षस की तरह लगातार वार करता जा रहा था। मैंने उसके कई वार बचाए, पर आपकी आवाज़ सुनकर एक बार मेरा ध्यान बँट गया और तभी वह मुझे चोट पहुँचाकर भाग निकला। यह देखिए !" कहकर ऐडमंड

ने अपनी कलाई का घाव दिखाया।

उस आज्ञाकारी और सुयोग्य पुत्र के शरीर से खून बहता देखकर मार्टिन क्रोध के मारे काँपने लगा। उसने गरजकर कहा —"ओ देवताओ! सुन लो! ऐडगर अब मेरा पुत्र नहीं रहा। मैं उसे एक कुत्ते जैसा भी नहीं रक्खूँगा। आज से वह मेरा शत्रु है और अगर कभी सामने आ गया तो अपने पुत्र ऐडमंड की चोट का बदला उससे अवश्य लूँगा।" फिर उसने ऐडमंड को छाती से लगा लिया और ऐडगर के लिए बकता-झकता बाहर की ओर निकल गया।

१०

कुछ ऐसा संयोग हुआ कि लियर और ग्लोरियस दोनों एक रात, एक ही समय ग्लौसेस्टर पहुंचे; लेकिन उन्हें एक-दूसरे के आने का पता नहीं चला; क्योंकि ऐडमंड ने उन्हें अलग-अलग ठहराया था। मार्टिन दोनों से मिला अवश्य, लेकिन उसने भी ड्यूक से सम्राट् के आ पहुँचने की बात नहीं कही। थकान के कारण उस दिन उन लोगों ने अधिक बातचीत नहीं की और खा-पीकर जल्दी ही सो गए। मार्टिन लियर का प्रतिनिधि होने के नाते उसका आज्ञाकारी और स्वामीभक्त था। गोनरिल के दुर्व्यवहार से वह खिन्न था और चाहता था कि किसी प्रकार सम्राट् की सेवा कर सके; पर इस समय ड्यूक और रीगन के आ जाने से वह चिन्ता में पड़ा था कि ये दोनों अतिथि सम्राट् के विरोधी हैं; कैसे करूँ कि सब की सेवा होती रहे और किसी को खिन्न होने का अवसर न मिले। उधर ऐडमंड बड़ी रात तक जागते हुए सोच रहा था कि किस उपाय से मैं अपने पिता

को ड्यूक की निगाहों में गिरा सकता हूँ ? ऐडगर तो अब मेरे सामने आएगा ही नहीं, यदि यह बुड्ढा मार्टिन भी कहीं भाग जाए, तो बस ग्लौसेस्टर का अर्ल ऐडमंड के सिवा और कौन होगा। इस प्रकार सबने वह रात अपनी-अपनी समस्याओं के सोचने में ही बिताई।

ग्लौसेस्टर का महल बहुत बड़ा था। उसके कई भाग थे और प्रत्येक भाग एक पूरा महल था। एक महल में अर्ल स्वयं रहता था, शेष अतिथियों के लिए खाली पड़े रहते थे। सम्राट् और ड्यूक के ठहरने के लिए उन्हीं में से एक-एक महल सजाया गया था। दोनों एक-दूसरे से काफी दूर और अलग थे। इन्हें पता नहीं चल सका कि कौन कहाँ ठहरा हुआ है। हालाँकि मार्टिन ने रात में ही सम्राट् से ड्यूक के आने की बात बता दी थी, पर ड्यूक को सम्राट् के आने का समाचार नहीं मिल सका था; क्योंकि ऐडमंड को भी सम्राट् के आ पहुँचने का पता नही चल सका था।

दूसरे दिन सवेरे टाइगर फिर रीगन के महल की ड्योढ़ी पर पहुँचा। उसे लियर ने यह कहकर भेजा था कि वह जाकर मेरे आने और मुझसे मिलने की सूचना दे दे। टाइगर जब रीगन की ड्योढ़ी पर पहुँचा, तब सवेरा ही था। रीगन बाहर न निकली थी। कुछ नौकर-चाकर इधर-उधर सफाई कर रहे थे। वह एक छोटी-सी बैंच पर, जो बरामदे में पड़ी हुई थी, बैठ गया और ड्यूक के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ ही समय बीता था कि गोनरिल का सेवक ओसवाल्ड भी आ पहुँचा। उसे आज ही अपने पत्र का उत्तर लेकर अल्बैनी वापस जाना था। टाइगर ने उसे पहचानते ही कहा—

"कहो दोस्त ! तबियत ठीक है न ?"

ओसवाल्ड ने उसकी ओर देखा तो पहचान गया। क्रोध और घृणा से उसका मन भर उठा; लेकिन कुछ बोला नहीं,

चुपचाप खड़ा रहा।

टाइगर ने फिर पूछा—"क्या मुँह की सिलाई करा ली है ? मैं पूछता हूँ, तवियत ठीक है न ? वोलते क्यों नही ?"

दाँत पीसकर ओसवाल्ड वोला—"क्या झगड़ा करना चाहते हो ?"

'वैसे तो मैं एक शान्तिप्रिय व्यक्ति हूँ, लेकिन जव कोई वात का जवाव नहीं देता या दाँत पीसकर देता है, तव लाचार होकर मुझे झगड़ा करना ही पड़ता है।"

"उफ़ ! क्या कहूँ, कुएँ भर में भाँग पड़ी है !"

"क्या मतलव ?" टाइगर ने पूछा।

"मतलव यही कि लियर का दिमाग़ तो खराव था ही, उसके सेवक भी वैसे ही हो गए हैं। आम की वात पूछो, तो इमली का हाल वताते हैं। मैं तुमसे सीधी वात करता हूँ और तुम अकड़ते जा रहे हो !"

"देखो, दोस्त !" टाइगर ने वैसे ही शान्त भाव से कहा—"अगर तुम्हारी कमर का दर्द दूर हो गया हो तो वताओ मैं उसे फिर पैदा कर दूँ, लेकिन सम्राट् लियर को कुछ न कहो। उसको कहोगे तो पछताओगे !"

"क्या करोगे तुम ?"

टाइगर ने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाईं और वैंच पर से उठ खड़ा हुआ। वोला—"वह पटकान दूँगा कि पानी न माँगोगे। टाइगर को इतनी जल्दी भूल गए ?"

ओसवाल्ड को अभिमान था कि ड्यूक के दरवाजे पर यह मेरा कुछ नही कर सकता। उसने वैसे ही अनादर के साथ कहा "चल-चल वे चापलूस !"

"वदमाश वकता ही चला जा रहा है !" कहकर टाइगर ने ओसवाल्ड के दाहिने गाल पर एक तमाचा जड़ दिया।

ओसवाल्ड भी उससे लिपट गया—"ओ पागल वाद-

पागल सेवक ! मैं कहता हूँ भाग जा यहाँ से, नहीं तो तुझे पागलखाने में बन्द कराकर ही दम लूंगा। जान बचाना चाहता है, तो दूर हो यहाँ से।"

"बड़ा पाजी कुत्ता है यह ! भौंकता ही चला जा रहा है। बिना मरम्मत कराए मानेगा नहीं !" कहकर टाइगर ने उसे दबोच लिया और एक पटकान देकर कहा—"ओ लुच्चे ! निकाल अपनी तलवार !"

ओसवाल्ड गोनरिल का सेवक होने के नाते अभिमानी था। वह अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझता था। लेकिन जितना अधिक उसका मुँह चलता था, हाथ उतने ही कमज़ोर थे। साहस भी उसमें नहीं था। टाइगर की पटकान खाकर वह चिल्लाया—"अरे दौड़ो कोई ! बचाओ ! देखो यह पागल मुझे मारे डालता है !"

चिल्लाहट सुनकर कई एक नौकर इकट्ठे हो गए, पर किसी की हिम्मत न पड़ी कि टाइगर से कुछ कह सके क्योंकि वह अब भी तलवार खींचे खड़ा ओसवाल्ड को बार-बार ललकार रहा था—"अरे कुत्ते। दुम क्यों हिलाता है ? पहले की तरह उठकर भौंकता क्यों नहीं ?"

इसी समय रीगन को साथ लिए ड्यूक बाहर निकला। यह दृश्य देखकर वह घबरा उठा। उसने पूछा—"अरे ! यह क्या ? तलवारें क्यों चल रही हैं ?" और वह झपटकर टाइगर के पास जा पहुँचा।

टाइगर ने उसे देख तलवार म्यान में कर ली और सिर झुकाकर बोला—"देखिए, श्रीमन्त ! यह कुत्ता पागल हो गया है, इसे बँधवा दीजिए।"

रीगन ने बहन के सेवक को पहचानकर कहा—"अरे, यह तो ओसवाल्ड है !" फिर टाइगर से कहा—"क्यों रे ! पिता के साथ रहकर [illegible] पागल हो गया है क्या ?

को क्यों मारा ? बोल !"

"जी, मैं क्या करता ! सम्राट् का पत्र देने आपके पास आया था, लेकिन यह मुझे यहाँ से खदेड़ रहा था। भला मैं कैसे लौट जाता, जबकि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि यह सम्राट् के विरुद्ध आपको भड़काने वाले पत्र लेकर अल्बैनी से आया हुआ है !" टाइगर ने कहा।

"हम तुम्हारी कोई बात नहीं सुनना चाहते। भाग जाओ यहाँ से। तुम एक नम्बर के बदमाश आदमी हो।" ड्यूक ने उसे फटकारा।

टाइगर ने फिर वैसे ही नम्र भाव से कहा—"श्रीमान् की आज्ञा है तो मैं चला जाऊँगा, लेकिन सम्राट् के पत्र का उत्तर तो मिलना ही चाहिए न ! वे अपनी राजकुमारी रीगन से भेंट करना चाहते हैं।"

"भागता है यहाँ से कि नहीं ? जाकर कह दे अपने सम्राट् से कि रीगन को अभी फुरसत नहीं है मिलने की।" रीगन ने तड़पकर कहा।

"बहुत अच्छा, श्रीमती ! मैं जाकर यही कह दूँगा। सचमुच आप गोनरिल की सगी बहन हैं। जैसा व्यवहार उसने पिता के के साथ किया, वैसा ही आप भी कर रही हैं !" कहकर टाइगर लौट पड़ा।

रीगन ने ड्यूक से कहा—"ड्यूक ! यह कुत्ता मेरे ही दरवाजे मेरा इस तरह अपमान करके लौटा जा रहा है और तुम चुप हो ! याद रखो, अगर उसे दण्ड न दिया गया, तो मैं हीरा[1] चाट लूंगी।"

ग्लोरियस जैसा दुष्ट था वैसा ही रीगन का दास भी। उसने तुरन्त अपने सिपाहियों को हुक्म दिया—"पकड़ लो इस

---

१. कहते है, हीरा चाटने से मृत्यु हो जाती है। प्राचीन काल में आत्म-हत्या के लिए यही उपाय प्रयोग में लाया जाता था।

बदमाश को, और कटघरे में फँसा दो।"

चार-पाँच सिपाही दौड़े और उन्होंने टाइगर को पकड़कर उसके पैर कटघरे में फँसा दिए। ड्यूक ने कहा—"अब तू यहीं मर" और रीगन को साथ लिए बाहर की ओर चल पड़ा। लेकिन वह दस कदम भी न गया होगा, कि सामने से लियर आता हुआ दिखाई दिया। उसके साथ विदूषक हण्टर, अर्ल मार्टिन तथा कुछ सरदार भी थे। लियर ने कटघरे की ओर देखते ही पूछा—"हैं! यह क्या? मेरे सेवक को किसने कैद किया?"

"मैंने इस बदमाश को दण्ड दिया है, पिताजी!" ड्यूक ने कहा।

"लेकिन क्यों? इसे तो मैंने अपनी बेटी के पास भेजा था।"

"यह बड़े ही दुष्ट स्वभाव का है, पिताजी! हर बात में झगड़ा करने लगता है। मेरी बहन के सेवक को तलवार लेकर मारने झपटा था।" रीगन बोली।

"और उसे उठाकर पटक भी तो दिया था!" हँसते हुए कटघरे में फँसे टाइगर ने कहा।

ड्यूक ने आँखें चढ़ाकर कहा—"देखिए, पिताजी! वह किस प्रकार ढिठाई से बातें कर रहा है!"

"खैर, छोड़ दो इसको और तुम दोनों मेरे साथ आओ, मैं तुमसे कुछ बातें करूँगा।" लियर ने रीगन और ड्यूक से कहा।

टाइगर तो छोड़ दिया गया, पर रीगन लियर के साथ बातें करने को तैयार न हुई। उसने कहा—"पिताजी! शाम को हम लोग बातें कर लेंगे, अभी मैं ज़रा घूमने जा रही हूँ।"

लियर को अपनी ऐसी अवज्ञा, ऐसे अपमान की आशा नहीं थी। उसका क्रोध भड़क उठा। उसने कहा—"रीगन! तुम किससे बातें कर रही हो, क्या... ल गई?"

"भूल कैसे जाऊँगी ? मैं अपने पिता से बातें कर रही हूँ।"

लियर कुछ शांत हुआ। उसने स्वर को नम्र करके कहा—"बेटी ! उस चांडालिन गोनरिल ने तो मुझे गहरा धोखा दिया। मेरा राज्य पा जाने के बाद अब मुझे भोजन भी नहीं देना चाहती। मेरे सेवकों को भी उसने बहुत सताया है। हारकर मुझे उसका सहारा छोड़ देना पड़ा और मैं यहाँ चला आया, क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम्हारा स्वभाव उससे भिन्न है। तुम उसकी तरह स्वार्थी और कठोर नही हो; तुम्हारे यहाँ अवश्य ही मैं रह सकूँगा।"

रीगन ने घोर आश्चर्य और विवशता का भाव दिखाते हुए कहा—"वह कुछ भी हो, पिताजी ! लेकिन मैं अभी आपको कैसे रख सकती हूँ ? मैंने कोई तैयारी भी तो नहीं की। अभी आप पंद्रह दिन अल्बैनी में ही रहें, इसके बाद यहाँ आजाइएगा क्योंकि हम दोनों बहनों को आपका भार बराबर उठाना चाहिए।"

"लेकिन, रीगन ! मैं अब अल्बैनी नहीं जा सकता, क्योंकि उसने मुझे दुत्कार दिया है और मैं उसके दरवाज़े पर वापस न जाने की प्रतिज्ञा करके आया हूँ। उस चुड़ैल से मैं अब सहायता नहीं माँग सकता।"

लियर को यह नहीं मालूम था कि ये दोनों बहनें आपस में सधी हुई हैं; इसी से वह रीगन पर इतना विश्वास कर रहा था। पर रीगन गोनरिल से भी आगे थी। उसने साफ इन्कार कर दिया—"पिताजी ! अभी तो आपकी सेवा करना मेरे लिए असम्भव है। जैसा पहले आपने कहा था, एक-एक महीने तक ही दोनों जगहों पर रहिए।"

"गोनरिल बड़ी ही दुष्टा और पापिन है, रीगन ! उसके व्यवहार से मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया है। मैं अब उसका मुँह भी नहीं देखूँगा।"

"नहीं, ऐसा नहीं, पिताजी ! आप उससे क्षमा माँग लीजिए।"

लियर सन्नाटे में आ गया—"क्या कह रही हो, रीगन ! क्षमा ? उस नागिन से क्षमा माँग लूँ ? कभी नहीं, लियर मर जाएगा, पर गोनरिल से पानी भी न माँगेगा। वह नीच, कृतघ्न ! ईश्वर उस पर बिजलियाँ गिराएगा।"

क्रोध से काँपते हुए लियर से ड्यूक ने कहा—"आपकी बुद्धि मंद हो गई है, पिताजी ! वरना, आप इन बदमाश सरदारों को अपने साथ न रखते। सब-के-सब छँटे शैतान हैं।"

"चुप रहो, ड्यूक ! मेरे सरदारों को तुम कुछ नहीं कह सकते। मैं समझ गया, तुम सब-के-सब टुकड़े के लिए दुम हिलाने वाले कुत्ते हो। यह रीगन, जिसे मैं अपनी बेटी समझ रहा था, मुझे किस तरह ठोकर मार रही है। ओ जुपिटर देवता ! तुम देख रहे हो न !"

रीगन ने कहा—"हाँ, ठीक है ! आप देवताओं के पास ही जाइए।"

"उफ़ !" दुःख से व्याकुल होकर लियर ने अपना सिर थाम लिया और बोला—"मैं पागल क्यों नहीं हो जाता ईश्वर ! ताकि सारे दुःखों को भूल जाऊँ। इतना अपमान सहकर तो जीवित नहीं रहा जा सकता।"

उसी समय तुरही बजने की आवाज़ आई। रीगन ने प्रसन्न होकर ग्लोरियस से कहा—"ड्यूक ! बहन गोनरिल आ गई। यह उसी की सूचना है। चलो, हम लोग आगे चलकर उससे मिलें।"

लियर ने यह सुना तो माथा ठोंक लिया—"अभागे लियर ! चल यहाँ से। देखता नहीं, दोनों डाकिनियाँ इकट्ठी हो गई हैं। यह तुझे सता-सताकर मारने की पहले से ही तैयार की गई चाल है। भाग चल यहाँ से। अगर तुझमें दम है, तो नई सेना

तैयार करके अल्बैनी और कौर्नवाल को तहस-नहस कर दे, इन पिशाचिनों को जिन्दा ही आग में जलवा दे और अगर यह नहीं कर सकता तो किसी पत्थर से अपना सिर फोड़ ले या हीरा चाट ले, नहीं तो तेरा दुर्भाग्य तुझे और भी सताएगा।"

थोड़ा रुककर उसने चारों ओर देखा और उठकर खड़ा हो गया—"अर्ल मार्टिन! टाइगर! हण्टर और मेरे सरदारो! मेरे साथ आओ। हम सब बाहर चलेंगे।" ग्लोरियस और रीगन चुपचाप खड़े देखते रहे और लियर सेवकों सहित एक ओर को चला गया। उसके जाने के बाद रीगन ने कहा—"अच्छा हुआ, विपत्ति टल गई।" और वह ड्यूक को साथ लिए हुए गोनरिल का स्वागत करने ड्योढ़ी की ओर चल पड़ी।

कहते हैं, सत्य कभी छिपा नहीं रह सकता। मार्टिन का पुत्र ऐडगर स्वभाव का शान्त और सरल था। उसे छल-कपट से घृणा थी। लेकिन वह मूर्ख नहीं था, जैसा ऐडमंड ने उसे समझ रखा था। ऐडगर अपने पिता की ही भाँति बुद्धिमान और वीर था। अपने साधु स्वभाव के कारण पहले तो वह ऐडमंड की बातों पर विश्वास करता रहा, पर जब उस रात वह घर से भागा तो बाहर उसे कुछ लोगों से ऐडमंड के षड्यन्त्र का पता चल गया। पहले तो उसने सोचा कि चलकर ऐडमंड को कैद कर लूँ, फिर न जाने क्या सोचकर वह पागल बन गया और वेश बदलकर पास के ही एक जंगल में रहने लगा। उसे ऐडमंड, गोनरिल, रीगन और ग्लोरियस के बीच, लियर तथा अपने पिता मार्टिन के सम्बन्ध में चली जा रही

और भी कई चालों का पता लग चुका था। इसलिए उसने सोचा—अब मुझे कुछ दिन इसी तरह छिपकर वाहर से देखना चाहिए कि आखिर ये सब शैतान क्या करने पर आमादा हैं ? उसने अपना नाम 'टॉम' रख लिया और एक गरीब पागल किसान के रूप में रहने लगा। वह आवादी की ओर वहुत कम जाता था, वहुधा उसी जंगल में या अपने महल के आस-पास ही चक्कर लगाया करता था। उसका भेद अगर कोई जानता था, तो वह था—लियर का नया सेवक टाइगर।

चूँकि टाइगर भी लियर के हठीले स्वभाव का शिकार होकर कैण्ट के अर्ल-पद से हटाया जा चुका था, पर अपनी स्वामी-भक्ति के कारण वह दूर नहीं जा सका था और वेश वदलकर टाइगर के रूप में लियर के पास ही रह रहा था। उसे दोनों राजकुमारियों का षड्यन्त्र मालूम हो गया था। ग्लौसेस्टर का अर्ल मार्टिन उसका मित्र था, इस नाते वह ऐडगर को पुत्रवत् प्यार करता था। ऐडमंड की धूर्तता उसे ज्ञात हो गई थी, इस लिए उसने ऐडगर को खोजकर पागल के रूप में जंगल में ठहरा दिया था। लेकिन उसके सम्वन्ध में या ऐडमंड के षड्यन्त्र की वावत उसने किसी से चर्चा नहीं की। वह चुपचाप सभी पर निगाह रखे हुए था कि कौन क्या कर रहा है ? उसके छद्मवेश को केवल एक व्यक्ति जानता था—मार्टिन। एकान्त में कभी-कभी दोनों मित्र आपस में खुलकर वातें कर लेते थे, लेकिन फिर भी टाइगर ने कभी ऐडगर की वावत उसे कुछ नहीं वताया। हाँ, रीगन, गोनरिल और ग्लोरियस के षड्यन्त्र की चर्चा वह अवश्य करता रहता था।

रीगन के पास से जव लियर वापस हुआ तो निराशा और विश्वासघात के कारण उसका मन वहुत दुःखी हो गया। कौर्डेलिया के साथ किए गए अन्याय को याद करके वह और भी तड़प उठता था। कई दिन तक उसका मन वहुत ही अशान्त

रहा। उसे रात में नींद नहीं आती थी। भूख-प्यास मर गई थी। सदैव अनेक प्रकार की चिंताओं में डूबा वह आकाश की ओर देखा करता था। धीरे-धीरे उसे बुखार आने लगा और कुछ दिन बाद वह विक्षिप्त हो गया। अब उसकी बात का कोई उद्देश्य नहीं होता था। जो भी मुँह से निकल पड़ता था, कह डालता था। कभी हँसता, कभी गरजता, कभी ज्ञान की बातें करता और कभी युद्ध की तैयारी करने लगता था। लेकिन, पागलपन की ऐसी अवस्था में पहुँचकर भी वह दो बातें नहीं भूला था—अपना एक प्रतापी सम्राट् होना और दोनों बेटियों का दुर्व्यवहार। कभी-कभी कौर्डेलिया का नाम लेकर लम्बी साँसें लेने लगता था। उस समय उसकी आँखों में आँसू आ जाते और वह चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगता—"ओ देवता अपोलो! ओ जूनो देवी! मैंने उस बेचारी कौर्डेलिया के साथ घोर अन्याय किया है। मुझे उसका दण्ड मिलना चाहिए।" उसके पागल और मूर्ख मित्र, टाइगर और हण्टर सामने तो उसे अपनी उल्टी-सीधी बातों में भुलाए रखते थे पर अकेले-अकेले में बहुत दुःखी होते थे, क्योंकि वे सचमुच पागल या मूर्ख नहीं थे। लियर की दीन दशा देखकर उनका मन करुणा से भर उठता था। फिर भी वे विवश थे, क्योंकि उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं था जिससे वे अपने सम्राट् की सहायता कर सकते। उधर वृद्धावस्था तथा पागलपन के कारण लियर की दशा चिन्ताजनक होती जा रही थी। फिर भी वह खूब बातें करता था और उत्साह के साथ, जैसे बुझने से पहले दीया बड़े ज़ोर से फड़कने लगता है।

गोनरिल के व्यवहार से लियर का मन पहले ही खिन्न हो चुका था, अब रीगन और उसके पति ग्लोरियस की ओर से भी उसकी आशा टूट गई। अपनी विवशता पर उसे बड़ा सन्ताप हो रहा था कि मैंने मूर्खतावश अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मार ली। जब वह ग्लौसेस्टर के महल से निकला तो उसका

त्यागी
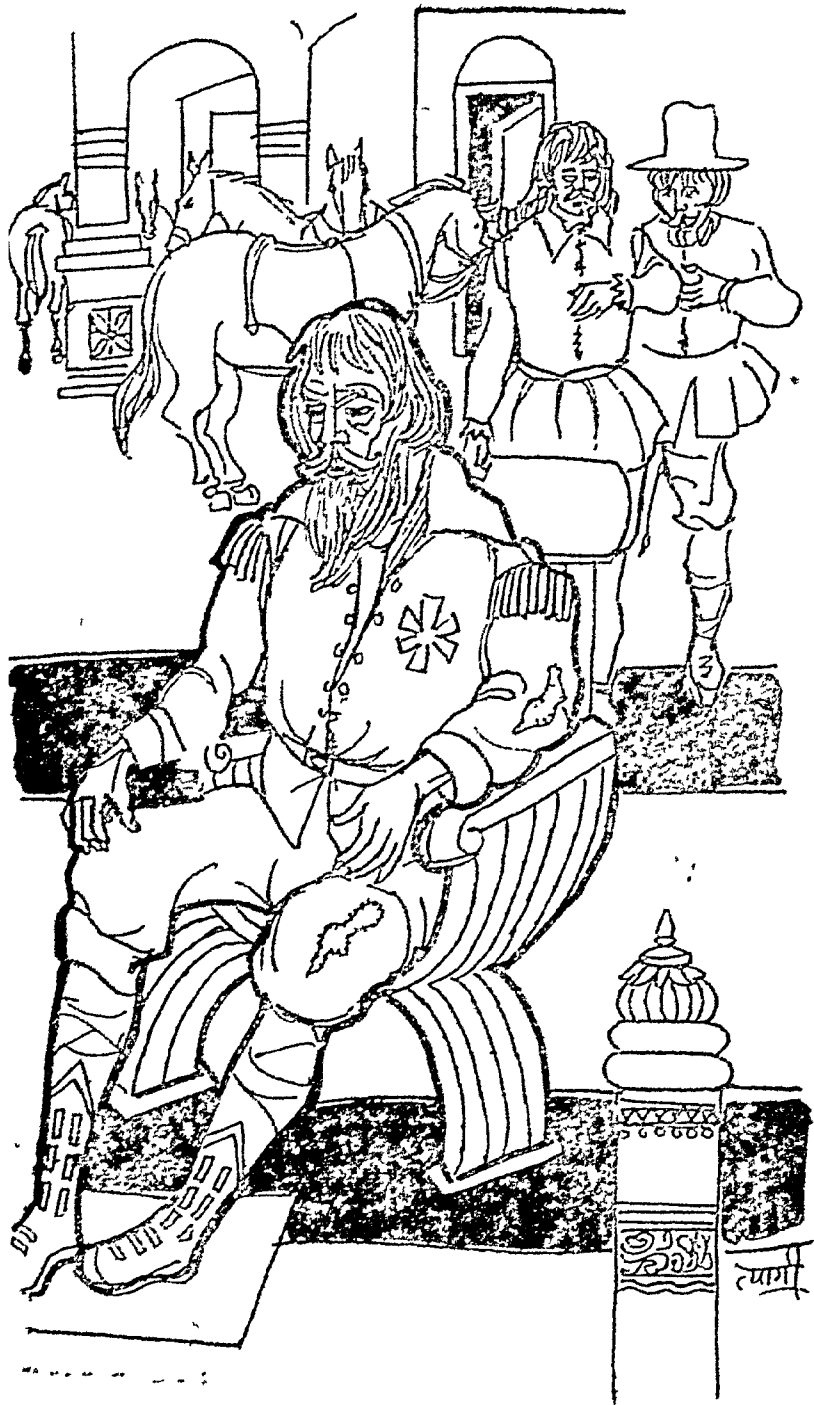
क्रोध और दुःख इतना बढ़ा हुआ था कि अनेक सरदारों के सम-झाने पर भी वह नहीं रुका और यह कहकर वहाँ से चल पड़ा—"अब या तो मैं सेना इकट्ठी करके इन दोनों राक्षसियों को दण्ड दूँगा, या इसी प्रयत्न में अपनी जान गँवा दूँगा।"

बाहर आकर उसने अपने सरदारों को एकत्र किया, लेकिन किसी ओर को चल न सका क्योंकि हवा बहुत तेज थी और पानी बरसने की सम्भावना थी। दिन तो बीत गया, पर रात बहुत ही भयानक हो उठी। ऐसा भयानक तूफान आ गया कि जान पड़ने लगा—धरती ही उलट जाएगी। आधी रात का समय था और अन्धड़ पूरे वेग से चल रहा था; तभी लियर उठ खड़ा हुआ और बोला—"हम अभी, इसी समय निकल चलेंगे। यहाँ हमें नहीं ठहरना है।"

सरदारों ने बहुत समझाया, पर जब लियर राजी न हुआ तो मार्टिन ने कहा—"चलिए, मैं भी आपके साथ चलूँगा।"

"हाँ, चलो! तुम भी तो मेरे मित्र हो!" लियर ने उत्साह-पूर्वक कहा।

मार्टिन ने उसी जंगल में पागल टॉम के पास ले-जाकर लियर को रोक दिया और स्वयं भी वहीं ठहर गया। टॉम से उसका काफी घनिष्ठ परिचय हो गया था; फिर भी वह यह नहीं जान पाया था कि यह पागल किसान मेरा पुत्र ऐडगर ही है। टाइगर और हण्टर भी वहीं आ गए और लियर का पूरा दल-बल टॉम का अतिथि बन गया।

इस बीच, जब अर्ल मार्टिन लियर की सेवा में लगा हुआ था, ऐडमंड को ड्यूक ग्लोरियस और उसकी स्त्री रीगन से बातें करने का काफी समय मिला। रीगन की बड़ी बहन गोन-रिल भी वहीं आई हुई थी, और इन सब में सदैव यही चर्चा होती रहती थी कि क्या किया जाय जिससे कि उनकी राह में एक भी काँटा न रह जाए। ऐडमंड ने इस अवसर का लाभ

उठाया। उसने सम्राट् और ऐडगर के प्रति रीगन और ड्यूक को भड़काना आरम्भ कर दिया, ताकि वे उन लोगों पर दया न कर सकें। यहाँ तक कि उसने यह भी कह दिया कि मेरा भाई और पिता, दोनों ही आप के शत्रु हैं और अवसर पाकर आपकी हत्या तक कर सकते हैं। ऐडमंड ने कुछ जाली पत्र भी दिखाए, जिनसे यह प्रकट होता था कि मार्टिन लियर का भक्त है और इसके लिए कुछ भी कर सकता है। विशेष रूप से वह रीगन और गोनरिल का राज्य छीनना चाहता है।

ड्यूक पर ऐडमंड का जादू चल गया। उसने प्रसन्न होकर अपने हाथों एक दिन ऐडमंड को टोपी पहनाई और ग्लौसेस्टर का अर्ल नियुक्त कर दिया। इस प्रकार ऐडमड की, दोनों राजकुमारियों और ग्लोरियस से घनिष्ठता हो गई। हाँ, गोन-रिल का पति जैक्सन इस विवाद में नहीं था, क्योकि उसे लियर के साथ किए गए अन्याय से मन-ही-मन ग्लानि हो रही थी। वह अल्बैनी में ही था। ग्लौसेस्टर आकर इस षड्यन्त्र में सम्मिलित होने को उसका मन तैयार न हो सका था।

ऐडगर की झोंपड़ी, जहाँ वह टॉम के रूप में रह रहा था, अर्ल के महल से थोड़ी ही दूरी पर थी; अतः वहाँ ठहरे हुए लियर की सभी वाते ग्लोरियस और रीगन तक रोज़ ही पहुँ-चती रहती थीं। रीगन ने सोचा—चलो, यह अच्छा हुआ कि मेरे ऊपर से पिता का भार टल गया। ऐडमंड ने विचार किया —मेरे महल से चले जाकर सम्राट् ने जैसे मुझे खुलकर खेलने की छूट दे दी है; और कौर्नवाल का वह ड्यूक ग्लोरियस जो ग्लौसेस्टर का अतिथि था, सोच रहा था—लियर और मार्टिन अगर इसी दौड़-धूप में मर जाते, तो मेरी सारी चिन्ता दूर हो जाती। इस प्रकार वे सब-के-सब स्वार्थवश अन्धे हो रहे थे; उनका ज्ञान नष्ट हो चुका था; उचित-अनुचित का विवेक मर चुका था और वे उस पागल लियर को—जिसने

उन्हें अपना सर्वस्व सौंप दिया था—हर तरह से दुःख देने का उपाय सोचा करते थे। वे टॉम की झोंपड़ी के पास कभी गन्दगी फैलाते, कभी शिकारी कुत्ते दौड़ा देते, कभी नक्कारा बजवाकर शोर-गुल मचाते और कभी शिकार खेलने के बहाने वहाँ जाकर तरह-तरह के उपद्रव मचाते थे।

झोंपड़ी के मालिक उस पागल किसान टॉम अर्थात् ऐडगर को इन लक्षणों से मालूम हो गया कि ऐडमंड और ग्लोरियस इसी प्रकार किसी दिन हम सबके प्राण ले लेना चाहते हैं। उसने अपना सन्देह एक दिन एकान्त पाकर टाइगर अर्थात छद्मवेश में नौकरी कर रहे कैण्ट के अर्ल थॉमस को बताया। टाइगर ने कहा—"ठहरो, मैं इसका प्रबन्ध करूँगा।" और उसने उसी दिन शाम को अपने मित्र मार्टिन से अकेले में सारी बातें कह दीं। मार्टिन ने अपने और सम्राट् के ऊपर विपत्ति आती देखकर सोचा—अब हमें किसी दूसरे स्थान पर चलकर रहना चाहिए। अन्त में, वह टाइगर के साथ इसी निश्चय पर पहुँचा कि सम्राट् को डोवर के किले में भेज दिया जाए क्योंकि वहाँ अपना काफ़ी प्रभाव है, और ड्यूक या उसके सिपाही वहाँ किसी प्रकार का उपद्रव न कर सकेंगे। उसी दिन उन दोनों ने आपस में तय करके एक पत्र कौर्नवाल के पास फ्रांस भेजा, जिसमें उसकी दोनों बहनों का अत्याचार भी लिख दिया और राजकुमार आर्थर से—जो कि अब फ्रांस का सम्राट् हो गया था—लियर की सहायता के लिए प्रार्थना की।

ग्लौसेस्टर से कुछ ही दूरी पर डोवर का इलाका था। वहाँ का किला बहुत ही मजबूत और सुन्दर था। हण्टर, टॉम और लियर को—जो अब तक बिल्कुल पागल हो चुका था—लेकर मार्टिन और थॉमस वहाँ पहुँचे। वहाँ के सूबेदार और सिपाहियों ने जब सम्राट् की यह दशा देखी तो वे बहुत ही दुःखी हुए और प्रतिज्ञा की कि हम प्राण रहते सम्राट् पर आँच न आने देंगे।

उन सब को सुरक्षित रखकर मार्टिन ग्लौसेस्टर लौट आया; क्योंकि ड्यूक ग्लोरियस तथा रीगन और गोनरिल अभी उसके अतिथि थे, जिनके स्वागत का भार वह एकमात्र ऐडमंड पर छोड़कर चला आया था। पर अब भी उसे यह नहीं ज्ञात हो सका था कि ऐडमंड उसके साथ कैसा षड्यन्त्र रच रहा है, और उसे ड्यूक ने अर्ल भी बना दिया है। टॉम के विषय में भी वह नहीं जान सका था कि यह मेरा वही बड़ा पुत्र ऐडगर है, जिसे मैंने भ्रमवश विद्रोही समझ रखा है और जो ऐडमंड की धूर्तता का शिकार होकर पागलों जैसा जीवन व्यतीत कर रहा है। चूँकि टाइगर ने उससे यह बातें नहीं बताई थीं, इसलिए वह इनसे अनजान ही रहा।

डोवर से लौटकर जब मार्टिन ग्लौसेस्टर आया, तो ऐडमंड को 'अर्ल' की पोशाक में देखकर उसका माथा ठनका। किन्तु वह कुछ बोले, इसके पहले ही ग्लोरियस ने, जोकि ऐडमंड द्वारा भड़काए जाने के कारण बहुत ही क्रोधित था, पूछा—"तुम अभी तक कहाँ थे, मार्टिन ?"

इस प्रश्न से मार्टिन चौंका; फिर भी उसने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया—"मैं सम्राट् के पास था श्रीमन्त !"

"क्यों ?"

"उनकी दशा बहुत चिन्ताजनक हो गई है। वे पागल हो गए हैं। उन्हें अपने तन-मन की भी सुधि नहीं रहती। जान पड़ता है, दिया बुझने वाला है।"

"लेकिन तुमने हमारे साथ छल क्यों किया ?"

"कैसा छल, श्रीमन् !" मार्टिन चकित हुआ।

"तुमने फ्रांस को पत्र भिजवाया है और मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे हो। मैं तुम्हारा अतिथि था, फिर भी तुम मेरा स्वागत न करके उस पागल के पीछे दौड़ते रहे। तुम्हारा वह बदमाश पुत्र ऐडगर कहाँ है, जो मेरी हत्या करना चाहता है? मैं पूछता

हूँ—क्या तुम मेरा एक बाल भी बाँका कर सकते हो ?"

"लेकिन मैंने तो कुछ भी नहीं किया, ड्यूक ! मैं तो आपका सेवक हूँ ।"

"अच्छा, तो ठहरो। तुम्हें अभी इस सेवा का पुरस्कार दिया जाएगा।" कहकर ग्लोरियस ने ऐडमंड की ओर देखा। इशारा समझकर ऐडमंड वहाँ से चला गया। तब रीगन ने मार्टिन से पूछा—"तेरा वह पागल स्वामी कहाँ है ?"

"आप उन्हें ऐसा क्यों कहती हैं, राजकुमारी? वे तो आपके पिता हैं !" मार्टिन ने प्रार्थना-भरे स्वर में रीगन को उत्तर दिया।

"मैं पूछता हूँ, उसे कहाँ भेजा ?" ड्यूक ने कड़ककर पूछा।

"वे डोवर के किले में चले गए हैं।"

"क्यों ?"

"यहाँ उन्हें बहुत कष्ट हो रहा था, श्रीमन्, इसलिए।"

"अब वहाँ इससे भी अधिक कष्ट होगा उन्हें, तुम जैसे बदमाशों ने उनको और भी बिगाड़ रखा है। लेकिन देखना, मैं डोवर में भी उन्हें कैसा छकाती हूँ।" गोनरिल ने आँखों में दुष्टता का भाव लाकर कहा और रीगन की ओर देखने लगी।

रीगन ने भी उसका साथ दिया—"यह तो होगा ही बहिन !"

मार्टिन का मन उन दुष्टाओं के प्रति घृणा से भर गया। उसने क्रोध में आकर कहा—"मैं जानता था कि तुम उस बूढ़े सम्राट् को, जो अपना सब कुछ तुम्हें देकर स्वयं राह का भिखारी हो गया है, सताने में कसर न रखोगी। और वह अत्याचार मैं अपनी आँखों से नहीं देख सकता था, राजकुमारी! इसीलिए मैंने उन्हें डोवर भेज दिया; क्योंकि मैंने उनका नमक खाया है। अपने रहते मैं उन पर कोई विपत्ति नहीं देख सकूँगा, ड्यूक !"

ड्यूक तो मन-ही-मन उसका घोर शत्रु हो गया था। वह जल्दी-से-जल्दी अपना बदला चुकाने के लिए उतावला हो रहा था। उसने तड़पकर कहा—"अरे शैतान! वह सब देखने के लिए तेरी आँखें हीं न रह जाएँगी। मैं अभी तुझे अंधा कराए देता हूँ, ताकि अपनी नमकहरामी का फल तुझे मिल जाए।" ड्यूक ने एक सेवक को हुक्म दिया—"बाँध लो इस बदमाश को।"

इशारा पाकर रीगन का एक नौकर आगे बढ़ा। उसने मार्टिन के हाथ-पैर समेट लिए और पास के खंभों से जकड़ दिया। तब रीगन आगे बढ़ी और मार्टिन की दाढ़ी नोंचती हुई बोली—"क्यों रे शैतान! बुला अब अपने उस पागल सम्राट् को! बुला उस फ्रांस के शोहदे राजकुमार को! पुकार अपनी उस अभागी कौर्डेलिया को, जिसके लिए तेरे मन में इतना दर्द रहा है। कहाँ गया तेरा वह दुष्ट ऐडगर? बोल!"

दाढ़ी के बाल उखाड़े जाने के कारण मार्टिन पीड़ा से व्याकुल हो उठा। उसने चिल्लाकर कहा—"अरी चुड़ैल! यह क्या कर रही हो? ईश्वर तुम्हें इसका फल देगा। हाय! अरे ड्यूक! तुम मेरे अतिथि हो, फिर भी मैं तुम्हारे हाथों यह कैसा व्यवहार देख रहा हूँ! ओ भगवान!"

ड्यूक ने अपनी तलवार निकाल ली और उसकी ओर बढ़कर बोला—"हाँ, लो! मैं ऐसा उपाय किए देता हूँ कि तू अब कोई भी व्यवहार न देख सकेगा—न अपने साथ, न लियर के साथ। मैं अभी तेरे सामने अँधेरा किए देता हूँ।" इसके साथ ही उसने मार्टिन की एक आँख में तलवार भोंक दी। असह्य पीड़ा से चिल्लाकर मार्टिन एकबारगी शान्त हो गया। उस की आँख फूट गई और उससे रक्त की धारा बह निकली।

उसका चिल्लाना सुनकर महल के भीतर जो उसके निजी नौकर थे, दौड़ पड़े। बाहर बरामदे में आकर जो उन्होंने यह दृश्य देखा, तो सन्न रह गए। पर बेंको न... का एक युवक नौ

इसे सहन न कर सका। ड्यूक अब तक दुबारा हाथ उठा चुका था और निकट था कि वह मार्टिन की दूसरी आँख पर भी चोट करता, तभी बैंको ने बिजली की भांति उस पर टूटते हुए कहा—"ओ लुच्चे ड्यूक! मेरे बूढ़े स्वामी को हाथ न लगाना, नहीं तो तुझे कच्चा ही खा जाऊँगा।"

लेकिन वह अकेला ही था। दूसरे सेवक भयवश उसका साथ न दे सके। यद्यपि उसकी तलवार की चोट से ड्यूक का कंधा थोड़ा कट गया, पर रीगन, गोनरिल और दूसरे सेवकों ने बीच में पड़कर उसे पकड़ लिया और ड्यूक बच गया। बेचारा बैंको अभी सम्भल न पाया था कि ड्यूक ने उस पर तलवार चला दी। वार भरपूर पड़ा और बैंको कटे हुए वृक्ष की भांति भरभराकर गिर पड़ा। मार्टिन यह देखकर चिल्ला उठा—"आह मेरे बैंको!" किन्तु बैंको फिर उठ न सका। उसने क्षीण स्वर से केवल इतना ही कहा—"ओ मेरे स्वामी! मुझे क्षमा करना। मैं तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर पाया! उफ़्!" और उसने दम तोड़ दिया।

ग्लोरियस क्रोध से अंधा हो रहा था। उसने मार्टिन पर दूसरा वार करते हुए कहा—"ले, अपने उस कुत्ते नौकर के साथ तू भी जा!"

वार मार्टिन की दूसरी आँख पर पड़ा और वह भी नष्ट हो गई। उसके सामने खून की लाली छा गई और जान पड़ा—सारा संसार रक्त में डूब गया है। घावों की पीड़ा और मानसिक संताप से वह बहुत ही विह्वल हो उठा। दोनों हाथों से अपना माथा पीटते हुए उसने कहा—"हाय रे भाग्य! यह तूने क्या किया? ओ जुपिटर देवता! तुम देख रहे हो न यह सब! अरे बेटा ऐडमंड! तुम कहाँ हो? अपने पिता पर किए गए इस अत्याचार का बदला लिए बिना तुम शान्त न होना पुत्र!" ड्यूक ने ठठाकर कहा—"अरे शैतान! ऐडमंड तो तुझसे और

भी घृणा करता है। तभी तो, वह यहाँ से चला गया है। उसी ने तो तेरा सारा भेद हमें बताया था। तू उसकी राह का काँटा था। ऐडगर पहले ही भगा दिया गया था, आज तू भी मर रहा है। अब ऐडमंड ग्लौसेस्टर का अर्ल होकर मेरे साथ आनन्द करेगा।" अब मार्टिन ने षड्यंत्र का भेद समझ लिया। मारे शोक के वह चिल्ला उठा—"हाय बेटा ऐडगर! तुम्हारे साथ मैंने भीषण अन्याय किया। मैं बड़ा पापी हूँ।" और वह गिरकर अचेत हो गया। फिर उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। जान पड़ा, जैसे मर गया हो।

रीगन ने कहा—"ड्यूक! चलो, हम लोग अब उत्सव की तैयारी करें।"

ग्लोरियस ने अपने सेवकों से कहा—"इस अंधे की लाश उठाकर बाहर मैदान में फैंक आओ। मर गया तो सियार कौवे खाएँगे और अगर जिन्दा रहा तो चारों तरफ अँधेरे में भटकता रहेगा। तब यह समझेगा कि ग्लोरियस के साथ विश्वासघात करने का क्या फल मिलता है!"

नौकरों ने अचेत मार्टिन को उठाया और बाहर निकाल गए। उनके जाने के बाद ड्यूक, रीगन और गोनरिल उस भवन की ओर चले, जहाँ ऐडमंड उनकी दावत का प्रबन्ध किए, बैठा प्रतीक्षा कर रहा था।

नहीं था। वह व्याकुल होकर पुकारने लगा—"ओ देवताओ! क्या पृथ्वी पर ऐसा ही होता रहेगा?" तभी संयोगवश उसका पुत्र ऐडगर जो पागल टॉम के वेश में डोवर में रह रहा था, उधर आ निकला। शत्रुओं का भेद लेने के लिए वह सचमुच के पागलों की भाँति इधर-उधर घूमा करता था। पास आकर पिता को वैसी करुणावस्था में देखा, तो काँप उठा। ऐडमंड के अत्याचारों पर उसकी भुजाएँ फड़क उठीं। पिता का बदला लेने के लिए वह आतुर हो गया, पर कुछ सोचकर अपने को सँभाला और मार्टिन को उठाते हुए बोला—"ओ पिता! उठो मैं तुम्हें कहीं छाया में ले चलूँगा।"

मार्टिन ने टटोलकर उसका हाथ पकड़ते हुए पूछा—"हैं! तुम कौन हो? क्या तुम सचमुच कोई मनुष्य हो, या जुपिटर देवता हो? उफ़!" ऐडगर ने अपना परिचय नहीं दिया। कहा—"मैं एक असहाय किसान टॉम हूँ। लेकिन, तुम्हारी दशा देखकर मुझे दुःख हो रहा है। चलो, मैं तुम्हें अपने साथ रखकर सेवा करूँगा।"

जब माँगने पर भी मृत्यु नहीं मिलती, तो मनुष्य जीवित रहने को लाचार हो जाता है। मार्टिन, टॉम का सहारा लेकर चल पड़ा। टॉम ने उसे डोवर में सम्राट् के पास पहुँचाने का विचार किया और उसी ओर चल पड़ा। अभी वे दोनों थोड़ी ही दूर तक गए होंगे कि सामने से ओसवाल्ड आ निकला। मार्टिन को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और अपने आप चिल्ला पड़ा—"अहा! मैं कैसा भाग्यशाली हूँ कि जिस अंधे मार्टिन को पकड़ लाने के लिए ड्यूक ने इतना बड़ा इनाम रखा है, वह मुझे अचानक ही मिल गया। अगर कहीं इसी तरह ऐडगर भी मिल जाता, तो अर्ल ऐडमंड मुझे दूना इनाम देते!"

उसकी बातें सुनकर मार्टिन और टॉम काँप उठे, लेकिन टॉम साहसी था। ऐडमंड के षड्यंत्र को भली-भाँति समझ चुका

था। ओसवाल्ड से रक्षा करने के लिए उसने तलवार खींच ली और कहा—"ओ कुत्ते! मरना ही है, तो किसी दूसरे के हाथों मर! गरीब टॉम के हाथों मरकर तुझे क्या मिलेगा?"

"ओ पागल! इस अंधे को मेरे हवाले करके तू भाग यहाँ से, नहीं तो..." कहकर ओसवाल्ड ने उस पर तलवार का वार किया।

लेकिन पागल टॉम सतर्क था। उसने कहा, "अपनी माँ का दूध पिया हो, तो इस अंधे को मुझसे छीन ले।" कहकर ओसवाल्ड पर लगातार कई घातक वार कर दिए। ओसवाल्ड सँभल न सका। वह भरभराकर गिर पड़ा और उसने वहीं दम तोड़ दिया। टॉम ने उसकी लाश घसीटकर एक झाड़ी में डाल दी और मार्टिन को सहारा देकर एक ओर चलता हुआ बोला—"वृद्ध पिता! पागल टॉम ने एक सरकारी कुत्ते को मार डाला है, चलो, अब जल्दी से डोवर पहुँच चलें।"

"आह! तुम पागल होकर भी कितने दयालु हो, टॉम! और एक मेरा बेटा ऐडमंड? उफ़! कितना शैतान, कितना धूर्त! उसने मुझे अपने एक निर्दोष पुत्र का शत्रु बना दिया। हाय, ओ ऐडगर! तुम कहाँ हो? देखो, यह तुम्हारा अंधा पिता तुम से क्षमा माँग रहा है। ओ बेटा!" इस प्रकार विलाप करता हुआ मार्टिन टॉम का हाथ थामे चल पड़ा। टॉम का हृदय पिता की दशा और उसके प्रेम पर पिघल उठा, पर कुछ सोचकर वह यह नहीं प्रकट कर सका कि मैं ही वह अभागा ऐडगर हूँ! वह चुपचाप डोवर की ओर चलता रहा। हाँ, उसकी आँखों में आँसू आ गए थे; किन्तु मार्टिन नहीं देख पा रहा था, क्योंकि वह तो अंधा हो चुका था।

कई दिन तक इधर-उधर छिपने-भटकने के बाद जब टॉम मार्टिन को लिए डोवर पहुँचा, तो वहाँ की स्थिति ही बदल गई थी। जब वह डोवर से निकला था, तब वहाँ किसी प्रकार की

नहीं था। वह व्याकुल होकर पुकारने लगा—"ओ देवताओ! क्या पृथ्वी पर ऐसा ही होता रहेगा?" तभी संयोगवश उसका पुत्र ऐडगर जो पागल टॉम के वेश में डोवर में रह रहा था, उधर आ निकला। शत्रुओं का भेद लेने के लिए वह सचमुच के पागलों की भाँति इधर-उधर घूमा करता था। पास आकर पिता को वैसी करुणावस्था में देखा, तो काँप उठा। ऐडमंड के अत्याचारों पर उसकी भुजाएँ फड़क उठीं। पिता का बदला लेने के लिए वह आतुर हो गया, पर कुछ सोचकर अपने को सँभाला और मार्टिन को उठाते हुए बोला—"ओ पिता! उठो मैं तुम्हें कहीं छाया में ले चलूँगा।"

मार्टिन ने टटोलकर उसका हाथ पकड़ते हुए पूछा—"हैं! तुम कौन हो? क्या तुम सचमुच कोई मनुष्य हो, या जुपिटर देवता हो? उफ़!" ऐडगर ने अपना परिचय नहीं दिया। कहा—"मैं एक असहाय किसान टॉम हूँ। लेकिन, तुम्हारी दशा देखकर मुझे दुःख हो रहा है। चलो, मैं तुम्हें अपने साथ रखकर सेवा करूँगा।"

जब माँगने पर भी मृत्यु नहीं मिलती, तो मनुष्य जीवित रहने को लाचार हो जाता है। मार्टिन, टॉम का सहारा लेकर चल पड़ा। टॉम ने उसे डोवर में सम्राट् के पास पहुँचाने का विचार किया और उसी ओर चल पड़ा। अभी वे दोनों थोड़ी ही दूर तक गए होंगे कि सामने से ओसवाल्ड आ निकला। मार्टिन को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और अपने आप चिल्ला पड़ा—"अहा! मैं कैसा भाग्यशाली हूँ कि जिस अंधे मार्टिन को पकड़ लाने के लिए ड्यूक ने इतना बड़ा इनाम रखा है, वह मुझे अचानक ही मिल गया। अगर कहीं इसी तरह ऐडगर भी मिल जाता, तो अर्ल ऐडमंड मुझे दूना इनाम देते!"

उसकी बातें सुनकर मार्टिन और टॉम काँप उठे, लेकिन टॉम साहसी था। ऐडमंड के षड्यंत्र को भली-भाँति समझ चुका

था। ओसवाल्ड से रक्षा करने के लिए उसने तलवार खींच ली और कहा—"ओ कुत्ते ! मरना ही है, तो किसी दूसरे के हाथों मर ! गरीब टॉम के हाथों मरकर तुझे क्या मिलेगा ?"

"ओ पागल ! इस अंधे को मेरे हवाले करके तू भाग यहाँ से, नहीं तो···" कहकर ओसवाल्ड ने उस पर तलवार का वार किया।

लेकिन पागल टॉम सतर्क था। उसने कहा, "अपनी माँ का दूध पिया हो, तो इस अंधे को मुझसे छीन ले।" कहकर ओसवाल्ड पर लगातार कई घातक वार कर दिए। ओसवाल्ड सँभल न सका। वह भरभराकर गिर पड़ा और उसने वहीं दम तोड़ दिया। टॉम ने उसकी लाश घसीटकर एक झाड़ी में डाल दी और मार्टिन को सहारा देकर एक ओर चलता हुआ बोला—"वृद्ध पिता ! पागल टॉम ने एक सरकारी कुत्ते को मार डाला है, चलो, अब जल्दी से डोवर पहुँच चलें।"

"आह ! तुम पागल होकर भी कितने दयालु हो, टॉम ! और एक मेरा बेटा ऐडमंड ? उफ् ! कितना शैतान, कितना धूर्त ! उसने मुझे अपने एक निर्दोष पुत्र का शत्रु बना दिया। हाय, ओ ऐडगर ! तुम कहाँ हो ? देखो, यह तुम्हारा अंधा पिता तुम से क्षमा माँग रहा है। ओ बेटा !" इस प्रकार विलाप करता हुआ मार्टिन टॉम का हाथ थामे चल पड़ा। टॉम का हृदय पिता की दशा और उसके प्रेम पर पिघल उठा, पर कुछ सोचकर वह यह नहीं प्रकट कर सका कि मैं ही वह अभागा ऐडगर हूँ। वह चुपचाप डोवर की ओर चलता रहा। हाँ, उसकी आँखों में आँसू आ गए थे; किन्तु मार्टिन नहीं देख पा रहा था, क्योंकि वह तो अंधा हो चुका था।

कई दिन तक इधर-उधर छिपने-भटकने के बाद जब टॉम मार्टिन को लिए डोवर पहुँचा, तो वहाँ की स्थिति ही बदल गई थी। जब वह डोवर से निकला था, तब वहाँ किसी प्रकार की

हलचल न थी, चारों ओर शान्ति थी और सम्राट् लियर अपने थोड़े-से सेवकों और टाइगर, जॉन, तथा हण्टर के साथ किले में विश्राम कर रहा था। पर अब वापस आने पर, वहाँ का दृश्य देखकर टॉम भय और आश्चर्य से काँप उठा—चारों ओर सैनिकों के तम्बू लगे हुए थे और युद्ध की तैयारी होती दीख पड़ रही थी। जिधर भी देखो, एक घबराहट, भागदौड़ और हलचल मची हुई थी। जगह-जगह पर सिपाही खड़े थे, जो हर आने-जाने वाले पर निगाह रख रहे थे।

हुआ यह था कि थॉमस का पत्र पाकर फ्रांस का राजकुमार आर्थर अपनी सेना-सहित, लियर की रक्षा के लिए डोवर आ पहुँचा था। उसके साथ कौर्डेलिया भी पिता की सेवा करने आई हुई थी। उधर इस घेरे का समाचार जब रीगन तथा गोनरिल को मिला तो वे भी आत्म-रक्षा के लिए मैदान में आ डटीं। रीगन का पति कौर्नवाल में बीमार होकर पड़ा था, इसलिए वह नहीं आ सका था, पर गोनरिल अपने पति जैक्सन के साथ आई हुई थी। इस प्रकार डोवर का किला एक ओर फ्रांस की सेना से घिरा हुआ था, दूसरी ओर कौर्नवाल और अल्बैनी की ब्रिटिश फौजें अपना घेरा डाले हुए थीं। उनके साथ ग्लौसेस्टर का अर्ल ऐडमंड भी था, जिसे ग्लोरियस ने अपनी जगह पर भेजा था। दोनों ओर तुरही-नक्कारे बज रहे थे और सेनाएँ परस्पर लड़ मरने को उतावली हो रही थीं। एक ओर फ्रांसीसी सेना लियर की रक्षा करना चाहती थी, दूसरी ओर ब्रिटिश फौजें उसे जीवित या मृत पकड़ने को कटिबद्ध थीं, और डोवर की धरती उन दोनों सेनाओं के रक्त से अपनी प्यास बुझाने को आतुर होकर हल्के तूफान के रूप में लम्बी साँसें ले रही थी।

सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं और युद्ध के लिए दिन निश्चित किया जा चुका था, तभी एक दुर्घटना हो गई। फ्रांस से समा-

चार आया कि वहाँ के खज़ाने की चाबी खो गई है, इसलिए तुरन्त दूसरा प्रबन्ध किया जाए नहीं तो लुट जाने का डर है। राजा के पास उसका खज़ाना ही सबसे बड़ी शक्ति होती है, यह विचारकर आर्थर ने अपनी सारी सेना कौर्डेलिया को सौंपी और यह कहकर कि 'तुम यहाँ पिताजी की रक्षा करना, मैं जल्दी ही लौट आऊँगा', फ्रांस को रवाना हो गया। यद्यपि फ्रांसीसी सेना दृढ़ थी और कौर्डेलिया भी एक वीर सेना-नायक की भाँति युद्ध-कला में प्रवीण थी, फिर भी आर्थर के चले जाने से उसका साहस कुछ कम हो गया। इधर, ब्रिटिश सेना में भी एक उपद्रव खड़ा हो गया—ऐडमंड का जादू कुछ ऐसा चल गया था कि रीगन और गोनरिल दोनों ही उसे अपना पति बनाना चाहती थीं और इस बात को लेकर दोनों बहनों में मन-मुटाव उत्पन्न हो गया था। वे दोनों अपने पतियों को त्याग देना चाहती थीं, क्योंकि ऐडमंड उन्हें बहुत ही प्रिय लगता था। रीगन का पति जो ग्लौसेस्टर में बीमार पड़ गया था, उसके पीछे यही भेद था—रीगन ने उसे पिसा हुआ काँच पिला दिया था, ताकि वह धीरे-धीरे उसके प्राण खींच ले। गोनरिल भी जैक्सन से छुटकारा पाने का कोई उपाय सोच रही थी और इसी सम्बन्ध में एक दिन ऐडमंड से एकान्त में बातें कर रही थी कि जैक्सन ने छिपकर सब कुछ सुन लिया। उसे पहले से ही गोन-रिल का आचरण अच्छा नहीं लगता था; अब अपने पीछे ऐसा षड्यन्त्र देखकर उसे और भी घृणा हो गई, पर उसने अपना यह भाव प्रकट नहीं होने दिया। पहले ही की तरह ऐडमंड तथा दोनों राजकुमारियों से घुला-मिला रहा। हाँ, भीतर ही भीतर उनसे सतर्क अवश्य रहता था। इस प्रकार, आपसी कलह के कारण ब्रिटिश सेना में भी शक्ति और प्रबन्ध में कमी आ गई थी।

अगले दिन सवेरे युद्ध का डंका बज उठा और देख

देखते दोनों सेनाएँ आपस में गुथ गईं। फ्रांस की सेना कम थी, और ब्रिटिश सैनिकों का जैसे समुद्र लहरा रहा था। उसका सेनानायक ऐडमंड था। वह घोड़े पर सवार चारों ओर घूम-घूमकर अपने सैनिकों को ललकार रहा था। अंधाधुन्ध लाशें गिर रही थीं और युद्ध-भूमि में रक्त की नदी बढ़ती जा रही थी। जान पड़ता था—आज सब कुछ इसी में डूब जाएगा।

एक ओर भयंकर युद्ध हो रहा था, दूसरी ओर किले के भीतर एक बड़े कमरे में लेटा हुआ लियर बुड़बुड़ा रहा था। उसकी स्मरण-शक्ति नष्ट हो गई थी। वह पूरी तरह से पागल हो गया था। उसके पास ही टॉम, मार्टिन, हण्टर, टाइगर और दो-तीन नौकर बैठे हुए थे। सब के चेहरे उदास थे, क्योंकि लियर का जीवन-दीप अब बुझने ही वाला था। वे सब सोच रहे थे—इस प्रतापी और बुद्धिमान सम्राट् को, जिसने जीवनभर पुण्य-परोपकार किया, वृद्धावस्था में अपना सर्वस्व दान कर दिया, अंतिम दिनों में यह कैसा दुःख उठाना पड़ रहा है कि उसकी बेटियाँ ही उसे बन्दी बनाने के लिए सेनाएँ लेकर आई हैं!

जॉन ने मार्टिन से कहा—"स्वामी! आज्ञा हो, तो हम लोग भी युद्ध में जाएँ!"

अन्धे मार्टिन ने शून्य में कुछ टटोलते हुए कहा—"नहीं जॉन! हमें सम्राट् के शरीर के पास ही रहना चाहिए। इनका अन्त अब निकट है। इन्हें कफ़न भी तो चाहिए, वह कहाँ मिलेगा? कौन देगा? यहाँ रहकर हम सब अपने शरीरों से इन्हें ढँककर कफ़न की कमी पूरी कर देंगे!"

उसकी स्वामीभक्ति और सम्राट् की करुण दशा को देखकर सभी के मुँह से एक साथ निकल पड़ा—'उफ़!'

× × ×

चौथे दिन—

युद्ध समाप्त हो गया था, ब्रिटिश सेना जीत गई थी और ऐडमंड के सैनिक आनन्द मना रहे थे, क्योंकि लियर और कौर्डेलिया को बन्दी बनाया जा चुका था। लियर के साथ केवल मार्टिन कैद किया गया था, बस। जॉन, अपने स्वामी की रक्षा करता हुआ मारा गया था और टाइगर, टॉम तथा हण्टर को छोड़ दिया गया था।

एक खुले तम्बू के नीचे ड्यूक जैक्सन गोनरिल से बातें कर रहा था। ऐडमंड भी पास ही बैठा हुआ था। वह रह-रहकर गोनरिल की ओर देखकर मुस्करा देता था। अल्बैनी से चलते समय ही जैक्सन इस युद्ध के विरुद्ध था, तो भी वह चला आया था कि शायद किसी तरह सम्राट् की सहायता ही कर सके; क्योंकि रीगन तथा अपनी स्त्री द्वारा, उसके साथ किए गए अत्याचार से उसे बहुत ही मानसिक संताप हुआ था। उस समय गोनरिल की किसी बात पर उसने कहा—"रीगन को भी बुला लिया जाए, तो ठीक रहेगा।"

"लेकिन रीगन अब कहाँ रही? वह तो सवेरे ही मर गई!" हँसकर गोनरिल ने कहा।

जैसे आग पर पैर पड़ गया हो, इस तरह चौंककर जैक्सन ने पूछा—"मर गई? कब? कैसे? क्या हुआ था उसे?"

"उसे मैंने ज़हर पिला दिया था।" गोनरिल फिर हँसी।

"क्यों?"

"वह मेरी राह का काँटा थी। मेरे और अर्ल ऐडमंड के बीच वह खटक रही थी। मैंने उससे भरपूर बदला लिया।"

ठीक इसी समय टॉम, हण्टर और टाइगर ने वहाँ प्रवेश किया। उन्हें जैक्सन की सज्जनता का पता लग चुका था, इसलिए वे उसके पास आए हुए थे। पर, क्रोध और दुःख से भरे हुए जैक्सन ने उनकी ओर विशेष ध्यान न देकर गोनरिल से कहा—"तुम स्त्री हो या राक्षसी? पिता

हत्या की, बहन की हत्या की और अब शायद मेरी भी हत्या करोगी !"

ऐडमंड बीच में बोल पड़ा—"सावधान, ड्यूक ! आप श्रीमती गोनरिल को मेरे सामने राक्षसी नहीं कह सकते !"

जैक्सन के मन में जो ज्वालामुखी धधक रहा था, वह भड़क उठा। उसने गरजकर कहा—"अरे कुत्ते ! तेरा असली रूप प्रकट हो गया है। तू शेर की खाल ओढ़े हुए एक गीदड़ है गीदड़ ! तेरा षड्यन्त्र मैं जान गया हूँ और देख, तेरी क्या दशा करता हूँ ! कोई है यहाँ ? ओ टाइगर ! ओ हण्टर ! जाओ, अभी सब जगह घोषणा कर दो कि अगर मार्टिन का पुत्र ऐडगर कहीं हो तो वह आकर एडमंड को उसके अपराध का दंड दे।"

अहंकार में चूर ऐडमंड ने तलवार खींच ली और खड़ा होकर बोला—"ड्यूक ! जान बचाना चाहते हो तो चुप रहो। कौन माई का लाल है, कौन अपने बाप का ऐसा बेटा है, जो ऐडमंड के मुकाबले में खड़ा होगा ? उस खटमल ऐडगर को बुलाओ, जहाँ हो !"

जैसे बिजली टूटती है, ठीक उसी प्रकार टॉम उठा और झपटकर उसने ऐडमंड को दबोच लिया। उसने उसे अपनी ऊँचाई तक उठाकर धरती पर पटक दिया और 'यह देख, अपने बाप का बेटा ऐडगर तेरे सामने मौजूद है' कहता हुआ छाती पर चढ़कर उसका गला दबाने लगा। ऐडमंड की साँस घुटने लगी, आँखें निकल पड़ीं और वह व्याकुल होकर हाथ जोड़ता हुआ प्राणों की भीख माँगने लगा। ऐडगर वीर था और उदार भी। उसने पाँच ठोकरें लगाकर उसे छोड़ दिया और कहा—"दुष्ट ! तूने पिता की आँखें निकलवाई हैं, ग्लोरियस को जहर दिलवाया है, रीगन की हत्या कराई है और ड्यूक जैक्सन के साथ विश्वासघात किया है ! बोल, इन सबके लिए तुझे कौन-सा दंड दिया जाए ?"

ऐडमंड का नशा उतर गया। वह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा—"ओ भैया! ओ ड्यूक! ओ पिता! मुझे क्षमा करो। ओ सम्राट्! ओ रीगन! ओ कौर्डेलिया! मैं तुम सबसे क्षमा माँगता हूँ। उफ़्! मैंने तुम सबकी हत्या कर दी और अब बैठा रो रहा हूँ। ओ ऐडगर!"

गोनरिल यह दृश्य देख न सकी। आत्मग्लानि के कारण उसने अपनी कटार छाती में मारकर आत्महत्या कर ली। सब एक साथ चौंक पड़े—"अरे! यह क्या?" और उसकी ओर दौड़े। पर जैक्सन ने कहा—"जाने दो उसे। यह पापिन इसी के योग्य थी।"

ऐडमंड चिल्ला उठा—"अभागे ऐडमंड! ले, एक हत्या का पाप अपने सिर पर और रख।"

तभी, किसी दुःस्वप्न की भाँति उन्मत्तों की-सी डगमगाती हुई चाल से, बडी-बड़ी आँखें काढ़े, अस्त-व्यस्त कपड़ों में, विद्रोह और निराशा की मूर्ति बना हुआ परम प्रतापी और परम अभागा वही सम्राट् लियर—जिसके नाम का झंडा सारे यूरोप मैं लहरा रहा था—वहाँ आ पहुँचा। उसकी गोद में कौर्डेलिया की लाश थी और वह बड़बड़ा रहा था—"बेटी कौर्डेलिया! मैंने तुझे ठुकराया था, और तूने मेरे लिए प्राण दे दिए। सचमुच मैं बड़ा पापी हूँ। लेकिन बेटी! उस जल्लाद को, जिसने तुझ पर वार किया था, मैंने मार डाला है। पापी ऐडमंड का कोई भी सिपाही मुझे पकड़ नहीं सका। मैं फाँसीघर की दीवारें तोड़-कर चला आया हूँ। थोड़ी देर ठहर, मैं पानी पी लूँ, तब तेरे साथ चलूँ। यहाँ हम जैसों के लिए जगह नहीं है। जब तक इस अपराधी संसार में गोनरिल और रीगन जैसी चुड़ैलें हैं और ऐडमंड, ग्लोरियस जैसे शैतान हैं, यहाँ लियर जैसे मनुष्य कभी सुखी न रह सकेंगे। आ, मेरी गोद में बैठ! अब मैं चल रहा हूँ! ओ मेरे देवता अपोलो! ओ जुपिटर देव! लियर को क्षमा

करना। ओ मेरे प्यारे मार्टिन! और थॉमस! मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अपराध किया था। अरे कोई है यहाँ? ओ जूनोदेवी! इन बेचारों को रोटी दे दो। उस हण्टर को भी कोई थोड़ा-सा माँस दे दे! अरे, मेरी प्रजा भूखों मर रही है। कहाँ गया वह ऐडगर! आह! कोई नहीं है यहाँ? तब चलो बेटी!" उसने बड़े जोर से कौर्डेलिया का शव छाती से लगाया और गिर पड़ा।

जैक्सन और थॉमस आदि दौड़ पड़े। उन्होंने उसे उठाने का प्रयास किया—"सम्राट्! आँखें खोलिए! हम सब आपकी सेवा के लिए खड़े हैं।"

लेकिन सम्राट् ने आँखें नहीं खोलीं। खोलता भी तो कैसे? उन पर तो यमराज ने अपनी मुहर लगा दी थी! उस निर्जीव शरीर से लिपटकर सब के सब चिल्ला उठे—"हाय! एक प्रतापी सम्राट् का ऐसा करुण अन्त!"

कैण्ट का स्वामीभक्त अर्ल थॉमस जो आज तक टाइगर के रूप में लियर की सेवा कर रहा था, यह आघात सहन नहीं कर सका। उसने कहा—"स्वामी! यहाँ मैंने जीवनभर तुम्हारी सेवा की थी, अब वहाँ भी मुझे अपने साथ लेते चलो।" और अपनी तलवार छाती में अड़ाकर लियर के पैरों पर गिर पड़ा। टूटते स्वर में उसने फिर कहा—"अर्ल मार्टिन! तुम तो पहले ही स्वर्ग पहुँच चुके हो, लो मैं भी आ रहा हूँ। बेटा ऐडगर! मेरी प्रार्थना है, तुम ड्यूक जैक्सन को सम्राट् बनाकर उनकी सेवा करना। और ओ प्यारे विदूषक हण्टर! तुमने जैसी सेवा सम्राट् लियर की की थी, उसी तरह ड्यूक की भी करना। ओह! मुझे देर हो रही है। ओ जूनो देवी!" और सदा के लिए शान्त हो गया।

यह देखकर ऐडमंड उठा और ऐडगर तथा जैक्सन के पैरों से लिपटता हुआ बोला—"ओ मेरे भाई! ओ मेरे स्वामी

मुझे क्षमा करो ! इतनी हत्याओं का पाप सिर पर लादकर, रक्त की इतनी भयंकर नदी में डूबकर मेरे प्राण बचेंगे नहीं। मैं कौन-सा मुँह दिखाने के लिए जीवित रहूँ। मुझे आज्ञा दो, मैं भी मरना चाहता हूँ !" और उसने भी अपनी तलवार गले के आर-पार कर ली।

इस प्रकार इस कहानी के सभी पात्र सदा के लिए संसार से विदा हो गए। रह गए केवल तीन व्यक्ति—जैक्सन, ऐडगर और हण्टर। ऐडगर का हृदय उस हत्याकाण्ड से विचलित हो उठा था। उसने ड्यूक के पैरों से लिपटकर कहा—"मैं किधर जाऊँ, स्वामी ! मेरे चारों ओर अँधेरा है। मुझे राह नहीं सूझ पड़ती। कैसे करूँ ?"

ड्यूक जैक्सन धीर-गंभीर मनुष्य था। उसने ऐडगर की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"घबराओ मत ऐडगर! जीवन में जो भी सामने आए, उसे सँभालना-सहना पड़ता है। आओ चलें, हमें इन महापुरुषों के शरीरों का प्रबन्ध करना चाहिए ; फिर हम वही सब करेंगे, जो कुछ ये हमारे लिए कह गए हैं। डरो मत, घबराओ मत। जितनी विपत्तियाँ इन लोगों को सहन करनी पड़ी हैं, उतनी सहने के लिए, इनके बराबर आयु हमें मिलेगी ही नहीं। फिर भी, जब तक हम जीवित हैं, हमें अपना कर्त्तव्य करते रहना चाहिए। ठीक है न, हण्टर !"

और "हाँ स्वामी !" कहकर विदूषक हण्टर ने सिर झुका लिया।